स्मारिका

बाल रवि

भारतीय शिक्षा समिति (पंजी.) जम्मू-कश्मीर

नारायण भवन, वेद मन्दिर परिसर, अम्बफला, जम्मू
मो.: 94191-12718 दूरभाष : 0191-2547953
e-mail :bssjmu2006@yahoo.com
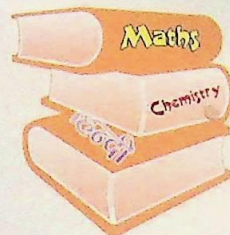
बाल रवि स्मारिका : २००६ - २००७

संरक्षक

कृष्ण दत्त शर्मा

*

सम्पादक

डॉ॰ महाराजकृष्ण भरत

भारतीय शिक्षा समिति, (पंजी॰) जम्मू कश्मीर
प्रदेश कार्यालय : नारायण भवन, वेद मन्दिर परिसर, अम्बफला जम्मू।
मो॰ : 94191-12718 दूरभाष : 0191-2547953
E-mail : bssjmu2006@yahoo.com

सहयोग राशि : २० रु॰

प्रेरणा गीत

जीवन में कुछ करना है तो, मन के मारे मत बैठो।
आगे–आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।
चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है।
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता पानी मीठा है।।
पांव दिए चलने के खातिर, पांव पसारे मत बैठो।
आगे– आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।
तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा, दो पल चलकर बैठ गया।
धीरे– धीरे चलकर कछुआ, देखो बाज़ी मार गया।
चलो कदम से कदम मिलाकर दूर किनारे मत बैठो।
आगे–आगे बढ़ना हैं तो, हिम्मत हारे मत बैठो।
धरती चलती, तारे चलते, चांद रात भर चलता है।
किरणों का उपहार बांटने, सूरज रोज़ निकलता है।।
हवा चले तो महक बिखेरे, तुम भी प्यारे मत बैठो।
आगे–आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।।
जीवन में कुछ करना है तो, मन के मारे मत बैठो।
आगे– आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।।

-कृष्णदत्त लखनपाल

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन श्री गो.ला.त्रे सरस्वती मन्दिर परिसर,
गांधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली – ११००६५

पत्रांक : ७७/२००७
दिनांक : १८–०५–२००७

शुभकामना

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर के द्वारा **"बालरवि"** वार्षिक पत्रिका, वर्ष 2006–07 का अंक प्रकाशित होने जा रहा है, यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हुआ। निशा के अन्धकार को चीरकर जब बालरवि का उदय होता है तो सम्पूर्ण सृष्टि को जीवन्तता, चैतन्य और प्रगति पथ पर निरन्तर अग्रसर होने का सन्देश देता है।

बालरवि की अरुणिमा त्याग, परोपकार, ऊर्जा एवं तेजस्विता का प्रतीक भी है। भारतीय शिक्षा सगिति तदनुरूप ही, सब प्रकार की विकट परिस्थितियों में न केवल निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है बल्कि जम्मू कश्मीर, लेह लद्दाख जैसे कठिन क्षेत्रों में भारतीय समाज हेतु शक्ति एवं प्रेरणा का स्रोत भी बन रही है। यह **शक्तिपुंज** निरन्तर बढ़ता रहे। सम्पूर्ण प्रदेश में हमारा **बालरवि** तमस को समाप्त कर सम्पूर्ण समाज में राष्ट्रीयता, समरसता एंव सुसंस्कारों का आलोक भर दे।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के मार्गदर्शन में **भारतीय शिक्षा समिति** पूरे प्रदेश में तेजस्वी शिक्षण संस्थाओं एवं एकल विद्यालयों की श्रृंखला को उत्तरोत्तर बढ़ाती चले जिनसे निर्माण होने वाला हमारा छात्रवर्ग देश एवं समाज के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने वाला बनें, इस शुभकामना के साथ **"बालरवि"** से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं को इस प्रकाशन की सफलता के लिए बधाई।

(नरेन्द्रजीत सिंह रावल)
राष्ट्रीय मंत्री

सेवा में

श्री अशोक कौल जी
भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू – कश्मीर
वेद मन्दिर परिसर, अम्बफला
जम्मू

अध्यक्ष की ओर से -

'बाल रवि' स्मारिका का प्रकाशन ऐसे समय पर हो रहा है जब हम स्वतंत्रता संग्राम की १५० वीं वर्षगांठ मना रहे हैं और वर्ष २००६–०७ में श्री गुरुजी की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में गठित समितियों द्वारा कई कार्यक्रमों, विचार गोष्ठियों, जन सभाओं तथा हिन्दू सम्मेलनों का आयोजन कर चुके हैं। यह प्रयास भी श्री गुरुजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति समर्पित हैं और समर्पित हैं उन रणबांकुरों की शौर्य गाथाओं पर, जिन्होंने भारत को विदेशी जंजीरों से मुक्त कराया। विदेशी दासता से मुक्ति पाने के बाद भी शिक्षा में ऐसी घुसपैठ होती रही है कि हमें मैकॉले की विदेशी पद्धति के अनुसार शिक्षा जगत में ऐसा कुछ परोसा गया है जिसे इस देश के संस्कारवान वृक्ष की हत्या हो रही है।

काफी अन्तराल के बाद जब केन्द्र में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार ने विद्यालय के पाठक्रम में भारतीय स्वाभिमान, परम्पराएं, राष्ट्रभक्ति, संस्कृति तथा मानबिंदुओं को ध्यान में रखकर भारत के सभी शिक्षा आयोगों एवं समितियों की नैतिक शिक्षा सम्बंधी अनुशंसाओं को समाहित कर एक विकसित पाठ्यक्रम राष्ट्र को समर्पित किया तो यह न केवल उस समय नास्तिक कहने पर गर्व करने वालों को खला वरन् अगली केन्द्र सरकार (वर्तमान) ने भी फिर से संशोधनों को वापस लेना प्रारम्भ किया। यह तब हो रहा है जब सर्वोच्च न्यायालय ने एक विस्तृत निर्णय में इस विकसित पाठ्यक्रम को संविधान सम्मत बताया। आज फिर से आपत्तिजनक अंशों को जोड़ा जा रहा है, पाठयक्रम से देश की अस्मिता, संस्कृति, संस्कार, लुप्त हो रहे हैं। ऐसे में हमारी भी एक महत्वपूर्ण भूमिका बनती हैं कि हम भारतीय इतिहास में हो रहे छेड़छाड़ के विरुद्ध बोले। इस परिप्रेक्ष्य में अखिल भारतीय स्तर पर गठित शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति हमें एक ऐसा मंच प्रदान कर रही है, जहां पर भी हम भारतीय सरोकारों को संरक्षित रखने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। इस समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तिकाएँ एक उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं।

शिक्षा जगत की इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भारतीय शिक्षा समिति, विद्या भारती की प्रेरणा से बाल रवियों के सर्वांगीण विकास के लिए भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान कर रही है। इन भारतीय विद्या मंदिरों में शारीरिक और मानसिक विकास के साथ – साथ प्राणिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा का भी ज्ञान कराया जाता है। इस कार्य का श्रेय उन आचार्यों को जाता है जो अपने कर्तव्य पथ पर सचेत होकर अग्रसर हैं। ऐसे ही हमारे आचार्यों/प्रधानाचार्यों तथा विद्यार्थियों की रचनाओं से प्रस्तुत बाल रवि स्मारिका संगृहीत है। इन रचनाओं को प्रकाश में लाने का श्रेय शिक्षाविद् एवं लेखक डा. महाराजकृष्ण भरत को जाता है जिनके अथक परिश्रम के बिना स्मारिका का ऐसा स्वरूप नहीं बन सकता था।

भारतीय शिक्षा समिति द्वारा संचालित एवं संरक्षित सभी विद्यालयों के आचार्यों का मैं अभिनंदन करता हूँ जो इस पुनीत कार्य में अग्रसर हैं। मैं उन बच्चों को बधाई देना चाहूँगा जिन्होंने इस स्मारिका में अपनी रचनाएँ प्रेषित कीं और उन बच्चों को भी आगे आने के लिए प्रेरित करना चाहूँगा जो इस अंक में अपना योगदान नहीं दे सके।

शिक्षा जीवन का मूल आधार है। विद्यालय की इस स्मारिका से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ेगा, ऐसी आशा हैं। मुझे विश्वास है कि स्मारिका प्रभावी एवं प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

-कृष्ण दत्त शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर

सम्पादकीय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परम पूज्य माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्री गुरुजी के मार्गदर्शन में जहां वनवासी कल्याण आश्रम , भारतीय मजदूर संघ, विश्व हिंदू परिषद्, राष्ट्र सेविका समिति जैसे विभिन्न संगठनों का गठन हुआ वहीं शिक्षा के क्षेत्र में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् तथा सरस्वती शिशु मंदिर जैसी योजनाएं भी बीजारोपित हुईं। आज शिशु मंदिर विद्या भारती के अखिल भारतीय स्वरूप के रूप में हमारे सामने हैं। उल्लेखनीय है कि देशभर में यह संस्था शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा गौरवशाली गैर–सरकारी संगठन है, जिसकी शाखाएं लेह–लद्दाख से लेकर अण्डमान निकोबार तक फैली हुई हैं। करीब 26000 शिक्षा संस्थाओं का संचालन कर रही विद्या भारती के विद्यालयों में लाखों विद्यार्थी भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। जम्मू कश्मीर में इस दायित्व को भारतीय शिक्षा समिति निभा रही है। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्था से सम्बद्ध भारतीय शिक्षा समिति 51 भारतीय विद्या मंदिरों तथा दूरदराज के उपेक्षित एवं दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में 336 संस्कार केन्द्र एकल शिक्षक विद्यालयों एवं चार शिशु वाटिकाओं का संचालन कर रही हैं। इन विद्यालयों में लगभग 709 आचार्य तथा 13003 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

श्री गुरुजी द्वारा बीजारोपित शिशु मंदिर का दीप सर्वप्रथम 1974 में जम्मू कश्मीर में प्रज्वलित हो उठा और आज 33 वर्षों के काल खण्ड में भारतीय शिक्षा समिति ने कई मील के पत्थर तय किए हैं। श्री गुरुजी जन्मशताब्दी वर्ष 2006–2007 के अंतर्गत विभिन्न संगठना/संस्थाओं द्वारा समय–समय पर श्री गुरुजी के प्रेरक वचनों/उद्बोधनों एवं जीवनानुभवों पर आधारित अनेक पुस्तकें /पुस्तिकाओं का प्रकाशन हुआ है। ऐसे बृहद प्रयासों से 'बाल रवि' स्मारिका के रूप में भारतीय शिक्षा समिति का यह लघु प्रयास भी श्री गुरुजी की प्रतिस्मृति में समर्पित है।

श्री गुरुजी ने समय–समय पर अपने उद्बोधनों के माध्यम से आदर्श शिक्षक तथा आदर्श विद्यार्थी के गुणों का बखान किया है। वे कहा करते थे कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य को जीवन के अंतिम लक्ष्य की ओर उन्मुख करना है न कि पैसे कमाने के लिए शिक्षा ग्रहण करना। यानि श्री गुरुजी ने शिक्षा की 'व्यवसायिकता' पर बल न देकर उसे एक मिशन, एक ध्येय के रूप में लेने की बात कही। एक शिक्षक होने के नाते उन्होंने जो आदर्श हमारे समक्ष प्रस्तुत किए हैं उनको आत्मसात् करने की आवश्यकता है। जब 1931 में श्री गुरुजी कांशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राणिशास्त्र के प्रोफेसर थे तो अध्यापन के दौरान अपने विषय के अतिरिक्त दूसरे विषयों में भी अध्ययन करने के बाद विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया करते थे। विद्यार्थियों से असीम प्रेम के कारण छात्र उन्हें श्री गुरुजी के नाम से सम्बोधित करने लगे। श्री गुरुजी अध्ययन और अध्यापन के प्रति इतने समर्पित थे कि अपने वेतन का काफी भाग वह उन विद्यार्थियों के लिए व्यय करते थे, जो निर्धन थे।

आज हमें श्री गुरुजी के इन आदर्शों पर चलना सीखना होगा। विद्यार्थी की हर सम्भव सहायता

करना एक आचार्य का नैतिक दायित्व है तथा प्रत्येक विद्यार्थी का भी यह कर्त्तव्य है कि वह अपने आचार्य का अधिक से अधिक सम्मान करें और आपस में 'गुरु–शिष्य' का नाता जोड़ें। इस स्मारिका में भी ''गुरु–शिष्य'' परम्परा पर अनेक रचनाएं पढ़ने को मिलेंगी जो या तो आचार्यों द्वारा लिखित हैं, या फिर विद्यार्थियों ने अंग्रेजी के 'टीचर' और 'स्टूडेंट' शब्द को परिभाषित कर इसके अर्थ को प्रतिपादित करने का प्रयास किया है। "कश्मीर से जब नागदेवता सरुड़ पहुंचे" जैसी कथाएं प्रेरणास्पद हैं और हमारे विश्वास को और सुदृढ़ करती हैं। ऐसी कथाएं और उजागर करने की आवश्यकता है।

बाल रवि स्मारिका के इस नए अंक में शिक्षा समिति के पदाधिकारियों, विद्यालय के प्राचार्यों/आचार्यों तथा विद्यार्थियों द्वारा अंग्रेजी तथा हिन्दी में लिखी रचनाएं भी प्रकाशित हैं। यहां विद्यालयों की वार्षिक गतिविधियों तथा उपलब्धियों को भी संकलित किया गया है। यहां बालरवियों के रूप में इन्द्रेश शर्मा तथा सीमा देवी जैसी छात्रा–छात्राएं भी हैं जो अपनी प्रतिभा द्वारा विद्यालयों का नाम रोशन करते हैं।

इस अंक में कहानी , कविता , पहेली , प्रेरक वचन , लघु लेख तथा अन्य सम्बंधित सामग्री के माध्यम से लगभग 140 विद्यार्थियों ने अपना योगदान दिया है। हिन्दी, अंग्रेजी के अतिरिक्त एक रचना डोगरी और किश्तवाड़ी में भी है। स्मारिका में शिक्षा प्रदान कहानियां हैं, 'आओ ज्ञान बढ़ाएं' तथा 'आपका स्तम्भ' में ज्ञानप्रद एवं विचारप्रधान लेख हैं। नन्हीं कोमल भावनाओं से सृजित कविताएं मर्मस्पर्शी एवं राष्ट्रीय चिंतन तथा सौहार्द भावना से ओत प्रोत है। प्रदूषण , प्रकृति , रोजमर्रा की वस्तुएं– रचनाओं के विषय हैं। हिन्दुस्तान , बात ऐसे बनें , बेटियां , कश्मीर की पुकार , मेरा बचपन जैसी रचनाएं मन को उद्वेलित करती हैं। Attention , My Childhood , What is life , Realization तथा Faces in Class भी अपना प्रभाव छोड़ती हैं ।

हीरानगर में आयोजित विज्ञान मेल के अंतर्गत विज्ञान मॉडल तथा संस्कृत प्रश्न मंच प्रतियोगिताओं में जिन विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया तथा क्षेत्रीय खेलकूद विद्याभारती उत्तर क्षेत्र द्वारा फाजिल्का पंजाब में खो–खो कब्डडी तथा कुरूक्षेत्र में एथलेटिक प्रतियोगिताओं में जिन छात्र–छात्राओं ने भव्य प्रदर्शन किया, उनके भी परिणाम यहां संकलित किए गए हैं।

मातृभाषा देश में दिनोंदिन कैसे लोकप्रिय हो रही है – इस संदर्भ में सरकारी स्तर पर जो रिपोर्ट उजागर हुई है तथा क्या जम्मू कश्मीर राज्य देश के अन्य अशिक्षित राज्यों में शामिल है, के बारे में भी तथ्य प्रकाशित किए गए हैं।

स्मारिका में प्रकाशनार्थ सामग्री भेजने से पूर्व यदि निम्न बातों को ध्यान में रखा जाएगा, तो सम्पादन में सुविधा होगी, साथ ही विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा भी निखरेगी, और यही हमारा मूल उददेश्य भी है :–

(1)कोई भी रचना प्रेषित करने से पूर्व विद्यार्थी यह लिखना न भूलें कि ''यह रचना (रचना का नाम) मेरी मौलिक रचना है तथा अभी तक अप्रसारित एवं अप्रकाशित है।'' ये पंक्ति आचार्यों /प्रधानाचार्यों द्वारा सत्यापित भी हो, तो उत्तम रहेगा।

(2)चित्र का सम्पूर्ण परिचय चित्र के पीछे लिखना अनिवार्य है।

(3)प्रकृति , महापुरुषों तथा अन्य सम्बंधित

विषयों पर आधारित रेखाचित्र भी प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं।

मैं विद्यालय के प्रधानाचार्यों /आचार्यों का आभारी हूँ जिन्होंने स्मारिका में प्रकाशनार्थ सामग्री को प्रेषित कर हमें अपना सहयोग प्रदान किया है। मैं उन सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने स्मारिका में रचनाओं तथा विज्ञापनों के द्वारा अपना–अपना योगदान दिया है। विशेषकर भारतीय शिक्षा समिति के संगठन मंत्री मा॰ अशोक जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिन्होंने बाल रवि स्मारिका के सम्पादन का मुझे दायित्व सौंप कर मेरा मनोबल बढ़ाया । समिति के अध्यक्ष श्री कृष्ण दत्त शर्मा तथा मंत्री श्री रामलाल शर्मा के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने समय – समय पर मुझे प्रोत्साहित किया। कार्यालय में कार्यरत निशाजी का धन्यवाद , जिन्होंने सामग्री संकलन में मुझे सहयोग दिया । प्रकाशक के प्रति भी आभार व्यक्त करना मेरा परम कर्तव्य है। मैं कम्प्यूटर ऑपरेटर को नहीं भूल सकता , जिन्होंने निरंतर कई दिनों तक मेरे साथ कार्य किया और स्मारिका के पृष्ठों की सज्जा को निखारा। प्रूफ शोधन में जो मेरा सहयोग शिक्षाविद् श्री अशोक रैणा ने किया, उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

'बाल रवि' का नया अंक आपके समक्ष है। आशा है कि अवश्य ही हमें पाठक अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराने की कृपा करेंगे ताकि आगामी अंकों में और निखार लाया जा सके।

– महाराजकृष्ण भरत
भारतीय शिक्षा समिति, नारायण भवन
वेद मंदिर अम्बफला , जम्मू

अनमोल वचन

1. मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो।
2. जीतना चाहते हो तो क्रोध और तृष्णाओं को जीतो।
3. खाना चाहते हो तो गुस्से को खाओ।
4. पीना चाहते हो तो, ईश्वर की भक्ति का रस पियो।
5. पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो।
6. देना चाहते हो तो नीची निगाह करके दो और भूल जाओ।
7. लेना चाहते हो तो माता–पिता और गुरु का आशीर्वाद लो।
8. जाना चाहते हो तो सतसंगों एवं स्वस्थप्रद स्थानों पर जाओ।
9. आना चाहते हो तो दुखियों की सहायता को आओ।
10. छोड़ना चाहते हो तो पाप, घमण्ड और अत्याचार को छोड़ो।
11. बोलना चाहते हो तो सत्य और मीठे वचन बोलो।
12. खरीदना चाहते हो तो प्रेम का सौदा खरीदो।
13. तोलना चाहते हो तो बात को तोलो और फिर ठीक बोलो।
14. देखना चाहते हो तो अपनी बुराई को देखो।

– भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर
वेद मंदिर परिसर, अम्बफला जम्मू

अनुक्रमणिका

स्वतंत्रता संग्राम के १५० वर्ष

रणबाँकरों को शत - शत नमन

चन्द्रशेखर आजाद

शत नमन माधव चरण में

१. प.पू. श्री गुरुजी का पूरा नाम माधव सदाशिव गोलवलकर। जन्म १६ फरवरी १६०६, विजया एकादशी युगाब्द ५००७, नागपुर। शिक्षा एम.एस–सी प्राणिशास्त्र, एल.एल.बी। काशी विश्वविद्यालय में कुछ समय अध्यापन भी किया। वहीं पर विद्यार्थियों ने प्रेम से श्री गुरुजी नाम दिया।

२. सारगाछी आश्रम बंगाल में स्वामी विवेकानन्द जी के गुरुभाई स्वामी अखण्डानन्दजी से दीक्षा ली। उन्हीं के निर्देश से वापिस संघ में आए।

३. पूजनीय डाक्टरजी के साथ संघ कार्य किया, १६४० में उनकी मृत्यु के पश्चात् सरसंघचालक बनें।

४. ५ जून १६७३ को देहावासन, ३३ वर्ष में पूरे भारत का ६५ बार भ्रमण किया।

५. भारत विभाजन के दुःखद काल में हिन्दुओं को धैर्य प्रदान किया व स्वयंसेवकों को हिन्दू समाज की रक्षा व सेवा में जुटाया।

६. जम्मू–कश्मीर के महाराजा हरिसिंह को भारत में विलय के लिए तैयार किया। धारा ३७० को हटाने के लिए प्रजा परिषद आन्दोलन का समर्थन किया। देश भर से स्वयंसेवक सत्याग्रह करने जम्मू आए।

७. भारत–चीन समझौते से पूर्व राष्ट्र को सावधान किया कि चीन धोखेबाज है, हमला करेगा, जो बाद में सच साबित हुआ।

८. १६६२, ६५, ७१ में युद्ध के समय देश भर में स्वयंसेवकों को आहवान – पूरी शक्ति लगाकर सरकार व सेना को सहयोग दिया।

६. १६६४ में विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना देश भर के संतों, आचार्यों के सम्मेलन में ऐतिहासिक फैसला 'छुआछूत को कोई मान्यता नहीं, सब समान हैं' का उद्घोष किया।

१०. भाषावार प्रान्त रचना पर सावधान किया कि देश की सभी भाषाएं अपनी राष्ट्रीय भाषाएँ हैं, इसके कारण वैमनस्य नहीं होना चाहिए।

भारत दूसरों के आचार–विचारों का अंधानुकरण न करें और मानव मात्र के सुख–स्वास्थ्य का ही समग्र विचार करने वाला आध्यात्मिक ज्ञान को दुनिया भर में वितरित–प्रसारित करने का नियम कर्तव्य निभाने के लिए आवश्यक प्रभाव का सम्पादन करें – इसी प्रबल प्रेरणा से श्री गुरुजी स्वयं भी कार्यरत रहे और समाज में भी कर्म चेतना जागृत करने के लिए उन्होंने समाज प्रबोधन का कार्य भी किया।

श्री गुरुजी उवाच

हिन्दुराष्ट्र

यह हिन्दुराष्ट्र है, इस राष्ट्र का दायित्व हिन्दू समाज पर ही है, भारत का दुनिया में सम्मान या अपमान हिंदुओं पर ही निर्भर है। हिंदू समाज का जीवन वैभवशाली होने से ही इस राष्ट्र का गौरव बढ़ने वाला है। किसी के मन में इस विषय में कुछ भ्रान्ति रहने का कारण नहीं है।

राष्ट्रीय चरित्र

राष्ट्रीय चारित्र्य का मूलाधार तादात्म्य और प्रेम है। यह मेरा राष्ट्र है, मैं इसका अंश मात्र हूँ, इसकी भलाई मेरी भलाई है, मैं मरूं, चाहे परिवार डूबे, किन्तु राष्ट्र अच्छा रहे–यह भाव जब उत्पन्न होता है, तब राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होता है।

शिक्षा

शिक्षा से मनुष्य में चिरन्तन सत्य को आविष्कृत करने की क्षमता प्राप्त होनी चाहिए। जगत् भर में अनेकानेक विषयों का ज्ञान प्राप्त होने के साथ ही अपनी सत्य अवस्थ का बोध भी हो।

धर्म

समूची सृष्टि जिन सूक्ष्म नियमों के आधार पर शून्य में विलीन होकर चलती रहती है, उसको धर्म कहते हैं। उन नियमों का मनुष्य के जीवन में उतरना धर्म होता है।

युवा

तन, मन, धन के साथ यौवन से भरा हुआ अर्थात उमंग और सामर्थ्य से भरा हुआ जीवन, राष्ट्र कार्य के लिए चाहिए। यौवन में साहसवृत्ति, संकटो से लड़ने और सफलता प्राप्त करने की शक्ति होती है।

वर्तमान काल के लिए

हमें स्वयं को भाग्यशाली समझना चाहिए कि हम वर्तमान संकटपूर्ण घड़ी में जन्मे हैं। विपरीत परिस्थितियों में हमें अपने अन्दर के सर्वोत्तम को प्रकट करने, अपने पौरूष का परीक्षण करने और विश्व के समक्ष भव्यतापूर्ण प्रचण्ड व्यक्तित्व के रूप में खड़े होने का अवसर मिलता है।

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर
वर्ष २००६ के आंकड़े

	कुल विद्यालय	अध्यापक	विद्यार्थी
भारतीय विद्या मंदिर (प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च)	५१	३६८	६४६३
संस्कार केन्द्र एकल शिक्षक विद्यालय	३३६	३३६	६४६२
शिशु वाटिका	०४	०५	४८

पुंछ एवं करिगल जिले के झंस्कार क्षेत्र में विद्यालय प्रारम्भ करने की योजना विचारधीन।

श्री गुरुजी जन्म शताब्दी वर्ष : एक नजर में

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में भारतीय शिक्षा समिति द्वारा संचालित विद्या मंदिरों में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनका विवरण समिति के संगठन मंत्री श्री अशोक कुमार कौल द्वारा यहां पर प्रस्तुत है।

1. श्री गुरुजी के रेखांकित चित्र पर विभिन्न वर्गों के भैया–बहिनों ने रंग भरे। इसमें 3347 भैया–बहिनों ने भाग लिया।

2. श्री गुरुजी के जीवन प्रसंगों पर विभिन्न वर्गों के शिशु , बाल, किशोर (11 साल, 14 साल एवं 17 साल से नीचे) के भैया–बहिनों को पुस्तकें पढ़ने के लिये दी गईं। तत्पश्चात् सभी को वर्ग अनुसार प्रश्न–पत्र दिये गये। परीक्षा सम्पन्न होने के बाद उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करवाया गया। सभी विद्यालयों के श्रेष्ठ भैया–बहिनों को पुरस्कृत किया गया। इस आयोजन में क्रमशः शिशु वर्ग, बाल वर्ग, एवं किशोर वर्ग के 1200, 1200 एवं 300 भैया–बहिनों ने भाग लिया।

3. वन्दना सभा में सप्ताह में एक दिन आचार्यों द्वारा श्री गुरुजी के प्रेरक प्रसंग निरंतर बताये जाते रहे।

4. विद्यार्थियों के शारीरिक विकास की दृष्टि से सूर्य नमस्कार तथा यज्ञ की रचना क्षेत्र स्तर पर की गई थी, जिसको जम्मू कश्मीर में सभी विद्यालयों में सम्पन्न कराया गया।

5. 10 विद्यालयों में महापुरुषों की जयंती मनाई गईं, जिसमें उस समुदाय के उस क्षेत्र के प्रमुख लोगों को निमंत्रण देकर विद्यालय की वन्दना सभा में बुलवाया जाता रहा। वन्दना के बाद उन प्रमुख लोगों से सम्बंधित महापुरुषों के जीवन पर प्रकाश डाला जाता था।

6. सभी विद्यार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण करवाया गया। यह व्यवस्था भी क्षेत्र स्तर पर तय की गई थी। स्वास्थ्य परीक्षण का कार्य भी क्षेत्र की ओर से डाक्टर की टिप्पणी के साथ परिवारों में बांटा गया।

एकल शिक्षक विद्यालय योजना : कार्य विस्तार

अशोक कुमार कौल
संगठन मंत्री,
भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू – कश्मीर
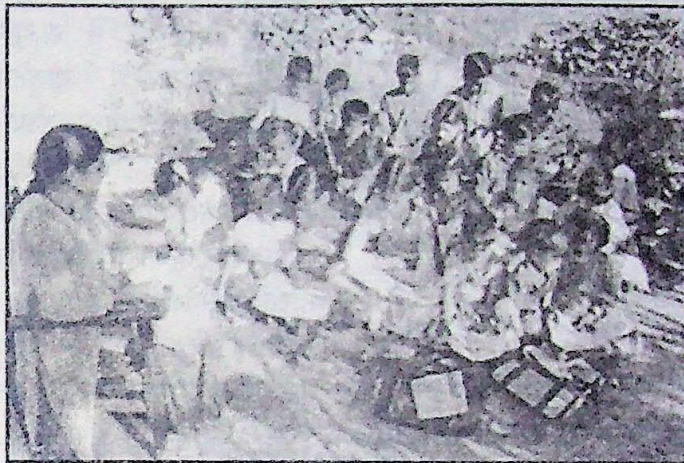
किश्तवाड़ के एक विद्यालय का चित्र

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर ने वर्ष 2000 से संवेदनशील तथा सीमा से सटे क्षेत्रों में साक्षरता बढ़ाने एवं नैतिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एकल शिक्षक विद्यालय और संस्कार केन्द्र प्रारम्भ किए हैं। जम्मू कश्मीर के ग्रामीण क्षेत्रों में सैकड़ों ऐसे बच्चे हैं जो आर्थिक पिछड़ेपन के कारण स्कूल नहीं जा पाते।

उल्लेखनीय है कि मा. नारायण दास जी (तत्कालीन विद्या भारती के उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री) की प्रेरणा से जम्मू कश्मीर में 1984 में भारतीय शिक्षा समिति का गठन हुआ था। वैसे तो 1974 में राज्य के प्रथम शिशु मंदिर की स्थापना ज़िला डोडा के किश्तवाड़ क्षेत्र में हुई थी। लगभग 33 वर्षों के उपरान्त आज इस कार्य ने विस्तार पाया है। वर्तमान में 51 भारतीय विद्या मंदिर गतिशील हैं तथा 336 एकल शिक्षक विद्यालय एवं संस्कार केन्द्र भी चल रहे हैं। यह शिक्षा केन्द्र डोडा, उधमपुर, जम्मू, करगिल एवं लेह ज़िलों में चल रहे हैं। इन केन्द्रों मे 8050 भैया–बहिन लाभवांवित हो रहे हैं। इन में 1000 से अधिक ऐसे बच्चे भी हैं जो किसी भी स्कूल में नहीं जा पाते। ऐसे बच्चों की आयु सीमा 5 से 12 वर्ष तक की है। वर्ष 2007 के अन्त तक 540 एवं 2009 के अन्त तक 1000, 2011 के अन्त तक 1500 ऐसे शिक्षा केन्द्र खोलने की योजना है।

भारतीय शिक्षा समिति, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध है, जिसमें
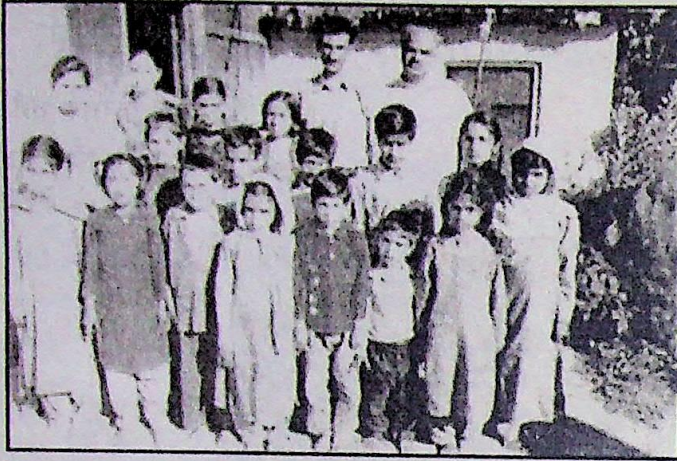
किश्तवाड़ में एकल शिक्षक विद्यालय के विद्यार्थियों एवं आचार्यों के साथ लेखक

नियमानुसार प्रत्येक विद्यालय में ऐसे संस्कार केन्द्र शुरू करने हैं। कुछ केन्द्रों के बच्चे किसी न किसी स्कूल में जाते हैं लेकिन नैतिक शिक्षा के नाम पर उन विद्यालयों में कोई व्यवस्था नहीं होती। समिति की देख–रेख में चल रहे इन केन्द्रों में नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के कारण विशेष प्रकार का परिवर्तन देखने को मिलता है। "हम भारतीय हैं, भारत हमारा देश है, हमारी संस्कृति, स्वदेश प्रेम, भारतीय होने पर हमें गर्व है", – इस प्रकार की शिक्षा यहां दी जाती है, साथ ही महापुरुषों के संस्मरण तथा देश भक्ति के गीतों से भी इन बच्चों के भीतर देश प्रेम की भावना जगाई जाती है।

शिक्षा प्रदान करना निस्संदेह ईश्वरीय कार्य है और भारतीय शिक्षा समिति उसी ढंग से कार्य में संलग्न हैं। भारतीय शिक्षा समिति के साथ जुड़े जम्मू के अनेक शिक्षाविद् एवं कार्यकर्ता इस पुनीत कार्य को कर रहे हैं।

मातृभाषा ही देश में लोकप्रिय शिक्षा का माध्यम – एक सर्वेक्षण

अंग्रेज़ी का भूत सवार होने के बावजूद वर्तमान में सम्पूर्ण देश में अधिकतर विद्यालयों में मातृभाषा ही शिक्षा का सशक्त माध्यम बना हुआ है, जो प्रसन्नता का विषय है। एन.सी.ई.आर.टी. तथा राज्य सरकारों एवं केन्द्रीय सूचना केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान के सहयोग से सम्पन्न सातवें अखिल भारतीय सर्वेक्षण में इस तथ्य की पुष्टि की गई। यह सर्वेक्षण 2002 में प्रारम्भ हुआ था, जिसे हाल ही में पूरा किया गया।

देश में अंग्रेज़ी पब्लिक स्कूलों की आड़ में जो अब तक प्रचारित किया जाता रहा है कि देश में अंग्रेज़ी माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा का प्रतिशत ही अधिक है और मातृभाषाओं के स्थान पर अब अंग्रेजी को महत्व दिया जा रहा है; ऐसी सोच रखने वालों के लिए यह समाचार झटका देने वाला है कि इस सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 92 प्रतिशत विद्यालयों में मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम है। इससे पूर्व 1996 में कराए गए सर्वेक्षण में यह प्रतिशत 91 था।

यह सर्वेक्षण अखिल भारतीय स्तर पर सभी राज्यों के सहयोग से कराया गया है। अतः पूरे देश भर में प्राप्त आंकड़ों का निष्कर्ष यही निकलता है कि इस देश में अंग्रेज़ी के स्थान पर मातृभाषाओं का ही बोल बाला है, इस तथ्य को अब जोरदार ढंग से उजागर करने की आवश्यकता है।

नये सर्वेक्षण के अनुसार सम्पूर्ण देश में 13,62,945 विद्यालय हैं, जिनमें 8,50421 प्राथमिक 3,37980 माध्यमिक तथा 1,30675 उच्च एवं 43,869

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हैं। 1996 कें सर्वेक्षण में यह संख्या कुल 10,41,278 थी, जिनमें 7,05,834 प्राथमिक, 2,24,544, माध्यमिक, 87,238 उच्च एवं 23,662 उच्चतर विद्यालय हैं।

इस सर्वेक्षण के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों में 92.34 प्रतिशत विद्यालय ग्रामीण क्षेत्रों में और 90.39 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में हैं, जहाँ शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही है। मांध्यमिक विद्यालयों तथा ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में यह प्रतिशत 92.71 है तथा शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में 87.37 प्रतिशत है। दूसरी ओर 46.79 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालयों में, 47.41 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालयों में, 4.32 प्रतिशत उच्च विद्यालयों में तथा 48.11 प्रतिशत उच्चतर विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी है।

ऐसे सर्वेक्षणों से निस्संदेह मातृभाषाओं के विकास में बल मिलेगा तथा विद्यार्थी मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा के प्रति और आकृष्ट होंगे।

आओ जलाये दीया वहाँ, जहाँ अभी भी अंधेरा है

•रामलाल शर्मा

शिक्षा, विद्या और अध्यात्मिकता के कारण ही भारत को विश्व गुरु की संज्ञा दी गई है। 'भारत' से अभिप्राय है – प्रकाश की खोज में लगा हुआ, 'भा' का अर्थ है 'प्रकाश', ज्ञान और 'रत' का 'लीन'–'लगा हुआ' है। सूर्य पूर्व से उदय होता है भारत पूर्व में है, इसी कारण यहाँ का मूल मन्त्र रहा – "असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय"। हमारे ऋषियों ने विद्या को अमृत माना है, "अमृतोतुविद्या" अर्थात् विद्या का प्रसार अमृत का प्रसार है परन्तु कैसी बिडम्बना है कि विश्व का गुरु कहलाने वाले देश में आज भी पैंतीस प्रतिशत की जनसंख्या अनपढ़ है उन्हें अक्षर ज्ञान नहीं, वह अंगूठा छाप है, यह अभिशाप है।

जिस देश ने शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा ऊँचा स्थान पाया है जहाँ वेदों, उपनिषदों, पुराणों और मनोस्मृतियों की रचना हुई, नालन्दा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों का मार्गदर्शन रहा, जिनमें विदेशों के छात्र पढ़ते थे (चीनी विद्वान ह्युनसांग, और फायान ने भी इन विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण की थी) जो देश शिल्प विज्ञान में विकसित था जिसका एक उदाहरण दिल्ली का कुतुबमीनार भी है, उस पर समय का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। शून्य का ज्ञान हमने विश्व को दिया। कुछ वर्ष पूर्व नासा के आकाशीय उपग्रहों ने चित्र के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि भारत और श्रीलंका के बीच करीब सत्रह लाख साल पुराना एक पुल है और यह भी एक तथ्य है कि इतने लाख वर्ष पूर्व श्री राम ने त्रेतायुग में यह पुल बनवाया था जिसे 'रामसेतु' के नाम से जाना जाता है।

शिक्षा विकास का आधार है, विकास का मन्त्र, यन्त्र है। शिक्षा के कारण ही अमरीका, इंग्लैंड, जर्मन, जापान इत्यादि देश इतने विकसित हुए हैं, शिक्षा के विस्तार के अभियान को सरकार ने सर्वशिक्षा अभियान द्वारा चलाया है, परन्तु सच यह

है कि सरकार की छाया में यह कार्य होनें वाला नहीं है। समाज और व्यक्ति के सहयोग से ही यह सम्पन्न होगा। विद्या भारती ने भी शिक्षा का अभियान हाथ में लिया है। "आंओ जलायें दीप वहाँ, जहाँ आज भी अंधेरा है" का मूल मंत्र लेकर हज़ारों कार्यकर्त्ता इस कार्य में लगे हुए हैं। शिक्षा का काम सेवा, धर्म और पुण्य का काम है, इसी भाव से यह कार्य किया जा सकता है। यह एक पावन आंदोलन है, महान यज्ञ है, पवित्र तपस्या है, ऐसा जान कर ही शिक्षा का दीप जलाने के लिए विद्या भारती का निर्माण हुआ है।

शिक्षा का एक पहलू यह भी है कि यह एक व्यवसाय, एक उद्योग बन गया है, साथ ही रोज़ी–रोटी का साधन तो है ही। व्यवसायीकरण के कारण ही शिक्षा बड़ी महंगी हो गई है, और गरीब की पहुँच से बाहर होती जा रही है। पहले राजा का बेटा कृष्ण और ब्राह्मण गरीब का बेटा सुदामा एक साथ पढ़ते थे परन्तु आज इसमें अंतर जरूर आया है। यदि कभी अमीरों और गरीबों के विद्यालय अलग–अलग हो जाएंगे तो फिर समानता, समरसता और एकता समाज में कैसे आएगी ?

बिना शिक्षा के व्यक्ति बंजर जमीन के समान है, उसकी शक्ति सोई हुई होती है, शिक्षा के द्वारा ही उसमें ऊर्जा उत्पन्न होती है, जिसके कारण उसमे क्रियाशीलता का जन्म होता है "सा विद्या या मुक्तेय", विद्या वह है जो व्यक्ति को बंधन से मुक्त करती है उसमें सामाजिक भावबोध, समानता, सम्वेदना, समरसता इत्यादि गुणों को जागृत करती है। व्यक्ति से व्यक्ति को जोड़ती है, परन्तु आज की शिक्षा व्यक्तिवाद, परिवारवाद, भाषावाद, प्रांत को जगा रही है। आज शिक्षा में नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा का अभाव है, आज का डाक्टर, आज का अध्यापक वेतनभोगी कर्मचारी है, उसमें सेवा भाव का अभाव है। शिक्षा का धर्म है कि हम दूसरों के लिए सहायक बनें। देश के विकास और निर्माण में सहायक हों।

कहते हैं कि सुदामा कृष्ण के घर गए थे परन्तु आज के युग में कृष्ण को गरीब ब्राह्मण सुदामा के पास स्वयं जाना होगा, तभी समाज बदलेगा। शिक्षा का दीप हर स्थान पर, हर झोंपड़ी में प्रज्वलित हो उठे, इस परिप्रेक्ष्य में जम्मू कश्मीर में भारतीय शिक्षा समिति प्रयासरत है। इस पुण्य कार्य में सभी का सहयोग अपेक्षित है तभी हम वहां भी दीप जलाने में सफल होंगे जहाँ अभी अज्ञानता का अंधकार है। जब शिक्षा का दीप जलेगा–प्रकाश होगा, अंधेरा मिटेगा। हर शिक्षित व्यक्ति दूसरे अशिक्षित को पढ़ायेगा – यह महान यज्ञ है, हम भी इस में आहुति डाल कर पुण्य के भागी बनें।

विद्यार्थियों में देश और राष्ट्र के प्रति समझ बढ़े; उनका सर्वांगीण विकास हो, इस उद्देश्य से विद्या मन्दिरों और एकल विद्यालयों के माध्यम से शिक्षा का यह अभियान पूरे देश में चलाया जा रहा है। देशभर में ऐसे 26000 से भी अधिक विद्यालय हैं जिनमें लाखों की संख्या में विद्यार्थी अध्यनशील हैं।

(लेखक भारतीय शिक्षा समिति के मन्त्री हैं)

Role of Bhartiya Shiksha Samiti in Present Times

The state of Jammu & Kashmir can be called the roof and crown of Bharat Mata. When the Britishers left India in 1947 dividing the country into two parts, Islamic state of Pakistan was created out of Muslim majority areas of Punjab and Bengal and innumerable royal states were left to fend for their destiny many states acceded to the union territory of India, Maharaja Hari Singh of J&K initially dithered and played with an idea of having independent Sovereign state. But Pakistani armed forces in the garbs of tribesmen attacked Kashmir. Good sense dawned upon the Maharaja when prevailed upon by the great patriot lie Sh. M.S. Golwalkar (Shri Guru Ji) the state of J&K finally acceded to India. The Indian forces were-airlifted to repulse the attack of Pakistani marauders. In swift and timely action our forces compelled the attacking Pakistani forces to retreat & got our territory vacated. But unfortunately Pandit Nehru, the then Prime minister, declared a cease-fire, under the influence of Lord Mount Batten. Not only a big chunk of Kashmir territory was left under the Pak occupation, but- the matter of Kashmir was taken to the Security Council of the U.N.O. Thus the inept handling by then rulers has kept the problem of J&K still embroiled and has been festering like an unhealed carbuncle.

The successive Govt. in Pakistan has not accepted the accession of J&K to India because of the state's majority character. They have been advocating that the state should be merge with Pakistan. In the last two decades or so Pakistan has been waging a low intensity proxy war against India by sending trained infiltrators who indulge in acts of terrorist by killing defenseless innocent people. Thousands of people have been killed; these Jihadis kill people, desecrate Hindu holy temples & shrines, abduct and rape women. Because of these blood curdling atrocities, almost all Kashmiri Pandits have migrated to other parts of India. They have left their homes & hearths and are condemned to live in pitiable conditions in the refugee camps set in Jammu. Some of them have migrated to other parts of the country to find new morings. Thus the valley of Kashmir has emerged as a region dominated by Muslims and only a few Hindu families may be seen spending sleepless nights amidst constant threat of terrorists to their life, honour & property in this region.

The terrorist activities are not only going in Kashmir valley but it has spread its nefarious activities in Jammu Province also. Jammu also come under their attacks and Kashmir like activities are carried on in Jammu Province also.

Under these circumstances the Bhartiya Shiksha Samiti, a registered educational organization, started in 1984, came forward in educational field, & spread inspite of disturbed terrorist activities. Bhartiya Shiksha Samiti also started seven school in migrant camps of Kashmir province established by the Govt at Jammu. It proved very beneficial for the Kashmiri Displaced Community.

ACHIEVEMENTS :

1. **The people are brought into touch with the National Language.**
2. **The students from remotest corners of the state get educational facilities.**
3. **Level of literary people is increasing.**
4. **People are imbibed with good sanskars which the people have welcomed.**
5. **The poorest children have got the opportunity to learn three R's (Reading, Writing & Arthmetics).**
6. **It helps in creating social consciousness in people of these backward areas.**

(A Report by office of the Bhartiya Shiksha Samiti J&K Amphalla Jammu)

QUALITIES OF A GOOD TEACHER

S.N. Raina,
Education Officer
B.S.S.Amphalla

On day one there have been good relations between the teacher and the taught. There is tremendous change in other relations in the universe but this change has remained as fair as rose.

A teacher is a model. A good teacher possess qualities as under :

1. Honest 2. Fair
3. Capable 4. Diligent

1. **Honest** : A good teacher should be honest in his dealings. He should be a man of integrity and high moral character.
2. **Fair** : A good teacher should be above caste and religion. He is a judge and while awarding maintains the scales of Justice. He treats equally high and low.
3. **Capable** : He has authority on his subject. He always plans his lesson. He has complete control over the students. He modifies the behaviour of mischevious students in the school.
4. **Diligent** : He is hardworking. He is punctual and regular in the school. He is child centred and philanthropic. He is never idle in the school.

Bhartiya Vidya Niketan Leh, Ladakh

- Vijay Chering

Ladakh, popularly known as the land of numerous passes and mystic lamps, the broken moon and last Shangri-la, beckons tourists to discover its winding rivers, glacial slopes and shimmering lakes. Ladakh is bounded by the two of the world's highest mountain ranges, the Karakoram and the great Himalayas. The altitude varies from 9000 to 18000 feet above the sea level. Before Indo-Pak cease-fire the Ladakh region was comprised of the three districts Leh, Kargil and Skardo, later the district of Skardo and part of Kargil became the unauthorised territory of Pakistan occupied Kashmir and Ladakh remained with Jammu & Kashmir state.

भारतीय विद्या निकेतन चोगलमसर, लेह में, छात्रावास के भूमि पूजन के अवसर का एक दृश्य।

During the 1962 war between China and India a part of alch area was usurped by China. Ladakh is inhabited by the people of the Tibto-Burman and Indo- Aryan descent with Buddhism being the dominant religion the Ladakh comprises of distinct valleys namely 1. Leh, 2.Kargil. 3 Changthang 4. Nubra 5. Zanskar.

FUTURE PLANNING OF LADAKH

The above description of area clearly shows that it is the need of the hours to make the presence of nationalist forces left in this area, strengthen the pro-Indian people of the area and through them try to have a strong pocket of nationalist Indian feelings & sentiments. The easiest way to do so is to open good schools in these valleys and give good education both secular & cultural to the students of these areas. It is therefore, that Bhartiya Shiksha Samiti has decided to open at least one Primary schools in each of the valleys; at present we have one Primary school in Leh valley. The schools in remaining four valleys are to be opened in coming years.

(The author is Joint Secretary of Bhartiya Vidya Niketan, Leh)

THE ENVIRONMENT - OUR ROLE & RESPONSIBILITY

SHABNAM BALI (DUTTA)
Principal
Deshmesh B.V.M

Tremendous increase in the environmental pollution has exerted pressure on the society to build up awareness among the people about the drastic effects of polluted environment. Human health hazards have increased due to general centamination of the eco system during the last few decades. The publication of a book entitled 'Silent Spring' during the year 1962 was a turning point to focus the attention of the researchers on the worst effects of the pollution in the environment.

Excessive installation of industries, use of pesticides, chemical weapons and indiscriminate use of insecticides have resulted in environmental problem leading to various health problems both in human beings and animals. For a healthy nation it is essential that there should be clean air, pollutant free atmosphere, pure water and pure food. There is a need to monitor the environment so that the future generation of the man may live in a healthy and clean atmosphere. In this regard the students and teachers can certainly play pivotal role to overcome this problem of environmental degradation and such efforts on the part of the students and teachers would certainly be rewarding to mankind.

MASSES CONTACT APPROACH :

It is a saying that India lives in her villages, more than 80% of the Indian pollution lives in villages. The father of the Nation Mahatma Gandhiji had started all the social reformatory programmes from the villages. As such the students & teachers may approach in the first instance to the rural folks and educate them about the importance of pollution free environment.

REMEDIAL MEASURES :

1. **Agricultural Aspects** : Farmers may be educated in the various aspects of the excessive use of pesticides. Besides killing of pests, the pesticides may kill the non-targeted organisms i.e. Natural enemies of insects, parasite, pests, pollinators and soil enriching earthworms and ultimately pollute the environment either directly or indirectly. They should follow the following remedial measures.

a) Do not apply pesticides unless the crop is heavily infected.

b) Use micro incapsulated insecticides.

c) Evening and late evening applications are safe.

d) Ground application of pesticides are safer than the aerial applications.

2) **Water Contamination** : Teachers and students should make wise the rural folks .

VEGYAN MELA

A state level Vegyan Mela was held at Hiranagar (Kathua) on 4th, 5th and 6th of November, 2006. Under the guidance of Vegyan Prumukh Sh. Pardeep Singh, Principal Bhartiya Vidya Mandir High School Ramban.

Seventy students from various schools under Bhartiya Shiksha Samiti (J&K) participated in the mela for competition. The Vergs for competition among the students were three in all - viz 1. Kishore Verg, 2. Bal Verg, 3. Shishu Verg. All of these Vergs were created for the assessment of students in science, Modals and Sanskrit. Some topics were given for assessment to the students the result of the position holders in the competition of Vegyan Mela is as under :

BHARTIYA SHIKSHA SAMITI J&K

Result of 6th Vegyan Mela (Science fair)and Sanskrit Prashan Manch at Hiranagar (Kathua) for the year 2006-07

S.No.	Vergs	Assessment in Science Quiz			Assessment in Modals			Ass. in Sanskrit Prashan Manch		
		1st Position	2nd Position	3rd Position	1st Position	2nd Position	3rd Position	1st Position	2nd Position	3rd Position
1	Kishore Verg	B.V.M.HS. Udha-mpur	B.V.M.H.S. Hira-nagar	B.V.M.HS. Desh-mesh Nagar Jammu	B.V.M.H.S Udhampur Topic : Water Develop-ment	B.V.M.S. Hiranagar Topic : Earth Quake Warning system	B.V.M.H.S. Udhampur Topic : Farmers Friendly Science Tech.	B.V.M.H.S Deshmesh Nagar Jammu	B.V.M.S. Hira-nagar	B.V.M.H.S. Udha-mpur
2	Bal Verg	B.V.M.H.S. Ramban	B.V.M.HS Udha-mpur	B.V.M.HS Thathi. (Udha-mpur)	B.V.M.S. Hira-nagar Topic : Wind Mills	B.V.M.H.S Udh-ampur Topic : Waste manage-ment	B.V.M.S Bharda-rwah Topic : Electric Magnetic Current	B.V.M.S Thathi. (Udha-mpur)	B.V.M.S Bhard-arwah	B.V.M.H.S. Udha-mpur
3	Shishu Verg	B.V.M.S Samba	B.V.M.S Bharda-rwah	B.V.M.S Jammu	B.V.M.S. Hira-nagar Topic : Pollution free from environ-ment	B.V.M.S. Samba Topic : Ideal House	B.V.M.S Bharda-rwah & B.V.M.S. Jammu Topic : Ideal House	B.V.M.S Thathi. (Udha-mpur)	B.V.M.S Jammu	B.V.M.S Samba

State Level Vigyan Pramukh
Sh. P.S. Thakur Principal
B.V.M.H. School Ramban

क्षेत्रीय खेलकूद 2006–07

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

विद्या भारती के खिलाड़ियों का भव्य प्रदर्शन

19 वें राष्ट्रीय खेलकूद समारोह में पारम्परिक ढंग से स्वागत करती हुईं विद्या भारती की बहनें।

गत वर्ष विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा पंजाब के फाज़िल्का में 25 से 27 अक्तूबर तक आयोजित क्षेत्रीय खेलकूद (समूह खेले) कबड्डी तथा खो–खो की प्रतियोगिताओं में भारतीय विद्या मन्दिरों की चार टीमों :– खो–खो शिशु बहनें, बाल भैया कबड्डी, बाल भैया खो–खो तथा किशोर भैया खो–खो ने भाग लिया। इनमें किश्तवाड़ उच्च विद्यालय से 18 भैया, 2 आचार्य, उधमपुर से 6 बहनें – 3 भैया, रियासी से 2 भैया, थाथी से 2 भैया तथा उधमपुर से एक आचार्य थे। कुल 34 भैया–बहिनें एवं चार आचार्य इन प्रतियोगिताओं में सहभागी रहे। **शिशु खो–खो टीम एवं बाल भैया कबड्डी टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।** पूरा दल भारतीय विद्या मन्दिर भद्रवाह के खेल आचार्य अमित की देखरेख में भेजा गया था।

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा कुरुक्षेत्र में आयोजित एथलेटिक्स प्रतियोगिता में जम्मू–कश्मीर से 30 खिलाड़ी भैया–बहिनों एवं 6 आचार्यों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम श्रीमद्भगवद् गीता विद्यालय कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुआ। ब्योरा निम्न है :

विद्या मन्दिर किश्तवाड़	6	आचार्य	1
विद्या मन्दिर रामबन	6	आचार्य	1
विद्या मन्दिर उधमपुर	9	आचार्य	2
विद्या मन्दिर थाथी	6	आचार्य	1
विद्या मन्दिर अंबफला	1	आचार्य	1
विद्या मन्दिर दशमेश नगर	2		

शिशु वर्ग में 4 भैया, 4 बहिनें, बाल वर्ग में 4 भैया, 3 बहिनें, किशोर वर्ग में 10 भैया 5 बहिनें तथा

3 आचार्य एवं 3 दीदियां भी साथ रहीं।

इस प्रतियोगिता में जम्मू-कश्मीर प्रांत ने 19 पदक प्राप्त किये, जिनमें 4 स्वर्ण, 7 रजत एवं 8 कांस्य पदक थे।

भारतीय विद्या मन्दिर थाथी के अनिल सिंह ने एक स्वर्ण और 3 रजत पदक जीते। भारतीय विद्या मन्दिर किश्तवाड़ के भैया अजय ने 3 स्वर्ण पदक जीते और सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार भी प्राप्त किया।

शिशु वर्ग में तृतीय स्थान अपने प्रान्त को प्राप्त हुआ। सभी खिलाड़ियों एवं आचार्यों का दल प्रान्त शारीरिक प्रमुख श्री समीर सपरू की देखरेख में भेजा गया था। सभी खिलाड़ी एवं आचार्यों का कुरुक्षेत्र के प्रमुख स्थानों के दर्शन भी कराए गए।

प्रस्तुति : समीर कृष्ण सप्रू
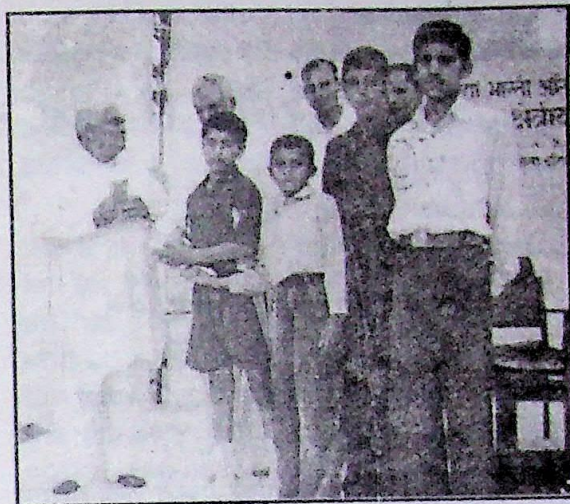
फाजिल्का (पंजाब) में उत्तर क्षेत्र खेलकूद समारोह में पुरस्कृत भारतीय विद्या मंदिर थाथी के भैया अनिल, विक्रम, मनदीप एवं अम्बफला जम्मू के प्रशोत्तम सिंह। उनका मनोबल बढाते हुए पंजाब के संगठन मंत्री मा. सुरेन्द्र अत्री तथा हरियाणा के संगठन मंत्री श्री हर्ष कुमार जी।

हमारे आचार्य

... कश्मीर से जब नागदेवता सरुड़ पहुंचे

बंसी लाल
प्रधानाचार्य, भा.वि.म. सलाना

"ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप तेरु
शेष नागे प्रणाम मेरू,
राम कृष्ण दुयो बालक आसे–पासे
करते आऊँ अरदासे।।"

बिमल नाग सरूड़ में एक प्रसिद्ध तथा प्राचीन मंदिर है। यह पत्थर का बना भव्य मन्दिर है। मंदिर के नीचे से पवित्र जल की धारा बहती है। आगे एक सुन्दर तालाब है। मूर्ति भव्य और सुन्दर है तथा पत्थर की बनीं है। मूर्ति में शेषनाग तथा दोनों ओर राम तथा कृष्ण की मूर्तियाँ हैं। धनुष तथा बाँसुरी उनके हाथ में हैं।

इलाका सरुड़ के कँवार नाम ग्राम से उनके पूर्वज नमक लाने कश्मीर गए थे। वापसी पर खलडू (भेड़–बकरी की खाल से बना थैला) जिसमें नमक था, भारी लगने लगा। जब उसे खोल कर देखा गया तो उसमें एक काला पत्थर था। जिस व्यक्ति के खलडू से यह पत्थर निकला, उसने पत्थर वहीं छोड़ दिया। वह व्यक्ति अपना बोझ लेकर आगे चला। परन्तु बोझ फिर भारी लगने लगा। बोझ खोलने पर वह पत्थर फिर निकला, फिर पत्थर फेंका गया, परन्तु हर बार पत्थर उसी व्यक्ति के बोझ से निकलता गया।

द्रानशाला नामक स्थान पर पहुंचने पर जब पत्थर उस बोझ से निकला तो वह पत्थर साँप बन गया। वह सांप आगे चल पड़ा। वह व्यक्ति जब धार में पहुँचा तो वहाँ फिर उसी सांप के दर्शन हुए। सांप फिर लुप्त हो गया। आगे चल कर वह सांप द्वापत असर नाग तथा खनोई धार में पहुँचा। वहाँ उस साँप ने हापत नाग से बैठने के लिए जगह माँगी तो हापत नाग ने जगह नहीं दी। वहाँ से यह साँप (नाग) दुखी हो कर रोने लगा तथा आगे चल पड़ा। कहते हैं कि रास्ते में रोते हुए उस नाग के आँसू जहाँ–जहाँ पर गिरे वहाँ पानी के चश्में फूट पड़े, जो आज भी विद्यमान हैं। आगे चल कर वह नाग देवता सरत स्थान पर पहुँचा। उसे वह जगह पसंद आई और उसने अपना निवास स्थान वहीं पर बनाया।

रात को उस व्यक्ति को सपने में नाग ने दर्शन दिये और कहा कि "तुरन्त निर्धारित स्थान पर पहुँचो और मेरी पूजा करो।" प्रातः जब वह व्यक्ति उस स्थान पर पहुँचा तो वहाँ पुनः नाग के दर्शन हुए। नाग ने यह भी कहा कि मेरा भवन बनाने वाला कारीगर कश्मीर से आएगा। उसके बाद सचमुच में कश्मीर से एक कारीगर पहुँचा और वहाँ पत्थर का एक सुन्दर और भव्य मंदिर बनाया। इसी जगह का नाम बिमलनाग पड़ा। उसके बाद श्रीनगर से दो साधु इस नाग का पीछा करते हुए वहाँ पहुंचे। दोनों साधुओं ने इस नाग को वश में करने के लिए मंत्रोच्चारण प्रारम्भ किया। जब साँप के शरीर का ढेर बाहर तालाब में गया तो साधु आपस में पूछने

लगे कि अभी साँप कितना बड़ा है तो आवाज़ आई कि अभी में डोगढ़ (कड़छी) के बाराबर हूँ तो इससे साधुओं का ध्यान भंग हो गया। साँप गायब हो गया और वह साधू वहीं शापित होकर पत्थर की मूर्ति बन गए। अभी भी वह तालाब में पत्थर के रूप में विद्यमान हैं।

विशेष

नाग देवता का मूल थड़ा (निवास) पुजारी के घर में हैं। पुजारी का नाम बिहारी लाल शर्मा है जो कँवार नाम के गाँव में रहते हैं। पुजारी के घर में नाग देवता का मुकुट, छत्र (जो चाँदी का है), सोने का टीका और एक गड़वा (साँप की शक्ल का) पुजारी के घर में मौजूद है।

साल में तीन बार नाग का श्रृंगार इन भूषणों से किया जाता हैं, ये तिथियाँ हैं –

1. बैशाखी 2. नाग पंचमी तथा 3. मघहर पूर्णिमा। मघहर मास तक देवता अभी भी किसी–किसी को साँप के रूप में दर्शन देता है और सर्दियों में लुप्त रहता है। बिमल नाग में मंदिर के आस–पास रमणीक स्थान है। मंदिर के साथ एक बड़ा मैदान है। मैदान के बीच में जल की धारा बहती है जो देखने में बहुत सुन्दर लगती है। वर्तमान में यहाँ श्रद्धालु दर्शन करने के लिए आते हैं।

(पुजारी बिहारी लाल द्वारा कही गई कथा पर आधृत)

PUNCTUALITY

P.S. Thakur, Principal
BVM High School Ramban

Punctuality is a very good habit. It does pay to one who observes it. One who is regular and punctual is always successful in life. He knows the value of time. He knows that time is precious. If you value time, time will value you. It will never deceive you. It will give you an advantage over others who are not regular and punctual who are late just by a few minutes.

Such people ask themselves that there is still time. There are few minutes left for the train to go. Let them do this or do that. They always look at the clock again and again and feel sorry when they miss the bus. It is because of their not valuing the time they are losers. A student who observes time is called a punctual student. He is loved and liked by all. He quite often gets a reward for his punctuality. It is duty of all of us to observe the punctuality. Make it is life long habit, you will certainly outshine others.

TEACHING OF SWAMI VIVEKANAND A GREAT HINDU SAINT

Capt (Retd.) V.P. Sharma
Principal, Gandharav BVM Pargwal

India is a poor country. It is a land of multi-religious and numerous saints. Many Hindu and Muslim Sufi Saints have born here. Swamiji was much worried about the condition and poverty stricken state of people of our country. He accused all educated Indians for illetracy and worst condition of working classes. He termed it as a big curse on the part of educated true citizens.

If we wanted to develop we have to promote mass education and uplift the poor trodden classes. According to Swami

Ji, "Education to distressed classes and good services for the humanity is the sole way of worshiping God.

Man is the incarnation of God. It requires realisation. By means of education we can help the people for creating determination, creativeness, socialization and promoting brotherhoddness among the people.

Whenever, there will be a complete light over the darkness of illetracy and hatredness, India will be a progressive and defendable country in the world.

संस्कृतम् भाषाणां जननी

– चिन्तन शर्मा, संस्कृत आचार्या
भा.वि.मं, थाथी

अस्माकं देशस्य नाम भारतवर्षम्। एषः एकः बहुभाषी देशः अस्ति। प्राचीन काले अस्य देशस्य भाषा संस्कृतम् एवं आसीत्। संस्कृत भाषा भारतीय भाषाणां जननी अस्ति। यत् संस्कृतम् केवल भाषा नास्ति, अपितु विद्या अस्ति देवता अस्ति, सर्वधनम प्रधानम् अस्ति। एषा संस्कृतम विद्या सद्बुद्धि विनम्रता पात्रता इत्यादिकम् ददाति यथा लिखितम् अपि अस्ति।

"विद्या ददाति विनयं, विनायद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वात्व धनमाप्नोति धनाद्धर्मः स्ततः सुखम्।।"

इताऽपि संस्कृतम् विद्या अनुशासनम् शिक्षयति, नीतिं कर्त्तव्यं सदाचाराधिकम् च बोधयति यः कोऽपि ऐतेषाम् पालन करोति तस्य आयुः बर्धते शक्तिः च वर्धते उक्तम् अपि अस्ति :–

**"अभिवादनशीलस्य नित्यमवृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धते, अयुर्विद्या यशोबलम्।।"**

संस्कृतम् केवल कर्मकाण्ड सम्पादनाय नाऽस्ति अपितु मानव जीवनं सफली कुर्तुम् उत्तम साधनम् संस्कृतम् अस्ति। जन्मते आरभ्य मरणं पर्यन्त उत्तमैः सस्कारैः जीवन संस्करोति अलङ्करोति भूषयाति तस्य नाम संस्कृतम् अस्ति अतः वयं एकीभयं संस्कृतम् पठामः लिखामः वदामः तस्य प्रचारं च कुर्मः।

संस्कृतम् भारतीय संस्कृते पोषकम् अस्ति। अतः एवं सुष्ठु खलु उच्यते –

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्था। इति।

समाज निर्माण में आचार्यों की भूमिका

नीतन शर्मा, आचार्या
भा.वि.मं, उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

एक आचार्य का यह कर्त्तव्य है कि वह विषयों के ज्ञान के साथ–साथ विद्यार्थियों को समाज की परिस्थितियों से भी परिचित करायें। विद्यालय के विद्यार्थी ही आगे चलकर समाज का एक महत्वपूर्ण अंग होंगे। अतः एक ऐसा व्यक्ति जिसमें स्वार्थ न हो, शिष्ट एवं सभ्य हो, जिसमें राष्ट्र भक्ति हो, वह ही एक अच्छे एवं मज़बूत समाज की नींव रख सकता है। एक मज़बूत एवं संगठित समाज ही एक मज़बूत राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। अतः एक मज़बूत समाज का निर्माण करने में आचार्यों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। अब प्रश्न उठता है क्या आचार्य समाज द्वारा सौंपे गए इस उत्तरदायित्व को पूर्ण लग्न निष्ठा एवं निस्वार्थ भाव से निभा पा रहे हैं या नहीं ? यदि हां तो फिर समाज की ऐसी स्थिति क्यों है, क्यों आज एक आचार्य को वह सम्मान नहीं

मिल पा रहा, जिसे उसने खो दिया है। यदि नहीं तो फिर यह एक विचार करने योग्य विषय है।

हमारे वर्तमान महामहिम राष्ट्रपति जी से जब यह प्रश्न पूछा गया कि अपना कार्यकाल समाप्त हो जाने के बाद वह पुनः राष्ट्रपति बनना पसंद करेंगे अथवा नहीं ? तो उनका उत्तर था कि राष्ट्रपति बनने से वह एक अध्यापक बनना पसंद करेंगे। आज भी आचार्य पद का सम्मान करने वाले व्यक्तियों की कमी नहीं है। यदि विचार करें तो हम पाते हैं कि आचार्य पद की गरिमा को ठेस पहुँचाने वाले शायद स्वयं आचार्य ही हैं। एक आचार्य को अत्याधिक सहनशील होना चाहिए। उसका व्यवहार स्वंय ऐसा हो जिसकी अपेक्षा वह विद्यार्थियों से रखता है। समय पर विद्यालय आना, विद्यार्थियों से प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा मृदुल भाषा का प्रयोग करना, अपने अनुभवों का सदुपयोग करना न कि दूसरों को अनुभवहीन समझना–ये सभी गुण एक आचार्य में होने चाहिए। अनुभव तो यह बताता है कि अनेक बातें तो विद्यार्थियों से भी सीखने को मिलती है।

हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या हम समाज को ठीक शिक्षा दे पा रहे हैं? क्या हम सुदृढ़ सुसंस्कृत, सभ्य एवं राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत समाज का निर्माण करने में अपना योगदान ठीक प्रकार से कर पा रहे हैं अथवा नहीं ? एक आचार्य को विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। कारण कि आज का आदर्श विद्यार्थी कल का आदर्श नागरिक होगा। ऐसे नागरिकों से ही एक संगठित समाज, एक सुदृढ़ राष्ट्र एवं शांतिमय विश्व की कल्पना की जा सकती है।

गुरु की महिमा

रेणु, आचार्या
भाविमं उधमपुर.

गुरु ज्ञान के बिना जीवन निरर्थक है क्योंकि गुरु के माध्यम से ही बच्चे सच्चे पथ की ओर अग्रसर हो सकते हैं। ईश्वर मिलन का यही एक मात्र साधन है। जब तक सच्चे गुरु की शरण नहीं ली जाती तब तक प्रभु मिलन की बात केवल कल्पना मात्र ही है।

गुरु की महिमा का बखान करते हुए कहा गया है :

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः।
गुरुदेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अर्थात गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, और गुरु ही शंकर है। संसार में उत्पन, पालन और शान्त करने वाली तीनों शक्तियां गुरु में ही होती हैं। तब फिर गुरु से अधिक कल्याण करने वाला संसार में और कौन हो सकता है। गुरु हमें अज्ञान के गहरे अन्धकार क्षेत्र से निकाल कर ज्ञान के प्रकाश में पहुँचा देता है, जिससे हम सत्य, झूठ की पहचान कर सकते हैं।

महाकवि तुलसीदास को भी कहना पड़ा कि चाहे ब्रह्मा और शंकर जैसे महाज्ञानी भी क्यों न हों परन्तु बिना गुरु के माया जाल से कोई पार नहीं करा सकता।

"बिनु गुरु भवनिधि तरई न कोई"

गुरु के बिना न ज्ञान है न भक्ति। गुरु ज्ञान का दाता है और भक्ति का आधार है। गुरु को परमात्मा से भी श्रेष्ठ माना है। गुरु में दो स्वरूप परमात्मा से अधिक है। परमात्मा के तीन स्वरूप हैं

तो गुरू में पाँच। हरिज्ञान स्वरूप (सत्), प्रेम स्वरूप (चित्) और आनन्द स्वरूप (आनन्द) है। परन्तु गुरु में इन तीनों के अतिरिक्त दो और भी हैं, वह है नाम और रूप। इन दोनों रूप के कारण उसको देख सकते हैं, स्पर्श कर सकते हैं, उसकी बात भी सुन सकते हैं, तभी कहा गया है :

ध्यान मूलं गुरोमुर्तिः पुजा मूलं गुरोपदं।
मन्त्र मूलं गुरुवाक्यं, मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।।

अर्थात, ध्यान का मूल गुरु है, गुरु का ध्यान करो। पूजा का मूल गुरु चरण है, गुरु चरणों की पुजा करो। मन्त्र मूल गुरु वचन है, गुरु के वचनों की पालना करो। मोक्ष मूल गुरु कृपा है अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करना है तो गुरु कृपा को प्रात करो।

वास्तव में जिन्हें परमात्मा से मिलाने वाला सच्चा गुरु मिला है उनका जीवन सफल है और उनसे भाग्यशाली इस संसार में कौन हो सकता है। विद्यार्थियों के लिए उनके गुरु शिक्षक हैं, जो उन्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र प्रदान करते हैं आवश्यकता है गुरु की महिमा को समझने की। जो गुरु–शिष्य का नाता है, वही शिक्षक और विद्यार्थी का भी है। इस पावन सम्बन्ध को और पुनीत करने की आवश्यकता है।

नकली हंसी

श्वेता प्रसाद, आचार्या
भा. वि. मंदिर अम्बफला

नकली हंसी चेहरे पर सजाते नहीं हैं हम,
रिश्ते जबरदस्ती के निभाते नहीं हैं हम।
लोगों को अपना दर्द बताने के वास्ते,
पानी के भाव अश्क बहाते नहीं हैं हम।
गुरबत में चाहे मिट जाएं पूरी तरह से ही,
गर्दन किसी सूरत में झुकाते नहीं हैं हम।
जलती हुई आग में कभी घी डाला नहीं हमने,
बातों से कभी आग लगाते नहीं हैं हम।
चक्कर में फंसा कर हमें रखते हैं सदा जो,
उनको भी गलत राह दिखाते नहीं हैं हम।

रोशनी का मतलब

बात अच्छी है तो उसकी हर जगह चर्चा करो,
है बुरी तो दिल में रखो, फिर उसे अच्छा करो।
रोशनी करने का मतलब ये नहीं होता कि तुम,
जिसको पर्दा चाहिए उसको भी बेपर्दा करो।
वो नदी है, जब चाहेगी डुबो देगी तुम्हें,
जिन्दगी को राह में, मत इस तरह रोका करो।
फूल जब तोड़ा गया तो उसने सबसे ये कहा,
सबको खुशबु बांटकर, मेरी तरह टूटा करो।
छांव का मतलब समझने के लिए तुम भी,
चार पल तो जिन्दगी की धूप में बैठा करो।

भारतीय विद्या मंदिर

साक्षी शर्मा, आचार्या
भा. वि. मंदिर उधमपुर

भारतीय विद्या मंदिर स्कूल ....
है यह कमल का फूल
हम सब मिलकर इसे स्वर्ग बनाएंगे
सब विद्यालयों से इसे आगे पहुचाएंगे
बच्चे तो हैं स्कूल की पहचान
जो बढ़ाते हैं स्कूल की शान
स्कूल से पाते हैं वह ज्ञान

अध्यापक देते हैं ध्यान
हमारे स्कूल में बच्चों ने ऐसे संस्कार पाए हैं
जिसके गुण दूर–दूर तक सब लोगों न गाए हैं।
इसलिए तो देश में 28 हजार मन्दिर बनाए हैं।
भारतीय विद्या मंदिर तो सारे भारत पर छाया है
इसलिए तो हर जगह प्रथम स्थान पाया है।

देश से मेरे आए पंछी

बसन्ती रैणा, आचार्या
भा. वि. मंदिर तालाब तिल्लो

विशाल तालाब के किनारे बैठा था
यहाँ कहते हैं इसे "झील"
झुंड में चहकते आए पंछी उस दिन,
मधुर तोतली बोली में बोले,
याद नहीं आती निर्वासन में अपने देश की,
जिस माटी पर तुम्हारा जन्म हुआ।
बोली सुरीली थी, मन को मोह लेने वाली थी,
देश से मेरे आए पंछी।
भाषा मेरी मां की थी, मेरे देश की थी।
सब पंछी एक साथ रुदन स्वर में बोले,
याद करो अपने देश की, जहाँ की
माटी की खुशबू तुम्हारे सीने से अब भी आती है।
याद नहीं आती निर्वासन में अपने देश की,
जहाँ खिलते हैं सैकड़ों रंग–बिरंगे फूल
मुगल बागानों की क्यारियों में
झरने चश्में शाही व अहरबल की पहाड़ियों में।
जहाँ की हरियाली, बादाम के शागूफे व
चिनार का हर पत्ता मन को लुभाता है।

ज्ञान गंगा

बन्धना गुप्ता, आचार्या
भा.वि.म. उच्च विद्यालय, रामबन

1. समय का सदुपयोग ही जीवन का सही मुल्यांकन है – **पुष्कर लाल केडिया**
2. समझदार व्यक्ति समय के अनुसार अपने आपको डाल लेते हैं जबकि स्वाभिमानी व्यक्ति स्वयं के अनुसार समय को ढालने का प्रयास करते हैं। – **स्वामी सच्चिदानन्द**
3. बिना कोशिश किये यह मान लेना कि हमें आता है, ठीक नहीं होता है। अपनी क्षमताओं का परीक्षण करना ही सीखने का अच्छा तरीका है। **–अरस्तु**
4. प्रेम से ही सृष्टि का जन्म होता है और प्रेम से ही उसकी व्यवस्था होती है, और अंत में प्रेम में ही वह विलीन हो जाता है। **–रविन्द्र नाथ ठाकुर**

MEDITATION

Parshotam Kumari, Teacher
BVM Thathi

The world is full of problems and complexities where everybody want to come up by all means. There is no time to stand and store the beauty of nature. Our life suffers from different kinds of problems. We have to prepare the most challenging exam of our career. All these tough times

bring a lot of tension, creating a sense of disturbance. This is an age when our attnetion and cocentration is also diverted by different T.V. Channels and our hobbies. If we want to keep pace with this competitive life we must practice meditation everyday. Meditation means an act of concentration and a sense of thoughtlessness. It takes us away from every days worry and keep us in cheerful conditions. If your mind is controlled then our energy will be utilised in positive direction.

Tension means diversion of attention and meditation means controlling and guiding concentration. If we practice it in the form of 'Yoga' it will provide both physical and mental health. So, practice and profit by it.

If You Want

Sapna, Teacher
BVM Talab Tillo

If you want to avoid,
Avoid bad company.
If you want to serve,
Serve humanity
If you want to save,
Save Time.
If you want to earn,
Earn true friends.
If you want to kill,
Kill bad habits.
If you want to give,
Give Love to all.
If you want to wear,
Wear goodness.
If you want to help,
Help the poor.
If you want to speak,
Speak the truth.

India As I See

Anrudha Verma, Teacher
BVM Thathi

Ooty for beauty
Bengal for writing
Andra for cooking
Haryana for wealth
Kerala for learning
Maharashtra for working
Nagaland for dancing
Madras for worshipping
Karnatka for temples
Rajasthan for camels
Ajanta for caves
Nicobar for slaves
Uttar Pradesh for rivers
Mysore for flowers
Goa for beaching
Mumbai for earning
So East or West
India is the best

Thoughts That Can Change Your Life For Sure

Rakesh Sharma, Computer Instructor
(BVM High School Hiranagar)

✈ Don't undermine your worth by comparing yourself with others. It is

because we are different that each of us is special

- Do not waste time learning the tricks of the trade, instead learn the trade.
- Nothing is impossible as impossible itself says "I,m, Possible".
- Only difference between running and running the business only is "I".
- What we are is God's gift to us, What we become is our gift to God.
- It is not enough to be busy. The question is, What are you busy about.
- Do not look back. Someone may be gaining on you.
- If you are not making mistakes, you are not trying hard enough.
- Successful people don't do different things, they just do things differently.
- A person with big dreams is more powerful than one with all the facts.
- Effectiveness — Doing right things. Efficiency is doing things rightly.
- You can, If you can.
- Starve the problems, feed the opportunities.

Seven Qualities of a Student

Shivani Bharti, Teacher
BVM High School Udhampur

The word 'student' is composed of seven letters. Each letter stands for a good quality, which every student should possess.

S Stand for **'Sincerity'** -
Every student should be sincere in his/her words and actions.

T stand for **'Truthfulness'** -
Every student should be truthful as truth is the other form of God.

U Stand for **'Usefulness'**-
Students ought to be a helping hand to one another.

D Stand for **'Dutifulness'**-
Every student should be dutiful and responsible towards parents teachers and his/her country men.

E Stand for **'Exertion'** -
Student ought to give more than his/her best while doing any work.

N Stand for **'Nationalism'** - A student should be proud of her/his national heritage and have patriotism in her/his thoughts and actions.

T Stand for **'Time Keeping'** -
Time keeping here implies punctuality. A student ought to do planning in his/her assignments

A Mathematical Letter

Vijay Sharma, Teacher
BVM High School Udhampur

33 Hexagonal Block,
Pentagon Center,
Geometry,
Respected Father Rectangle

I am quite well. How is brother Rhombus and Sister circle ? I am weak in mathematics and so I take help from my friend quadrilateral who is a good mathematician. Yesterday uncle parallogram and aunt sphere came to meet me. their daughter triangle also happened to meet aunti's brother compass.

Rest is fine Pay regards to mother sphere.

Yours loving cone,
100 cylinderical
Algebra

TEACHER

Mohani Gupta, Teacher
BVM High School Udhampur

T = Truthful
E = Energetic
A = Amicable
C = Caring
H = Hilarious
E = Extraordinary
R = Revolutionary

Teaching is one of the most respected professions. A teacher is the maker of the society in the real sense. He is a perfect guide for the new generation. The inspiration, confidence, truth, honesty kindness, love, devotion, faith, sincerity trust, brotherhood, tolerance, obedience fearlessness are some of the qualities which only a teacher can inculcate through his treasure of wisdom knowledge and experience among the curious followers.

TIME

Rajinder Singh, Teacher
BVM High School Udhampur

- To understand importance of **one year.**
  Ask a Student who failed in examination
- To understand importance of **one month.**
  Ask a Mother who gave birth to premature baby.
- To understand importance of **one day.**
  Ask an Editor of daily newspaper.
- To understand importance of time.
  Don't waste it.........
  ....Yes, Time is precious.

THE AMAZING FACTS

Meena Ticku, Teacher
BVM Talab Tillo, Jammu

1. The sun is orbiting the center of the milky way at a rate of about 220 km per second.
2. The great white shark can smell one drop of human blood in 100 million drops of water.
3. The earth is orbiting the sun at more than 107,000 km/hr. but we feel as if we are standing still.

माँ

पहले जन्म देकर माँ ने कष्ट में हमको पाला।
रात जगा रहकर गोद में हमको सम्भाला।।
पावन हाथों से माँ ने बचपन में खिलाया,
खुद गीले में सोकर हमें सूखे में सुलाया।
गलती पर माँ ने हमें बार–बार है डाँटा,
फिर भी न माने जब तो मारती थी एक चाँटा।
बच्चें का दर्द माँ के बिना समझ सकता है कौन,
माँ का अर्थ बच्चे के बिना समझ सका है कौन।
करे जो अपमान माँ का वह इन्सान नहीं,
भूल जाएँ हम माँ को यह आसान नहीं।

– अमित कुमार पाधा, आचार्य
भारतीय विद्या मंदिर सरतेंगल भद्रवाह

जिला डोडा

भारतीय विद्या मंदिर, किश्तवाड़

दसवीं कक्षा के उल्लेखनीय परिणाम : सत्र २००६-२००७

कुल परिणाम प्रतिशत – 94

वरूण शर्मा
विज्ञान में – 97 प्रतिशत

कुल परीक्षार्थी - 162
उत्तीर्ण - 152
पदक - 32
प्रथम स्थान - 62

सुरभि शर्मा
गणित में – 100 प्रतिशत

आठवीं कक्षा के उज्जवल सितारे : सत्र २००६-२००७

अधिकतम अंक : 250

नाम	मेरिट	
१. अपूर्वा शर्मा	प्रथम श्रेणी	244
२. शारदा शर्मा	छठी	239
३. दिव्या शर्मा	सातवीं	238
४. काजल परिहार	नवीं	236
५. यामिनी गुप्ता	ग्यारहवीं	234
६. रुचिका शर्मा	तेरहवीं	232
७. पूजा	तेरहवीं	232
८. सुधीर राना	तेरहवीं	232
९. आदर्श कांत	तेरहवीं	232
१०. रोहिणी शर्मा	अठारहवीं	227
११. अर्जुन सिंह	अठारहवीं	227
१२. राहुल सिंह	उन्नीसवीं	226

बाल रवियों की रचनाएं

मेरा बचपन

याद हैं हमें वह दिन
नानी के पड़ोस में जब खेला करते थे हम
याद है हमें वह बचपन
जिसे आज हम खोज
रहे हैं
दादी के आंचल तले
ममी, पापा की डाँट से
कई बार रोए हैं हम
भुलाए भूलते नहीं साथी
जिन्हें आज खोज रहे हैं हम
इस मैदान में
जहां रोज़ लड़ते थे हम
न ईर्ष्या, न तो द्वेष था
सीधे–साधे भोल–भाले।
आज गम में डूब गए हैं हम
चार बरस पहले लगता था
सारा जग अपना
आज अकेले रह गए हैं हम।
छाई है हर तरफ लड़ाई और जलन
आतंक के साये में असुरक्षित जीवन
केवल बचपन की मीठी यादों तले
जी रहें है हम,

– पूजा देवी, दसवीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय किश्तवाड़

विद्या

विद्या वह धन है,
जितना बांटो उतना कम है।
विद्या वह लग्न है,
जिसमें तपस्वी भी
मग्न है।
सुख भी उनको ही
मिले,
जो विद्या को ग्रहण करे।
विद्या का जो करे सम्मान,
उसे मिले अच्छा वरदान।
जो इसका करे अपमान,
उसका जीवन बनें वीरान।

– यामिनी गुप्ता, 8वीं
भारतीय विद्या मंदिर उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

विद्यालय

विद्यालय जो हमें सिखलाता
पढ़ने की राह दिखलाता
रोज़ विद्यालय जो आते हैं
अपना नाम कमाते हैं।
सबको ज्ञान हो जाता है
यही अपना घर कहलाता है।

– नितु शान, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

ज्ञान की महिमा

नाम करो इस देश का बच्चो!
काम तुम्हारे आयेगा।
मेहनत करके देखो बच्चो!

मीठा फल तुम खायेगा!
इस दुनिया में जीना है तो
टीचर को अपना जानो तुम।
गुरु बिना है ज्ञान अधूरा
बात यह मेरी मानो तुम।

ज्ञान बिना है जीवन अधूरा
तुम सुन कर चिड़ जाओगे।
पर मैं सच कहती हूँ बच्चो!
अपना नाम कमाओगे।

– मंजू आर्यन, 9वीं

भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

कितना सुंदर, कितना प्यारा
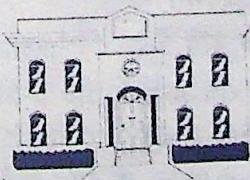
कितना सुंदर कितना
प्यारा,
उत्साहित विद्यालय
हमारा।
कई धर्म/पंथ के बंधु
शिक्षा यहां पाते हैं
समरसता की शिक्षा देकर
सभी को गले लगाते हैं।

– महेश्वरी शर्मा, 9वीं

भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

मेरा हिन्दुस्तान

हरा–भरा हिन्दुस्तान सारा
प्यारा–प्यारा देश हमारा
वीरों ने आन्दोलन चलाया
संघर्ष का पथ दिखलाया

– ललता शर्मा, 9वीं

भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

अनोखा पेड़

एक बाग में देखा मैंने।
एक अनोखा पेड़ लगा।।
केक, चाकलेट, फूल उसमें।
टॉफी का था ढेर लगा।।
आईस्क्रीम थी प्यारी–प्यारी।
बिस्कूट भी था क्रीम भरा।
खाया मैंने जल्दी–जल्दी।
मुझको भी आ गया मज़ा।

– हिमांशु शर्मा, 7वीं

भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

आम फलों का राजा

आम फलों का है राजा।
सस्ता मीठा और ताज़ा।।
गर्मी के फलों का सिरमौर।
खा के नाच उठे मनमोर।।
देसी माल्टा और सहारनपुरी।।
इससे मत रखो तुम दूरी,
इससे होगी निरोगी काया।
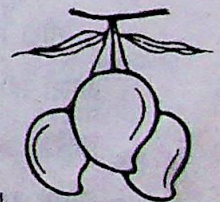
घर में आए सुख की माया।।
विटामिन–'ए' का है भण्डार।
इसको खाओ बारम्बार।।

आशीष शर्मा, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

धरती

सुंदर कितने नज़ारे हैं
चारों ओर हरियाली है
कितनी सुंदर दुनिया है
धरती कितनी प्यारी है

रोहिणी शर्मा, 8वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

बारिश आई

बारिश आई, बारिश आई,
अपने संग बूँदे भी लाई।।
टप–टप–टप–टप।
रिमझिम–रिमझिम।।
शोर मचाती बारिश आई।
मोटे मोटे दूध जैसे।।
ओलों की बरसात भी आई।
बारिश आई, बारिश आई।।
अपने संग बूँदे भी लाई।।

-- श्रेयस गुप्ता, 7वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

पानी बचाओ

पानी है अमूल्य खज़ाना
इसकी रक्षा सबको बताना
जीवित रहते इसे प्राणी
जल ही जीवन और जिन्दगानी
पानी का करना सदुपयोग
इस का न करना दुरुपयोग।
पानी को बचा के रखना
पानी है अमूल्य खज़ाना।
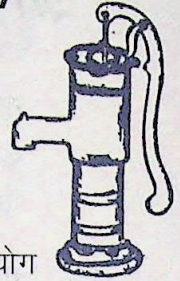
– शिखा शर्मा, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

टूटता विश्वास

देखता हूँ नित आस पास टूटता विश्वास
बन रहा मानव, वासना का दास।
बन रहा मानव, वासना का दास
भावनाएं हुई कुरूप,
बदले प्रेम के रूप,
रचता हुआ रास,
देखता हूँ नित आस–पास।
निज आदर्श हुए भंग,
छूटे मित्रों के संग,
मानवता का हो रहा ह्रास,
देखता हूँ नित आस–पास।
पुराणों की वाणी
हो चुकी है पुरानी,
न सत्य का है पास
देखता हूँ नित आस पास
टूटता विश्वास
बन रहा मानव, वासना का दास

धर्मराज अधीर, द्रौपदी का चीर,
राम वनवास,
देखता हूँ नित आस–पास

— नितिश 'कमल', पूर्व छात्र
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

बेटियाँ

बोए जाते हैं बेटे,
उग जाती हैं बेटियाँ
खाद–पानी बेटों में,
लहलहाती हैं बेटियाँ
ऐवरेस्ट पर ठेले जाते हैं बेटे
चढ़ जाती है बेटियाँ,
पढाए जाते हैं बेटे,
पढ़ जाती हैं बेटियाँ
गिरा देते हैं बेटे,
उठा लेती हैं बेटियाँ
कुछ भी कहो बेटों से अच्छी होती हैं
बेटियाँ।

— नेहा भारती, 10वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

बेटियाँ–दो

बेटियां ही लक्ष्मी हैं सुख समृद्धि हैं घर परिवार की
बिना बेटियों के कैसे गति चलेगी संसार की
बेटियों का सम्मान करो, न ठुकरायी जाएं।
पैदा होने से पहले न मारी जाएं।
वही भाग्य खुलेगा, जहाँ बेटी होगी।
बेटों की तरह बेटियों को भी पढ़ाया जाए।

— निलाकशी, 8वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

माँ

माँ की ममता बड़ी न्यारी।
माँ बच्चों की बहुत ही प्यारी।।
माँ का शब्द कितना प्यारा।
माँ ही है बच्चो का सहारा।।
माँ की याद सताती जिसको।
सुबह शाम रुलाती उसको।
सच्ची सेवा जो करते हैं
किसी से नहीं डरते हैं

नीरज सिंह, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड

माँ मेरी नज़र में

माँ! क्या होती है यह समझाना मुश्किल है। यह ऐसा शब्द है जिसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती। माँ हमें सब कुछ देती है। माँ को दुःख देना ईश्वर को दुख देने के सम्मान हैं।

माँ अपने बच्चों के लिए हमेशा सपना देखती है। बच्चों का यही कर्तव्य है, वह इस सपने को पूरा करें।

मानसी गुप्ता, 7वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

मज़दूर

दुनिया की इमारतें बनाने में
खून पसीना बहाया जिसने,
फिर भी है वह उनसे दूर,
वह है एक मज़दूर।
सबसे ज़्यादा वह करता
काम,

फिर भी न कोई लेता नाम,
होता क्या है उसका कसूर,
वह है एक मज़दूर
दुख में जिसके बस भगवान,
घर की छत, खुला आसमान,
सपने होते चकनाचूर
वह है एक मज़दूर।

— जीवन–ज्योति, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

गरीबी

महापाप है इस जहाँ में गरीबी।
गरीबी है सबसे बड़ी बदनसीबी।।
चमकते नहीं डूबा कर जो सितारे।
वहीं है गरीबों के अहम सितारे।।

— रीता राठौर, 10वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

भ्रष्टाचार

बिगड़ रहा है क्यों संसार
क्यों हो रहा है भ्रष्टाचार ?
हर कोई बन बैठा है दानव,
कहीं नज़र न आता मानव,
है चहुँ दिशा में लूटमार,
क्यों हो रहा है भ्रष्टाचार ?
यह दुनिया कवि की कविता,
प्यार की यहां बहती थी सरिता
अब क्या होगा इस का सार
क्यों हो रहा है भ्रष्टाचार ?

— रिचा शर्मा, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

कितना सच!

फिल्म आयी, इलम गया
फैशन आया, हया गई
दौलत आयी, महोब्बत गई
क्रिकेट आया, काम गया
बैंक आया, बरकत गई
टी.वी आया नींद गई
गाना आया इबादत गई

— उपासना लता, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड

किश्तवाड़

केसर का मन्त्री है,
नीलम का उद्गार
यही हमारी मातृभूमि
यही हमारा
किश्तवाड़।

जगह–जगह हैं चश्में
हर व्यक्ति में है प्यार,
यही हमारा सब कुछ है,
यही हमारा किश्तवाड़।

सरथल का पवित्र तीर्थ,
और सूफियों की मज़ार,
सब अर्पण इन चरणों में
यहाँ त्रिसन्ध्या चमत्कार।
यही हमारी धरती है
यही हमारा किश्तवाड़।

— अभिषेक शर्मा, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड

समय

सुनो रे दुनिया वालो
झोंपड़ी महल में रहने वालो
समय को थाम लो हाथों में
निकल न जाये बातों में।

हर समय अच्छी बात करो,
उसे न यूँ बरबाद करो,
जीवन में कुछ निर्माण करो,
हर वक्त नया काम करो।

– पुष्पा शर्मा, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

किश्तवाड़ी कविता

अपुज गसे न जाय जबुन,
पज़िस पेठ कोर यकीन।
यू उल्ट थुय सदा जबन,
तिस क्या तरम, त क्या दीन
गरीबस गसे न जाथ सतोऊन,
उछन युय असे भगवान।
यू गरीबस थुय सतावन,
तिस कूं जबे इंसान।
काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार,
गयूमुत थुय असे मंज तैयार
इन्सान थुय अज मतलब परसत
यू न थुय कैंसुन सहार।
तरम–करम अज़ कूँ करन,
सेरी थिय करन पाप।
कूं करन थुय पाठ त पूजा,
कूं करन थुय अते जाप।
परदेसी केज़ युक तु,
यूत ग्युमुत परेशान।
यू युछ येते करे,
तयूछ तते भुकतान।

– सविता शर्मा, 10वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

मेरी दीदी

मेरी दीदी सबसे प्यारी,
सारे घर की वह उजियारी,
कभी–कभी वह मुझसे लड़ती
अगले पल फिर प्यार भी करती।

लंगूर

बैठ कर डाली पर लंगूर
खाता मीठे हरे अंगूर,
काले रंग का इंजन आया,
पूनम पूजा को संग लाया।

– विश्वेष शर्मा, (कक्षा उपलब्ध नहीं)
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

मेरा उद्देश्य

जीवन की बस एक तम्मना।
पढ़ लिखकर है कुछ बनाना।।
इसके लिए मेहनत जरूरी ।
पढ़ लिखकर जो होगी पूरी।
यही माता–पिता का सपना।
जिसे हमें है पूरा करना।।
वक्त अगर बीत जाएगा।

तो फिर वापिस न आएगा।
मेरी बात मानो प्यारो।
पढ़ लिखके कुछ, बनजाओ यारो।।

– आहुति गुप्ता,
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

मुकद्दर की रेखा

इस ज़िन्दगी को हमने अन्दर से देखा है
यह ज़िन्दगी तो मुकद्दर की रेखा है।

खुद को जो कहते थे राजा वह फकीर बन गए
फुटपाथ पर जो रहते थे, वह अमीर बन गए।
नसीब के इस खेल को इन आँखों से देखा है

यह ज़िन्दगी तो मुकद्दर की रेखा है।।
वक्त की पुकार है, वक्त की यह मार है
वक्त के मारे हैं सब वक्त की रफ्तार है
वक्त के आगे सब को, आसूँ बहाते देखा है
यह जिन्दगी तो मुकद्दर की रेखा है।

मनोज कुमार, 10वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

कश्मीर की पुकार

लो दिल्ली से पूछ रहा है,
'डल' का निर्मल नीर,
क्या नफरत की बाढ़
डूबो देगी पूरा कश्मीर ?
कुटिल फिरंगियों ने,
खेल अनोखा खेला,
उठों जवानों तुझे पुकारे,
अब 'बलिदानी' बेला

मासूमों पर साधे किसने
ज़हर बुझाये तीर
क्या नफरत की बाढ़ डूबो देगी पूरा कश्मीर ?

केसर की क्यारी देखेगी,
कब तक गिरती लाशें,
कब तक ठण्डी आहें भारेगी,
लेगी ठण्डी साँसे
आतंकी लिख रहे जुल्म से,
कुड़ियों की तकदीर,
क्या नफरत की बाढ़ डूबो देगी पूरा कश्मीर ?

सिर देने को तत्पर हैं
भारत माँ के वीर
नहीं सूझती हम बच्चों को
अब कोई तदबीर
भारत मां के वीर
कहे तिरंगा – "नेताओं को"
भिजवा दो कश्मीर
क्या नफरत की बाढ़ डूबो देगी पूरा कश्मीर ?

– प्रिया शर्मा, 10वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

कश्मीर हमारा है

कश्मीर हमारा है सारे का सारा है,
हम लोगों ने दिया यही नारा है।
जब विरोधियों ने चाहा इसको छीनना
हमने चीर कर रख दिया उनका सीना।
इसकी सुंदरता का प्रकाश सारे भारत में फैला,
जहाँ एक समय लोगों ने बड़ा ही दुख था झेला।
यह तो सभी देशों से न्यारा है,
कश्मीर हमें जान से भी प्यारा है।

छीन न सके कोई इसे हमसे,
यही दुआ हमारी रब से।
कश्मीर हमारा है,
हमें जान से प्यारा है।

– दीपा अंशु, 10वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

ATTENTION

My dear friends please pay attention,
I have a few things here to mention.
When you enter the school gate.
Ensure that you are never late.
Say your prayers with sincere heart.
This is how the day must start.
Listen to what your teachers say.
Increase your knowledge day by day.
Go to school with a good aim,
Be great and have a good name.

- Suhasini Baru, 4th
BVM High School, Kishtwar

MY GIFT

I give to you a gift of my
frienship.
A piece of my heart and soul.
A shoulder to cry on
when life makes you sad.
Laughter for your silly jokes.
An ear listen to your concerns.
Eyes to see the beauty of your
soul.
Advice when you are at a fork in the road.
And a smile to brighten your day.
All this I give you and more
Because you are my best friend.

- Sachin Thakur, 10th
BVM High School, Kishtwar

FIND HAPPINESS

Find happiness in nature
In beauty of mountains
In the serenity of sea
Find happiness in frienship
In the doing work together
In sharing and understanding
Find happiness in yourself
In your mind and body
In your values and achievements
Find happiness in everything you do

- Sonika Sharma, 10th
BVM High School Kishtwar

TEACHER'S ROLE

Teacher as the most vital factor

— As custodian and archited of our future
— As the nation builder
— As a backbone of our society
— As the social engineer and social workers.
— As the factor of eternity
— As a planner/task master
— As an organisor/Supervisor
— As a guidance Worker/record keeper
— As an evaluator

- Upasna Latta, 9th
BVM High School, Kishtwar

KISHTWAR IS A BEAUTY QUEEN

Kishtwar is not a war place
Kishtwar is a project place
Kishtwar is birth place of shakti
Earth quakes now and then Tremor
Sun dare not to visit
Moon shines freely with its twinkling stars
Moon like beauty every where
Sky showers snow every time
River Chenab carriers the message of peace
Makes every one comfortable
Help to see things with new eyes.
Starts every morning with new heart
So, I dream for your Dear Kishtwar
Kishtwar is not a war place.
Kishtwar is a project place
Kishtwar is birth place of Shakti
Kishtwar is a beauty Queen

- Ramnika Sharma, 10th
BVM High School, Kishtwar

हंसगुल्ले

1. **सोहन** (पिता से) : पिता जी, आप भैया की शादी क्यों कर रहे हो।
पिता : क्योंकि तुम्हारे भैया के ज़िम्में अब बहुत काम हैं।
सोहन : तो फिर मेरी भी शादी कर दो, आजकल स्कूल में होमवर्क बहुत मिलता है।

2. **पिता** (बेटे से) : बुद्धिमान मूर्ख की बात का जवाब नहीं देते, केवल हंस कर टाल जाते हैं।
बेटा (पिता से) : इसलिए मैनें प्रश्नपत्र का उत्तर नहीं दिया, केवल पढ़ा और हंस कर चला आया।

3. **सोहन** (मोहन से) : मेरे गांव के लोग बहुत स्वस्थ हैं, यहां कभी कोई बीमार नहीं पड़ता।
मोहन (सोहन से): लेकिन वह कमज़ोर सा कौन नज़र आ रहा है।
सोहन : वह यहाँ का डाक्टर है।

4. **बेटा** (पिता से) : क्या आप के पिता भी आप को मारते थे ?
पिता : 'हाँ'
बेटा : क्या उन के पापा भी आप के पापा को मारते थे ?
पिता : शायद, लेकिन तुम ये सब क्यों पूछ रहे हो ?
बेटा : दरअसल, मैं जानना चाहता हूँ कि हमारे खानदान में मार–पिटाई कब से शूरू हुई थी।

– सिम्मी उत्तम, 8वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

चींटी (हाथी से) : हाथी भैया, क्यों भाग रहे हो।
हाथी (चींटी से) : मेरी मां मूझे डंडा लेकर ढूंढ रही है।
चींटी (हाथी से) : आओ, मेरे पीछे छिप जाओ।

– इंदिवर शान, 9वीं
भा. वि. म. उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

भारतीय विद्या मंदिर हड़ियाल, किश्तवाड़

आँसू!!!

आँसू .... इस शब्द को पढ़ते ही एक अजीब सी अनुभूति होती है। आँसू जिसे सभी अपनी–अपनी आंखों में समेट कर रखते हैं। क्यों आते हैं आँसू! कभी खुशी के आँसू, कभी गम के आँसू। किसी के दिल का राज़ बता देते हैं –आँसू।जब कभी व्यक्ति दुख के अंधेरे में अपने आपको अकेला पाता है तब— आँसू का सहारा ही लेता है।

जन्म से लेकर मरण तक यह व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ते, खुशी में भी नहीं। आँसू व्यक्ति के हमदर्द, साथी, हमराज़, होते हैं जो व्यक्ति के दुख की परतों तक समा जाते हैं। आँसू जात--पात का भेदभाव भी नहीं करते। आज के युग में जहाँ अत्याचार हो रहे हैं। वहां इंसान भी अपना रूप बदल लेते हैं। किन्तु आँसू किसी भी क्षण अपना रूप नहीं बदलते। दोनों आँखों से बहते हैं। चाहे वह गम के आँसू हों या खुशी के। अपनों के लिए ही नहीं, गैरों के लिए भी बहते हैं। आँसू! गम के लिए ही नहीं, खुशी के लिए भी बहते हैं।

— **मोनिका शर्मा, 8वीं**

भा. वि. म. हड़ियाल, किश्तवाड़

My Childhood

I was born, with no hair on
my head,
And I used to be conjined
on the bed.
When I grew a little
bigger,
I started liking toys with a trigger
I used to be always with my mother,
So that, she had no time for other.
I love it, when she used to talk with me
Taking me on her lap
I remembered the way, I used to lap
When anyone used to say Hi,
I used to feel very shy.
When someone used to come fron
outside,
I remembered, how I used to run insid
Now the days are gone,
But I remembered them by seeing ol
photograph.
And now I am working hard.
So that one day people can take m
autograph

Ranju Manhas, 8t

BVM Hary

भारतीय विद्या मंदिर, सलाना

सलाना विद्यालय

निःसन्देह संसार में ज्ञान के बराबर कोई वस्तु नहीं है। ज्ञान एक ऐसा प्रकाश है जो जीवन को दिशा देता है। वैसे भी शिक्षा का वास्तविक अर्थ व्यक्ति का चरित्र निर्माण करना है और शिक्षा का अन्तिम अर्थ मातृभूमि की सेवा करना है। इसी हेतु विद्या भारतीय से सम्बन्ध भारती विद्या मन्दिर सलाना शिक्षण के क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

वर्तमान स्थिति – इस समय विद्या मंदिर में प्रथम से आठवीं तक कक्षाएं चल रही हैं, जिन में 103 भैया–बहन शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। सात–आचार्य समर्पित भाव से अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

विद्यालय का अपना एक भवन है। पाँच कमरे और बरामदा है और दूसरा भवन किराये पर है जिसमें 4 कमरे हैं। आठवीं कक्षा का ज़िला बोर्ड की परीक्षा में शत–प्रतिशत परीक्षा फल रहा है। विद्यालय की दिनचर्या प्रार्थना सभा में गीत, वन्दना, श्लोक चौपाई, प्रेरक प्रसंग, गायत्री मन्त्र, शान्ति पाठ से आरम्भ होकर शैक्षिक विषयों के बाद वन्देमातरम् द्वारा सम्पन्न होती है। संस्कृति ज्ञान परीक्षा में बच्चे तथा आचार्य दीदियां भाग लेते रहते हैं।

– प्रधानाचार्य

भारतीय विद्या मंदिर, सलाना

मातृ भूमि

सुन्दर होंगे देश बहुत से,बहुत बडी है यह धरती

पर अपनी मां तो अपनी है, अमित प्यार है जो करती,

इस जन्मभूमि पर शत बार जन्म लें हम;

शत–शत बार इसी की सेवा में अपना जीवन दें हम,

वीरांगनाओं ने जहां देश हित जौहर व्रत करना सीखा

स्वतंत्रता के लिए जहाँ, बच्चों ने भी मरना सीखा,

वहीं तो जा रहा पूजा करने, लेने सतियों की पदधूल,

वहीं हमारा दीप जलेगा, वहीं चढ़ेगा माला–फूल

यह कंकड़ पत्थर रेत नहीं, यह तो भारत माता है

सुनील कुमार (छठी)
भाविम, माध्यमिक
विद्यालय, सलाना, (किश्तवाड़)

हमको अच्छा लगता है......

अच्छे बच्चे बनना हमको अच्छा लगता है।
काम समय पर करना अच्छा लगता है।।
सत्य–अहिंसा और धर्म ये, तीनों अपने कर्म हैं।
सच्चे पथ पर चलना हमको अच्छा लगता है।।
अपने बड़ों का आदर करना
हमको छोटों को बाहों में भरना।
प्यार सभी से करना हमको अच्छा लगता है।
आए मुश्किल न डरेंगे, सामना डट के करेंगे।
तूफानों से लड़ना, हमको अच्छा लगता है।

- **सुष्मा ठाकुर** (आठवीं)
भाविम. सलाना (किश्तवाड़)

आदर्श बालक के गुण

१. सूर्योदय से पहले उठना।
२. माता–पिता के चरण स्पर्श करना, उनकी आज्ञा का पालन करना।
३. शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नित्य कर्म करना।
४. महापुरुषों की जीवनियां पढ़ना।
५. परोपकारी कार्यों में सदैव आगे बढ़ना।
६. सभी प्राणियों के प्रति कल्याणकारी भावना रखना।

– **संजय राठौर** (छठी)
भाविम. सालाना

भारतीय विद्या मंदिर सरतेंगल (भद्रवाह)

भारतीय विद्या मन्दिर, सरतेंगल 1 मई 1991 में आरम्भ हुआ। तब भवन किराए पर लिया था। भवन की कमी के कारण काटल परिवार ने अपनी दो कनाल भूमि दान में दे दी। 1998 में मा. इन्द्रेश कुमार जी ने यहाँ विद्यालय का शिलान्यास किया। भारतीय शिक्षा समिति जम्मू कश्मीर की सहायता से भवन का पूर्ण निर्माण हो जाने पर 25 नवम्बर 2005 को श्री रामलाल जी के शुभ कर–कमलों द्वारा इसका उद्घाटन हुआ।

भवन सरतेंगल गांव में दरिया के किनारे स्थित है। चारों और हरा भरा दृश्य है। ऐसा नज़ारा तो स्वर्ग में भी बड़े नसीब से प्राप्त होता है। भवन में दो कमरे, एक बड़ा हाल और एक बरामदा है। कक्षाएं नर्सरी से लेकर पांचवीं तक हैं। बच्चों की संख्या 115 है 7 अध्यापकों में चार दीदियां तथा तीन आचार्य हैं।

विद्यालय में खेल–कूद आदि के कार्यक्रमों पर पूरा ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थी कई प्रतियोगिताओं में भी भाग लेते हैं और प्रतिवर्ष अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

आशा काटल, प्रधानाचार्य
भारतीय विद्या मंदिर, सरतेंगल

AN ADVICE

This time is not for you to waste,
Use it according to your taste.
If you go on enjoying the fun,
You will weep in the examination.
None will help you in your need,
Read my dear friends read.

If you are really anxious to pass,
You must daily attend your class
If you want to build your future
Serve the parents and obey the teachers
Never do an evil deed,
Read my dear friends read.

Never be careless in class or collage.
Without attention you cannot get knowledge
Try your best to be good and wise
Learn the secret, how Greatmen rise.
be a good citizen to succeed,
Read my dear friends read.

- Satyam Katal, 5th
BVM Sartingal

भाविमं किश्तवाड़ के विद्यालय के प्रांगण में भारतीय शिक्षा समिति द्वारा आयोजित प्रदेश समारोह का एक विहंगम दृश्य
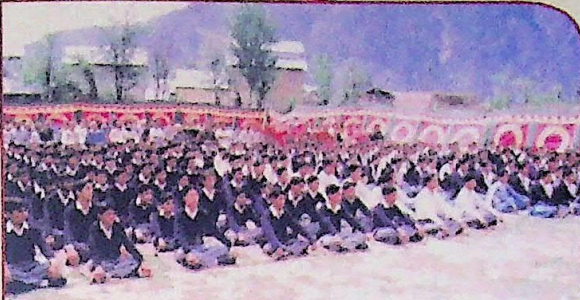
नवनिर्माण से पूर्व भाविमं किश्तवाड़ का एक दृश्य

गत वर्ष किश्तवाड़ में भा. वि. मंदिर के नवनिर्मित विद्यालय में प्रवेश समारोह के दौरान कलश ले जाते हुए भाईजी। उनके साथ हैं भारतीय शिक्षा समिति के पदाधिकारी, विद्यालय के आचार्य व छात्रगण
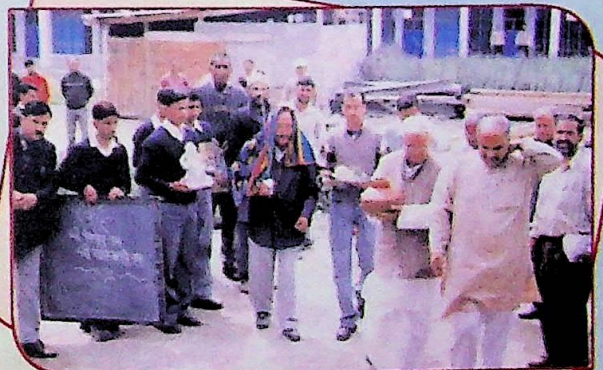
भारतीय विद्यानिकेतन लेह के विद्यालय के छात्रवास का श्री गणेश करते हुए सीमा जागरण मंच के मा. राकेशजी

वानप्रस्थ आश्रम जिब थाथी (उधमपुर) के प्रधानाचार्य अभ्यास वर्ग (२४-२८ दिसम्बर २००६) के समापन अवसर पर कुर्सी पर (दाएं से बाएं) मा. अशोकजी, श्री यश भीक्षु तथा श्री रामलाल शर्मा। साथ में हैं भारतीय विद्या, मंदिर के प्रधानचार्य

गत वर्ष सुभाष खेल परिसर उधमपुर में आयोजित प्रादेशिक खेलकूद समारोह में भव्य प्रदर्शन के बाद छात्राओं को पुरस्कृत करने का दृश्य
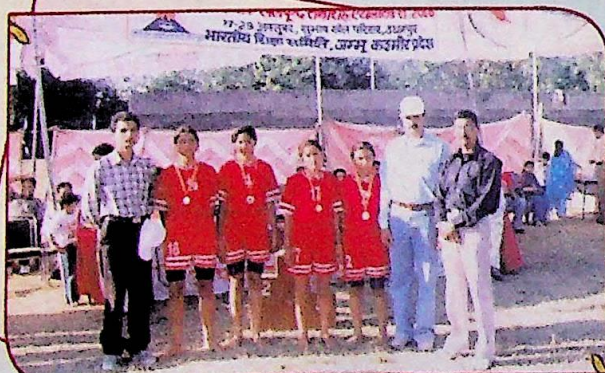
भाविमं रामबन के वार्षिक उत्सव को सम्बोधित करते हुए विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री ब्रह्मदेव शर्मा (भाईजी)

भा. वि. मंदिर रामबन का वार्षिक उत्सव : मंच पर (दाएं से बाएं) रा. स्वं. संघ के रामबन जिला संघचालक श्री मोहन लाल शर्मा, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री गरीब दास कैथ, अतिरिक्त उपायुक्त श्री जियालाल शर्मा, आ. भा. संगठन मंत्री भाई जी तथा संघ के प्रचारक श्री प्रदीपजी
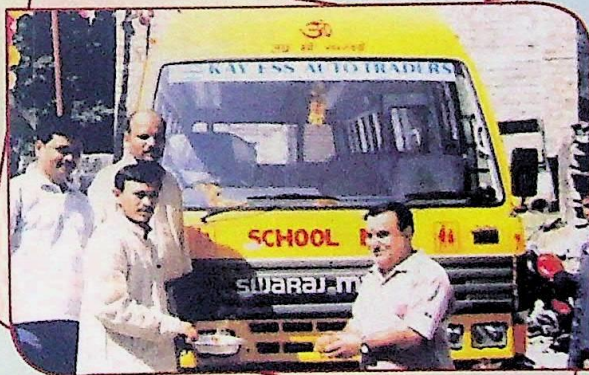
भाविमं रामबन विद्यालय के लिए खरीदे गए नए वाहन का पारम्परिक ढंग से स्वागत करते हुए विद्यालय के प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्री उत्तम चंद। मंत्रोचारण करते हुए पंडित जी। एक दम बाएं हैं लेखा विभाग के विजेंद्र सिंह नैगी जी तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री प्रदीप सिंह

पंजाब में १६वें राष्ट्रीय खेलकूद समारोह के विशाल पण्डाल में योग का प्रदर्शन करते हुए विद्यार्थी
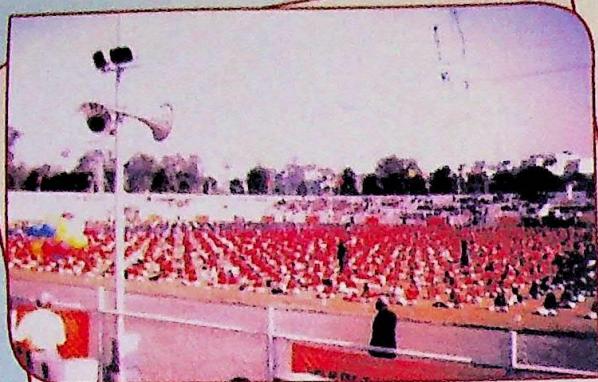
भारतीय विद्या मंदिर रामबन के नन्हें कलाकार

मेयर एम॰ एम॰ चौधरी, स्थानीय पार्षद एस॰ परमजीत सिंह दीप प्रज्वलन करते हुए। उनके साथ हैं भारतीय शिक्षा समिति के मंत्री श्री रामलाल शर्मा तथा अध्यक्ष श्री कृष्णदत्त

भारतीय विद्या मंदिर, रामबन

विद्यालय का वार्षिक उत्सव

भारतीय विद्या मन्दिर उच्च विद्यालय रामबन का वार्षिक उत्सव – २००६ गत २२ अप्रैल को मण्डलीभवन रामबन में सम्पन्न हुआ। अखिल भारतीय विद्या भारती के संगठन मंत्री श्री ब्रह्मदेव शर्मा (भाई जी) कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता रामबन के अतिरिक्त उपायुक्त श्री जियलाल शर्मा ने की। पुलिस अधीक्षक श्री गरीबदास कैथ, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर भारतीय शिक्षा समिति के प्रांत संगठन मंत्री श्री अशोक कौल तथा समिति के अध्यक्ष श्री कृष्णदत्त ने मेधावी विद्यार्थियों तथा कार्यक्रम में प्रतिभागी बच्चों में पुरस्कार वितरित किए। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यातिथि के कर कमलों द्वारा हुआ। सरस्वती वंदना के बाद शिक्षक श्री रंजे कुमार ने अतिथियों का परिचय कराया। इस अवसर पर आमंत्रित अतिथियों को दुशाला व पुष्प माला भेंट कर सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि श्री ब्रह्मदेव शर्मा ने इस अवसर पर आशीर्वाद देते हुए कहा कि अब यह प्रमाणित हो गया है कि भा० वि० मं० के शिक्षक सच्चे कर्मयोगी की तरह, सात्विक भाव से सम्पूर्ण कर्म कर विद्यालय को आधुनिक युग की गतिशीलता के अनुसार क्षेत्र में एक सर्वश्रेष्ठ विद्यालय के रूप में स्थापित कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि इस विद्यालय की उपलब्धियों को सुनकर मन बहुत आनन्दित हो रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी ऐसे भव्य कार्यक्रमों का आयोजन होता रहेगा।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री जिया लाल शर्मा (अतिरिक्त उपायुक्त अधिकारी, रामबन) ने कहा कि मैं भा० वि० मं० रामबन की सहृदय प्रशंसा करता हूँ, जहाँ पर न केवल शैक्षिक उपलब्धियों पर अपितु संस्कारों पर भी जोर दिया जाता रहा है। अपने विद्यार्थियों को जीवन की हर कसौटी पर खरा उतारने के लिए शिक्षकों द्वारा निरन्तर प्रयास किया जाता है, वार्षिक परिणाम इस बात के साक्षी हैं। इस बात से यह स्पष्ट हो जाता कि यहाँ के शिक्षक अपने दायित्वों को भली – भांति समझतें भी हैं व सुचारू ढंग से उन्हें कार्यान्वित भी करते हैं।

इस अवसर पर विशष्टि अतिथि श्री गरीब दास कैथ (पुलिस अधीक्षक, रामबन) ने कहा कि मैं इस विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों का बहुत बार निरीक्षक रह चुका हूँ। मैंने पाया कि इस विद्यालय में हर कार्यक्रम को परम्परागत शैली में आयोजित किया जाता है। मैं स्वंय चाहता हूँ कि मेरे बच्चे भी इसी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करें, पर विडम्बना यह है कि चलते हुए सत्र में विद्यालय बदलना एक समस्या का कारण बन जाता है। इस विद्यालय में बच्चे के संपूर्ण विकास (मानसिक, शारीरिक, शैक्षिक व आध्यात्मिक) का पूर्ण प्रयास किया जाता है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी को मेधावी छात्र बनाने के लिए यहाँ के शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान है। यहाँ पर विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण पर भी काफी जोर दिया जाता है।

इससे पूर्व प्रधानाचार्य श्री प्रदीप सिंह ने विद्यालय का वार्षिक वृत्तान्त प्रस्तुत किया। वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में रंगारंग सांस्कृतिक एवं लोक संस्कृति से जुड़े कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। नन्हीं कोमल शर्मा ने भगवदगीता के श्लोकों का उच्चारण कर सभी को भाव विभोर कर दिया। दिव्या पुरी ने 'मेरा विद्यालय' तथा मनीष जोशी ने 'गुरु का सम्मान' विषय पर रचनाएँ पढ़ीं। कार्यक्रम के बाद सभी के लिए भोज भी की व्यवस्था की गई थी।

रामबन विद्यालय के प्रबन्धक समिति के प्रधान श्री उत्तम चंद शर्मा न सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ, रामबन के जिला संघ चालक डा. मोहन लाल शर्मा, शिक्षिका आरती गुप्ता, गुलशन बानो का सहयोग उल्लेखनीय है। पुरस्कार वितरण में राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रामबन के प्रधानाचार्य बुधि सिंह तथा उच्च विद्यालय के प्रदीप सिंह ने पुरस्कार वितरण में अपना सहयोग दिया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की शिक्षिका आरती गुप्ता ने किया।

अभिभावक सम्मेलन में मेधावी विद्यार्थी सम्मानित

रामबन विद्या मंदिर में अभिभावक सम्मेलन संपन्न हो गया। सम्मेलन में आठवीं और दसवीं कक्षा में प्रथम रहने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया, जबकि अध्यापकों और स्कूलों के प्रबंधन को भी पुरस्कार दिए गए।

दसवीं कक्षा में डिस्टिंकशन हासिल करने वाले और रामबन जोन में प्रथम शबीर अहमद, वरुण गुप्ता, शिल्पा गुप्ता तथा आठवीं में दिव्या पुरी, आदित्य और पंकज ठाकुर को भी पुरस्कार प्रदान किए गए।

रामबन क्षेत्र की शिक्षा अधिकारी कार्यक्रम में मुख्यातिथि थीं। भारतीय शिक्षा समिति के महामंत्री राम लाल शर्मा ने विद्या भारती के शिक्षा दर्पण और लक्ष्यों पर प्रकाश डाला। इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रदीप सिंह ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। सम्मेलन में कमेटी के प्रधान उत्तम चंद ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

बाल दिवस पर कार्यक्रम

रामबन के स्कूली बच्चों ने बालदिवस के अवसर पर शांति – सद्भावना रैली निकालकर लोगों में जागरूकता पैदा की। इस दौरान आयोजित गेम शो में विजेता रहे लोगों को पुरस्कृत किया गया।

रामबन क्षेत्र के भारतीय विद्या मंदिर के छात्र – छात्राओं ने बाल दिवस के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में कक्षा दसवीं की दिव्या पुरी, कक्षा नवीं की रूपाली एवं कक्षा नवीं की काजल कटोच समेत कइयों ने भाग लिया। इसके बाद छह प्रकार के गेम शो, जिनमें एक माचिस की तीली से १० कैंडिल जलाना, मेहंदी लगाना, कलर वाटर में रखे गिलास में सिक्का गिराना, खुशबु पहचानना, बिना देखे तस्वीरों पर बिंदी लगाना एवं रिंग डालकर इनाम लेना आदि शामिल रहा। इस गेम शो में विजेता रहीं निर्मला देवी, आरती शर्मा और कंचन को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं स्कूल के संस्थापक डा॰ सोहन लाल शर्मा एवं स्कूल कमेटी के प्रधान उत्तम चंद खजूरिया ने पुरस्कार प्रदान किया।

Academic Achivements for Year March 2005-06 of B.V.M. Ramban

Result of 8th Standard Distt. Board Examination

Total Strength	=	49
1st Divisions (Grade A)	=	04
2nd Divisions (Grade B)	=	19
3rd Divisions (Grade C)	=	14
Grade - D	=	12

100 % Result

Name the 1st three Position holders in the School are :

1.	Ajay Singh	1st Position	205/250
2.	Palka Gouria	2nd Position	196/250
3.	Rattan Singh	3rd Position	195/250

Result of 9th Class J&K State Board of School Examination

Total Strength	=	44
1st Divisions (Grade A)	=	09
2nd Divisions (Grade B)	=	14
3rd Divisions (Grade C)	=	08
Grade - D	=	13

100 % Result

Name the 1st three Position holders in the School are :

1.	Divya Puri	1st Position	976/1000
2.	Sudershan Mishra	2nd Position	948/1000
3.	Kanam Gupta	3rd Position	934/1000

B. V. M. RAMBAN INTRODUCTION & ACHIEVEMENT

Vidya Bharti is one of the Largest Non-Government Educational Organisation of India, which runs 26,000 Instructions in all over country. Bhartiya Vidya Mandir High School Ramban is also one of them, which is run by Bharti Shiksha Samiti J&K Affiliated with "Vidya Bharti" and managed by local committee. It was established in year April 1986 with two students and one teacher at a commanding place in the heart of Ramban Town by Dr. Mohan Lal Sharma under the guide line of Sh. Indersh Kumar Ji.

However, our dream come true when Jai Prakash Industries Ltd. came forward and took an initiative to elevate the standard of the School by constructing New Building during the year March 2002. It is Equipped with all modern facilities like Library, Laboratory, Computer Lab and Indoor facilities. Now by the Grace of God, co-operations of parents and Hard work of Teachers its strength is increased upto 510 in this year. This institution is recognized by the state, Govt. and Affiliated by State Board of School Education up to 10th class.

The School/ Institution is established to give a unique Identity in terms of Ideals of Indian culture and value based Education.

Basic Objectives:-

1. To provide ideal facilities for the all round development of Personality.
2. To promote sports and Co-curricular activities.
3. Teaching Sanskrit, which is the source of ancient knowledge, mother of many world languages, Sanskrit is considered by linguists all over the world as the most scientific Languages.
4. Teaching Indian music, which helps blossoming of student's personality.
5. Teaching the Science of Yoga which gives a new proper vision of life.
6. Moral Teaching Education, which helps human beings to love others and lead successful community life.
7. To give proper physical Education, which makes our body hale and hearty.
8. All round development of students through Yoga, Sanskrit, Music, Physical and Spiritual Education.

जिला उधमपुर

भारतीय विद्या मंदिर उधमपुर

दसवीं कक्षा के उल्लेखनीय परिणाम : सत्र २००६-२००७

कुल परीक्षार्थी - 23
पदक - 03
प्रथम श्रेणी - 12

संगीता देवी
अंक प्रतिशत – 81.9

राहुल शर्मा
अंग्रेजी – 90 प्रतिशत

सद्धाम हुसैन
गणित – 94 प्रतिशत

कुल परिणाम प्रतिशत – 79

आठवीं कक्षा के मेधावी छात्र - सत्र २००५-२००६

रूही पंडिता
प्रतिशत - 91%

अंकित दुबे
प्रतिशत - 86.8%
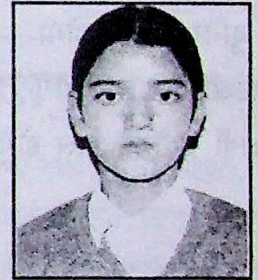
समीक्षा
प्रतिशत - 86.5%

सुनिल कुमार
प्रतिशत - 84%

किरण पाराशर
प्रतिशत - 77.2%

राखी पंडिता
प्रतिशत - 77%

21 वीं सदी

"खाने के लिए घास होगी,
होठों पे प्यास होगी
पेड़ों पे घर होंगे,
जमीन पर बिस्तर होंगे।
गरीब भूख से मर रहे होंगे
अमीर खजाने भर रहे होंगे।
आँखों में आँसू होंगे,
सभी जान लेने के प्यासे होंगे,
विश्वासों पर आघात होंगे,
घरों में न दीवाली होगी,
सारी दुनिया जाली होगी
न बैसाखी जैसे मेले होंगे,
यह 21वीं सदी के हाल होंगे।

- **संगीता शान** (दशम)
भा॰ वि॰ म॰ उधमपुर

यातायात संकेत

यातायात संकेतों को जानो,
इनके चिन्हों को पहचानो।
इनके नियमों का पालन करना,
इनकी अनदेखी कभी न करना।
अपने मित्रों को भी बतलाना,
इनका महत्व समझाना।
सुचारू रूप से यातायात चलाते,
दुर्घटनाओं से ये हमें बचाते।
इन्हें जान कर ही वाहन चलाना,
ड्राइविंग लाइसैंस पहले बनवाना।

- **शिवानी शर्मा** (दसवीं)
भा. वि. मं उधमपुर

WHAT IS LIFE

Tell me what is Life?
Is it really a sharp knife?
Cutting us each day & each night.
Till comes death, the lost bite for some.
Many people are always in hurry,
to declare that life is only a worry.
For worry is it poision &
for some it is wine.
Which cup is yours?
and which one is mine.
If only one you take it with a Smile
For sure you will proceed mile after mile.
Whatever it is,
it is to be faced
Life is to be lived in any case.
Life is not yours & Life is not mine
But life is like a tay,
Which is breaks for Anytime.

Sangeeta (10th)
B.V.M. Udhampur

CRICKET IN EXAMINTAION

Examination Hall	:	Cricket Ground
Examinee	:	Batsmen
Examiner	:	Umpire
Mark Sheet	:	Score Board
Difficult Question	:	Pace Ball
Easy Question	:	Boundry
Pen	:	Bat
Question Paper	:	Ball
Caught Cheating	:	Run Out
Paper Cancelled	:	Clean Bowled
Sitting idle	:	Playing defensive
Principal	:	Leg Upmire
Question out of course	:	Wide Ball
Distinction in 3 subjects	:	Hatrick
First Position in School	:	Man of the Series
First Position in Class	:	Man of the Match
Supplementry Case	:	Match Drawn
Failed	:	Lost of Match

(Name not available)

TEACHERS

Teachers are really great.
They are the ones we appreciate

They never get angry at us.
No matter how much we create.

They are strict but also lenient
They expect us only to be obedient

They really deserve many stars
Because they are the best so far.

- Promila Rajput (10th)
B.V.M. Udhampur

आठवीं कक्षा के उत्कृष्ट परिणाम
सत्र २००६-२००७

आठवीं कक्षा
काजल कोतवाल
अंक – 236
प्रतिशत – 94.4
मेरिट सूची में आठवां स्थान

हंसगुल्ले

१. *एक आदमी अपना गधा बेचना चाहता था। उसे पता चला कि उसके एक साथी को गधे की आवश्यकता है। उसने अपने साथी को खत लिखा कि अगर तुम्हें एक अच्छे गधे की आवश्यकता पड़े, तो मुझे याद कर लेना।*

२. *एक बार मास्टर जी ने बच्चे से उसके पिताजी का नाम पूछा, तो बच्चे ने उत्तर दिया, आचार्य जी मेरा नाम सूरज प्रकाश है और मेरे पिताजी का नाम जीवन लाल है।*

मास्टर जी ने गुस्से से कहा, अंग्रेजी में उत्तर दो, तब बच्चे ने इस प्रकार उत्तर दिया, "Sir My name is Sunlight & My Father name is Life Boy"

(नाम उपलब्ध नहीं है)

शेष पृष्ठ 53 पर

सबसे अधिक अशिक्षित राज्य

हमारे राज्य में चप्पे–चप्पे पर शिक्षण संस्थाएं हैं। यहां न केवल महाविद्यालय तथा उच्चतर विद्यालय के स्कूल हर गली–कूचे में दिखाई दे रहे हैं, वरन् बी.एड कालेजों की तो इस राज्य में झड़ी सी लग गयी है। ऐसे कालेजों की बहुतयात है। इस राज्य में यदि अब कालेजों तथा विश्वविद्यालय की उप शाखाएं खोलने की कमी थी तो वह पीडीपी और कांग्रेस गठबंधन सरकार ने पूरी कर ली।

राज्य में शिक्षा का दर बढ़े इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षण संस्थाओं का खुलना अच्छा लक्ष्य है। पर यहाँ तो धार्मिक और मत–पंथों के आधार पर भी विश्वविद्यालयों का गठन किया जा रहा है। लेकिन इसके बावजूद हम अपने राज्य को उन आकड़ों से बचा नहीं पाए जिसमें जम्मू कश्मीर उन चार राज्यों में शामिल हो गया जो भारत में सबसे अधिक अशिक्षित हैं। जम्मू कश्मीर के अतिरिक्त अन्य तीन राज्य हैं – अरूणाचल प्रदेश, झारखंड एवं बिहार।

कुछ मास पूर्व राज्य विधान परिषद् में रखे गए आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार इस तथ्य का रहस्योदघाटन किया गया कि हमारा राज्य देश के अनुपात में शिक्षा के क्षेत्र में कितना पिछड़ गया है। आंकड़े बताते हैं कि हमारे राज्य में शिक्षित लोगों की संख्या 55.5 प्रतिशत है जो कि पूरे देश के 64.8 प्रतिशत से भी कम है। पुरुषों की अपेक्षा शिक्षित महिलाओं का प्रतिशत और भी चौंकाने वाले हैं। हमारे राज्य में केवल 43 प्रतिशत महिलाएं ही शिक्षित हैं जबकि यह प्रतिशत सम्पूर्ण देश का 53.67 प्रतिशत है।

आंकड़े बताते हैं कि तीन प्रतिशत गांव में उच्च शिक्षा (महाविद्यालयीन) के साधन निकट है, जबकि 27 प्रतिशत गांवों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए बीस किलोमीटर से भी अधिक दूरी तय करनी पड़ती हैं। शेष क्षेत्रों का क्या हाल है इसकी जानकारी इन आंकड़ों में निहित है कि ड्राप आउट दर में 7.8 प्रतिशत में 5.7 प्रतिशत की कमी आयी है।

पृष्ठ 52 का शेष

9. *सोनू (रामू से) :– "मैं सामने वाली उस बिल्डिंग पर एक झटके में चढ़ सकता हूँ"*
रामू :– 'नहीं चढ़ सकते'।
सोनू :– "अगर चढ़ जाऊं तो क्या दोगे?"
रामू :– 'धक्का'

- शिवानी शर्मा (दसवीं)
भा० वि० मा० उधमपुर

भारतीय विद्या मन्दिर, थाथी

वार्षिक गतिविधियां

भारतीय विद्या मन्दिर थाथी, उधमपुर में स्थित है। विद्यास्थल गांव कोटली के वरिष्ठ जनों ने विद्या भारती को दान में दिया। विद्यालय अभी निर्माणाधीन है लेकिन अभी तक बने छः कमरों में

भा.वि.मं थाथी के वार्षिक उत्सव पर
गायन करती हुई छात्राएं

आठवीं तक कक्षाएं चल रही हैं। विद्यालय जम्मू–कश्मीर सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है, विद्यालय में 115 विद्यार्थी और 12 आचार्य कार्यरत हैं।

वर्ष 2005–06 में विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी निम्नलिखित है :

स्वतंत्रता दिवस / कृष्ण जन्माष्टमी : विद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस तथा कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर कार्यक्रम सम्पन्न हुए। कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर शिशु वाटिका के भैया–शिव महेश अन्ताल को कृष्ण के रूप में सजाया गया था।

नवरात्रा उत्सव : विद्यालय में नवरात्रा उत्सव पर हवन यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। इस अवसर पर चंडियाई (ज्ञान कोट) से आए महात्मा जी ने प्रवचन दिए।

विज्ञान मेला : उतर क्षेत्रीय ज्ञान–विज्ञान मेला गीता बाल भारती परिसर दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इसमें पांच प्रान्तों के भैया–बहनों ने भाग लिया। जम्मू–कश्मीर के भारतीय विद्या मन्दिर थाथी से भैया सुशील सिंह ने अपने द्वारा संचालित पवन चक्की (wind Mill) का प्रदर्शन किया। विशेषज्ञों ने इस मॉडल को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया ।

निबन्ध प्रतियोगिता : 14 सितम्बर को आयोजित निबंध प्रतियोगिता में 26 भैया–बहनों और 5 आचार्यों ने भाग लिया। प्रान्तीय स्तर पर विद्यालय की किशोर वर्ग की बहन मनीषा शर्मा को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

सीमा देवी को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार प्रदान करते हुए भारतीय शिक्षा समिति के मंत्री श्री रामलाल शर्मा

संस्कृति ज्ञान परीक्षा : दिसम्बर मास में विद्यालय में संस्कृति ज्ञान परीक्षा में विद्यालय के 73

भैया बहनों और 7 आचार्यों ने भाग लिया।

खेलकूद : खो–खो बाल वर्ग की बहनों की टीम प्रान्तीय स्तर पर उधमपुर में प्रथम स्थान पर रहीं। क्षेत्रीय स्तर पर खो–खो बाल वर्ग की बहनों की टीम बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश) में तृतीय स्थान पर रहीं।
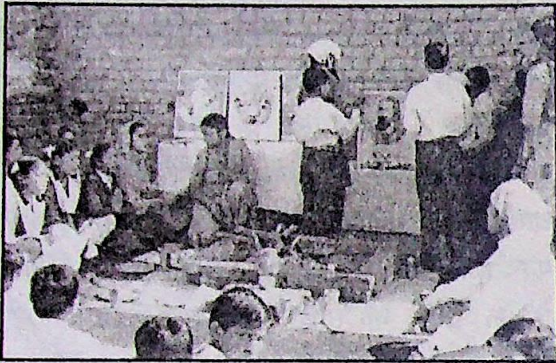
श्री गुरुजी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में यज्ञ का अनुष्ठान करते हुए आचार्य एवं विद्यार्थी

18वाँ अखिल भारतीय राष्ट्रीय खेलकूद झांसी में सम्पन्न हुआ। अखिल भारतीय राष्ट्रीय खेलकूद में विद्यालय की बहन सीमा देवी का रिले दौड़ में चयन किया गया। **पूरे जम्मू कश्मीर प्रान्त से बहन सीमा को ही अखिल भारतीय राष्ट्रीय खेलकूद के लिए चुना गया।**

हवन यज्ञ : श्री गुरुजी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का अनुष्ठान किया गया, जिसमें गांव के वरिष्ठ जनों, प्रधानाचार्य सहित सभी आचार्यों एवं भैया–बहनों ने भाग लिया।

वार्षिक उत्सव : विद्यालय का वार्षिक उत्सव गत 15 फरवरी को मनाया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राम लाल (महामंत्री, भारतीय शिक्षा समिति) तथा श्री बंसी लाल गुप्ता (क्षेत्रीय प्रचार–प्रसार अधिकारी उधमपुर) ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमान राम लाल जी ने दीप प्रज्वलन से किया। कार्यक्रम की शुरूआत सरस्वती वंदना से की गई। कार्यक्रम में देशभक्ति गीत, नृत्य और योग भी शामिल था।

विद्यालय का वार्षिक वृत प्रमुख आचार्य कुमारी प्रशोत्मा ने सुनाया। विद्यालय का सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी का पुरस्कार सप्तम कक्षा के भैया सुशील सिंह को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार अष्टम कक्षा की बहन सीमा देवी को प्रदान किया गया क्योंकि बहन **सीमा देवी का संकुल से लेकर राष्ट्रीय खेलकूद तक चयन किया गया है।** इस कार्यक्रम में गांव के वरिष्ठ अधिकारी अध्यक्ष श्री
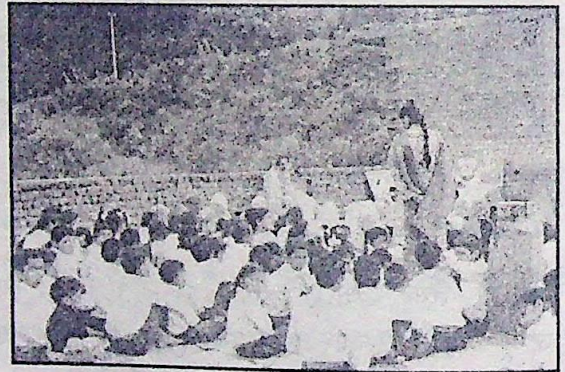
नवरात्रा उत्सव पर विद्यालय में श्री श्री 108 महन्त श्री राम दुलारे दास जी तीव्र रामायणी चडियाई (ज्ञानकोट) प्रवचन करते हुए

नंद लाल, उपाध्यक्ष श्री स्वर्ण सिंह शामिल थे। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने उपस्थित मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों का परिचय कराया तथा वार्षिक उत्सव का उद्देश्य बताया। कार्यक्रम 'वन्देमातरम' गीत से सम्पन्न हुआ।

राष्ट्र प्रेम

भारत है देश हमारा,
हमें है, जान से प्यारा,
रहा सदियों से महान,
इसके लिए हम कुर्बान।

– राखी ठाकुर, सातवीं भा. वि. म. थाथी

हिन्दुस्तान

मैं किस मिट्टी की हूँ यारो,
मेरी पहचान लिख देना।
कफन के एक–एक कोने
पर हिन्दुस्तान लिख देना।
वो मंदिर हो या मस्जिद, गुरुद्वारा हो या गिरजा।
तुम चाहो तो ....
चारों पर मेरा ईमान लिख देना।

सजानी है हमें यू एकता,
मंज़िल की दीवार पर
कहीं मैं राम लिख दूँ, तुम कहीं रहीम लिख देना।
तुम मेरे नाम के आगे अच्छा इन्सान लिख देना।
बनी हो जो किसी की जान लेने को
तुम उस बन्दूक की गोली पर
मेरा नाम लिख देना।

राबिया मुगल, सातवीं
भारतीय विद्या मंदिर थाथी

देश हमारा

देश हमारा सबसे प्यारा
प्यारा हिन्दुस्तान
ऊँचे–ऊँचे पर्वत सुन्दर
अपने पहरेदार।

जल से सदा भरी हैं नदियां
देश बना गुलजार
झरने गाते गीत मनोहर
सुन्दर मीठे तान।

रंग–बिरंगें पंजों वाले
पक्षी करे कलोल
मोर पपीहा, तोता, कोयल
बोले मीठे बोल।

– सुरेन्द्र सिंह, पांचवी
भारतीय विद्या मंदिर, थाथी

अच्छा होता है

पढ़ाई के समय पढ़ाई
खेल के समय खेल
रात को जल्दी सोना
सुबह जल्दी उठ जाना।

प्रिया शर्मा, छठी
भारतीय विद्या मंदिर थाथी

नेहा शर्मा, छठी
भारतीय विद्या मंदिर, थाथी

वृक्ष लगाएं

वृक्ष लगांए इस धरती पर
नवयुग का निर्माण करें।
रोके हम कटने से इनको
अब इनके प्राण हरें।

वृक्ष से महके घर–आंगन
महके अब हर गली–गली।
बंजर धरती बने बगीचे
बैठी हो जिनमें तितली।

वृक्ष हमारे परम हितैषी
दूषित हवा को हरते हैं
रिमझिम पानी बरसा करके,
परोपकार ये करते हैं।

वृक्ष लगाना फर्ज हमारा,
यहीं तो सच्ची सेवा है।
कंद मूल फल मिलते इनसे,
मिलती मीठी सेवा हैं।

– अनिता शर्मा, आठवीं
भारतीय विद्या मंदिर थाथी

आज का दौर

युवा जो हैं हमारे देश के दिनकर,
जिन पर हैं सबका भविष्य निर्भर।
जिन्हें कल करने हैं समाज के कार्य सारे,
वही आज फिर रहे हैं बेरोज़गार सारे।

जो विद्यार्थी लाते हैं अच्छे नम्बर,
और छूना चाहते हैं नीला अम्बर।
उन्हें कहाँ मिलता है मौका,
हर दम खाते रहते हैं वह धोखा।

जिसमें होती है कुछ करने की चाह,
उन्हें दिखाई नहीं जाती सही राह।
अवसर प्राप्त करने वाला कोई और है,
यही तो आज का दौर है।

– विपुल गोस्वामी, सातवीं
भारतीय विद्या मंदिर, थाथी

रक्षा बन्धन

रक्षाबन्धन का त्योहार
बढाता भाई–बहन में प्यार।
सुन्दर राखी, बहन है लाती,
थाली में फिर खूब सजाती।
भाई भी जाता बाज़ार
लाता प्यार भरा उपहार।
रक्षाबन्धन का त्योहार।।

इनके चरणों से बढ़कर...

माता–पिता की सेवा करना
उन पर कोई एहसान नहीं।
माता–पिता के चरणों से बढ़कर
दूजा कोई धाम नहीं।
दुख सहना माता–पिता की खातिर,
फर्ज़ है, कोई एहसान नहीं।
ऋण है इनका हमपर इतना

भिक्षा या कोई दान नहीं।

– निशा देवी, सातवीं
भारतीय विद्या मंदिर, थाथी

कभी हार नहीं होती

लहरों के छितरने से नौका पार नहीं होती।
मेहनत करने वालों की हार नहीं होती।
नन्हीं–चीटीं जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती है दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।
मेहनत करने वाले की हार नहीं होती।

भारती वर्मा, आठवीं
भारतीय विद्या मंदिर थाथी

हमारा ध्रुवतारा

दुनिया के नक्शे पर चमके भारत देश हमारा
लाखों तारों के जमघट में हो जैसे ध्रुवतारा
इसकी शौहरत का दुनिया में ऐसा जादू छाए
खुशबू को फूलों से रोक कोई न पाया
जनता है इसकी भोली पर इतनी नहीं नादान
आए वक्त बुरा तो रख दी हथेली पे जान
लाखों वीर हुए इस देश पर कुर्बान
जो हिस्सा छूट गया उसको भी अपना बनाया है
खाएं हम कसम भारत को महान बनाना है
दुनिया के नक्शे पर चमकेगा भारत देश हमारा है
लाखों तारों के जमघट में हो जैसे ध्रुवतारा

– सीमा देवी, छठी
भारतीय विद्या मंदिर थाथी

बचपन

छोटा था तो, कभी न सोचा
बचपन भी क्या होता है।
बड़ा हुआ तो सोचता हूँ मैं
यह बचपन क्यों खोता है
बचपन में न धन की चिन्ता
न चिन्ता कुछ खाने की
बड़ा हुआ तो लगी यह चिन्ता
सब कुछ अब पा जाने की
मां–बाप सब कुछ लाते
हमें चिन्ता केवल खाने की
क्या है दुनिया क्या है महिमा
क्या है धन और क्या है माया
बचपन में मैं तो अबोध था
कौन है अपना और कौन पराया।

– हैपी सिंह, सातवीं
भारतीय विद्या मंदिर, थाथी

भूल कर भूल से सीखें

जो कभी भूल न करें
उसे भगवान कहते हैं
जो भूल करके सुधार करें
उसे इन्सान कहते हैं
जो भूल कर भूल करें
उसे असावधान कहते हैं
जो भूल कर मुस्कराए
उसे शैतान कहते हैं
जो भूल कर भूल जाए

उसे नादान कहते हैं
जो भूल कर भूल से सीखें
उसे बुद्धिमान कहते हैं।

– राकेश ठाकुर, सातवीं
भारतीय विद्या मंदिर, थाथी

हमारे प्रधानाचार्य

सबसे अच्छे हमारे आचार्य
और भी अच्छे प्रधानाचार्य।
खुले हैं इनके दिल के द्वार
करते सब बच्चों से प्यार।।

– कंचन खजूरिया, चौथी
भारतीय विद्या मंदिर थाथी

डोगरी कविता
मेरा देस

भारत मेरा देस
सारे कोलां न्यारा देस
नेई कुसै ने राग–द्वेष
भारत मेरा प्यारा देस

हिन्दू–मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
सारे आं अस भाई–भाई
माता–पिता दा मान ऐं इत्थें
बैनें–प्राह इक जानं ऐं इत्थें।

कोल, पपीये प्यारे इत्थै
सुन्दर धैल नजारे इत्थै
ईद, दीवाली, होली इत्थै
हर धर्मे दी टोली इत्थैं

सीस पे इसदे म्हाला बसदा
सागर चरणैं दे बिच बगदा
मेरी देवी देवतां दा एहदेस
साधु, सैन्तैं दा एह् देस

भारत मां दा मान ऐं इत्थैं,
नारी दा सम्मान ऐं इत्थैं
जय जवान, जय किसान
मेरा भारत देस महान
मेरा भारत देस महान।

– पल्लवी, पांचवीं
भारतीय विद्या मंदिर, थाथी

चरित्र धन

धन से भोजन मिलता है,
किन्तु भूख नहीं।
धन से दवाई मिलती है
किन्तु स्वास्थ्य नहीं।
धन से साथी मिलते हैं
किन्तु सच्चे मित्र नहीं।
धन से एकान्त मिल सकता है
किन्तु शान्ति नहीं।
धन से आभूषण मिलते हैं
किन्तु रूप नहीं।
धन से सुख मिलता है,
किन्तु आनन्द नहीं।
धन से बड़ा धन

है चरित्र का धन।

राधा शर्मा, 10वीं
भारतीय विद्या मंदिर थाथी

जिन्दगी

जिन्दगी कोरे कागज़ की भांति है
इस पर सुन्दर सुन्दर लिखो
जिन्दगी एक पुष्प है इसकी सुगंध लो।
जिन्दगी कांटों की बाड है इसमें फूल उगा दो
जिन्दगी एक समस्या है, इसे हल करो।
जिन्दगी एक कमी है इसे शुभ कर्मों से भरो।
जिन्दगी पुष्प है, इसमें से पाप हटा दो
जिन्दगी एक गम है, इसे सहन करो।

– सुरेन्द्र सिंह, सातवीं
भारतीय विद्या मंदिर थाथी

WHAT IS LIFE ?

A rich man says
Money is life
A poor may says
Hard work is life
A Child says
Study is life
A Principal says
discipline is life
A doctor says
Medicine is life

- Nisha Sharma, 7th
BVM High Thathi

SAVE NATURE

Don't pollute water for your health
Save forests our oxygen banks
Save environment for healthy breaths
Save environment for bright future
Grow more trees for pure environment
Save environment for healthy life
Man is the creature of forests.

- Ajay Kumar, 6th
BVM High Thathi

WE SUPER STAR

If you want sock
I call the Rock
If you have not chains
I call the kane
If you have one cup-tea
I call the Booker - T
If you ride a cycle
I will call the Shawn Michael
If you are bread maker
I will call the under taker
If you stolen this Sandal
I will call the Kurt-angle
If you stolen this cotton
I will call the ortan

Susheel Singh, 8th
BVM High Thathi

जिला जम्मू

भारतीय विद्या मन्दिर, अम्बफला

माँ

माँ की ममता बड़ी न्यारी,
माँ है कितनी प्यारी–प्यारी
माँ है सुख–दुख का भंडार,
यही है मेरे जीवन का आधार
माँ के चरणों में ही स्वर्ग है।
इस पर ही हम सब का गर्व है।
माँ ने हमको जन्म दिया है।
हर दुःख को आँचल में लिया है।
माँ की ममता न्यारी है,
माँ सेवा की अधिकारी है।
माँ ने दिखाया जीवन का रंग,
रहकर हम सब के अंग–संग।
माँ ने जीना हमें सिखाया,
इस दुनिया के योग्य बनाया।
माँ का है हम पर कर्ज़,
जिसे चुकाना हमारा फर्ज।

— सुशांत सिंह, 7वीं
भारतीय विद्या मंदिर, अम्बफला जम्मू

कार की कीमत

लक्ष्मी जी ने कृपा कर,
हमें दिखाया प्यार।
एक रुपए की लाटरी में,
दे दी बढ़िया कार।
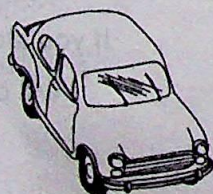
दे दी बढ़िया कार,
अनाड़ी रख ड्राईवर।
कार हो गई बेकार,
एक नल से टकराकर।
कह कमलाकर बोला – ''मालिक मत गुर्राओ,''
एक रुपया इसकी कीमत,
मुझसे ले जाओ।

— करण सिंह, चौथी
भारतीय विद्या मंदिर अम्बफला, जम्मू

कलयुग के दोहे

कल पढ़े सो आज पढ, आज पढ़े सो अब।
फीस डबल होने लगी, फिर पढ़ेगा कब।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसा बिजली का खम्भा।
बिजली आधे दिन न रहे, फिर भी बिल लम्बा।।

— सुनन्दिनी, चौथी
भारतीय विद्या मंदिर अम्बफला जम्मू

गुलाब

लगता सबको भला गुलाब,
कांटों में भी पला गुलाब।
घोर जंगलों में भी खिलकर,
नहीं किसी को खला गुलाब।
सुख–दुःख दोनों में मुस्का कर,
खुशी लुटाता चला गुलाब।
मंद हवा की थपकी पाकर,

बन जाता चुलबुला गुलाब।
होड़ लगा, फूलों से मन में,
कभी न पल भर जला गुलाब।
शैतानों को तो सस्तें में,
देता है तिलमिला गुलाब।

– सुमेश सिंह, 5वीं
भारतीय विद्या मंदिर अम्बफला, जम्मू

शत–शत प्रणाम

माँ–बाप हमारे जनक
प्यार करते, जीना सिखाते हमें,
याद रखो ये लम्हें।
माँ–बाप वो माली हैं,
जो हम को हैं सींचते,
गुस्सा हो जाने पर,
नहीं है, आँखें मीचते।
उनसे जुड़ा है मेरा नाम,
उनको मेरा शत–शत प्रणाम।।

– सिद्धार्थ, चौथी
भारतीय विद्या मंदिर अम्बफला, जम्मू

तितली
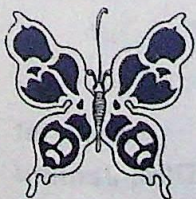
रंग–बिरंगे पंख पसारे,
बागों में मंडराती तितली।
फूलों से कानाफूसी कर,
जाने क्या बतियाती तितली।
चूस–चूस कर नित मीठा रस,
अपने घर ले जाती तितली।
खाली पड़े घड़ों को भरकर,
तुरंत लौट आ जाती तितली।
बड़ी लालची और स्वार्थी,
हाथ नहीं है आती तितली।
अपने देश की कथा–कहानी,
हमको नहीं सुनाती तितली।

– सुदेश सिंह, पांचवी
भारतीय विद्या मंदिर अम्बफला, जम्मू

अपना वतन

चारों तरफ देखो फिज़ा खराब हो चली।
है जिन्दगी भी इस तरह अज़ाब हो चली।
जुनून ही जुनून है फैला सारे जहाँ में,
कयामत की आंधी उठ चुकी है आसमान में
जागो कि अब तो नींद भी बेख्वाब हो चली,
है जिन्दगी भी इस तरह अज़ाब हो चली।

अपना वतन है दोस्तो बरबाद न करो
आपस में कोई शिकवा और फरियाद न करो।
सदियों से इस चमन के तुम ही हो बागबान
कांटे बिछा रहे हो क्यों फूलों के दरम्यां
रहते चमन को अपने ही नाशाद न करो,

अपना वतन है दोस्ती बरबाद न करो।
नफरत की कोपलों को जड़ से उखाड़ दो,
दुश्मन हो कोई वतन का उसको पछाड़ दो
इनको कभी हवाला–ए–सैयाद न करो,
अपना वतन है दोस्तो, बरबाद न करो।

निधि अरोड़ा, छठी
भारतीय विद्या मंदिर अम्बफला जम्मू

WHAT FOR WHAT

Kerala is for dance,
Mysore is for romance,
Bangalore is for beauty,
Bengal is for writing,
Andhra is for learning,
U.P. is for sugarcane

Deepa 4th
B.V.M. Ambphalla

हंसगुल्ले

❖ दो छोटी लड़कियाँ आपस में बातें कर रही थीं। एक बोली, "हमारे पड़ोस में जो नया लड़का आया है वह अपनी 'मम्मी' को 'मम्मा' क्यों बोलता है ?"

दूसरी ने कुछ सोच कर कहा, "तुम नहीं जानती, पतली माँ को मम्मी बोलते हैं और मोटी को मम्मा"

– सोहित , 7वीं
भारतीय विद्या मंदिर अम्बफला, जम्मू

भारतीय विद्या मन्दिर, तालाब तिल्लो

सर्दी
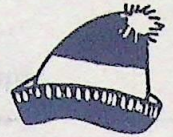
बड़ी देर से आई सर्दी।
मेरे मन को भायी सर्दी।

मौसम बर्फीला हो जाता।
सूरज भी जल्दी छिप जाता।
रात को खूब पढ़ाई करते।
सुबह देर तक सोये रहते।
नहीं सताते अब तो मच्छर।
सर्दी है गर्मी से बेहतर।
बड़ी देर से आई सर्दी
मेरे मन को भायी सर्दी

रोहित थापा, 5वीं
भारतीय विद्या मंदिर तलाब तिल्लो, जम्मू

MY SELF

India is my country.
Cricket is my game.
B.V.M. is my school.
Amit is my name.

Amit, Ist
BVM Talab Tillo, Jammu

दशमेश भारतीय विद्या मन्दिर, दशमेश नगर

2005–06 की गतिविधियां

दशमेश नगर (जम्मू) भारतीय विद्या मन्दिर 1982 में स्वर्गीय मक्खन लाल ऐमा ने दो किराये के कमरों में शिशु वाटिका के रूप में प्रारम्भ किया था। मई 1984 में अन्य तीन विद्यालयों के साथ इसे भी भारतीय शिक्षा समिति जम्मू कश्मीर को हस्तांतरित कर दिया गया। अन्य दो विद्यालय किसी कारणवश थम गये, परन्तु यह विद्यालय गुरुओं के आशीर्वाद और संरक्षकों के मार्गदर्शन से चलता रहा।

दशमेश भा.वि.मं के वार्षिक उत्सव पर मेयर चौधरी मनमोहन सिंह मुख्य अतिथि के रूप में। इस अवसर विद्यालय की प्रधानाचार्य शबनम बाली वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करती हुई

1988 में शिक्षा समिति ने दो कनाल भूमि खरीद कर इस विद्यालय के लिए एक नया भवन बना दिया।पहले यह विद्यालय पांचवी कक्षा तक था, फिर आठवीं और अब दसवीं कक्षा तक चल रहा है। पिछले साल बोर्ड़ की परीक्षा में दस बच्चे बैठे थे और सभी उत्तीर्ण हो गए। आठवीं कक्षा का भी परिणाम अच्छा रहा। दो बच्चों – प्रियंका कोतवाल और पूजा ने सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त किए।

विज्ञान मेला – इस वर्ष भी विज्ञान मेले में दस विद्यार्थी शामिल हुए। बच्चों द्वारा प्रदर्शित तीन में से दो मॉडल दूसरे क्रम में रहे।

शारीरिक शिक्षा : पढ़ाई के साथ–साथ हमारे विद्यालय के छात्र खेलकूद में भी पीछे नहीं है। उन्होंने प्रान्तीय खेलकूद प्रतियोगिता में चार स्वर्ण, आठ रजत तथा सात कांस्य पदक जीते। दसवीं के विद्यार्थी अरविन्द कान्त और विजय राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कुरूक्षेत्र गये हुए थे। बच्चों की प्रतिभा को निखारने के लिए उन्हें प्रत्येक वर्ष वन–विहार भी कराया जाता है।

संस्कृति ज्ञान परीक्षा : संस्कृति ज्ञान परीक्षा में बच्चों तथा अध्यापकों ने भी भाग लिया। सात अध्यापक मध्यमा उत्तीर्ण करके उत्तमा में परीक्षा दे रहे हैं। प्रश्नमंच तथा निबन्ध लेखन में भी बच्चे शामिल हुए। पिछले वर्ष आठवीं की बच्ची प्रियंका कोतवाल पूरे प्रान्त में प्रथम रही।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : इस कार्यक्रम में बच्चों के अभिभावक भी भाग लेते हैं। इस वर्ष गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस, गांधी जयंती, बाल दिवस, स्वामी विवेकानन्द जयंती तथा गुरुओं के प्रकाश उत्सव को धूम–धाम से मनाया गया। गत वर्ष 2 फरवरी को श्री गुरुजी की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में यज्ञ–हवन का आयोजन किया गया, जिसमें

हवन के बाद श्री गुरुजी के जीवन और आदर्शों पर प्रकाश डाला गया।

वार्षिक उत्सव : गत 2 फरवरी को विद्यालय ने वार्षिक उत्सव मनाया, जिसमें जम्मू के मेयर चौधरी मनमोहन सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। बच्चों के अभिभावाकों के अतिरिक्त 600 के लगभग स्थानीय लोग भी शामिल हुए थे। विद्यालय के कार्यक्रम को स्थानीय लोगों और मेयर ने बहुत सराहना की। मेयर ने विद्यालय की क़ार्य प्रणाली को सराहा और सहयोग देने का वादा किया। उन्होंने कहा कि विद्यालय के साथ वाले नाले को पक्का किया जाएगा, साथ ही एक हैंडपम्प भी लगवा दिया जाएगा।

विद्यालय की एक प्रबन्ध समिति है जो मनसा–वाचा कर्मणा समर्पित होकर हर प्रकार से सहयोग प्रदान कर रही है।

शबनम बाली (दत्ता),
प्रधानाचार्य
दशमेश भारतीय विद्या मंदिर,
दशमेश नगर

जिला
राजौरी

स्वामी प्रेमानन्द भारतीय विद्या मन्दिर उच्च विद्यालय, डांगरी

आठवीं कक्षा की बोर्ड़ परीक्षा में उल्लेखनीय उपलब्धि : सत्र २००६-२००७

पूजा शर्मा
अंक प्रतिशत – 90%
बोर्ड़ परीक्षा में
प्रथम स्थान

अरुण रैणा
अंक प्रतिशत – 85%
बोर्ड़ परीक्षा में
दूसरा स्थान

बोर्ड़ परीक्षा में पहली बीस श्रेणियों में जिन विद्यार्थियों ने अपना नाम दर्ज किया है, उनके नाम निम्न हैं :-

जिला कठुआ

BHARTIYA VIDYA MANDIR HIGH SCHOOL, HIRANAGAR

मेधावी विद्यार्थी, सत्र : 2005–2006

स्वाम्पी वर्मा
प्रथम (नवमीं)

इंदू जसरोटिया
प्रथम (आठवीं)

सुरभि सलगौत्रा
प्रथम (सातवीं)

गौरव शर्मा
प्रथम (छठीं)
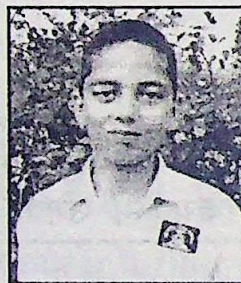
सुनंदन खजूरिया
प्रथम (पांचवी)

शनव शर्मा
प्रथम (चौथी)

आदित्य खजूरिया
द्वितीय (पहली)

दानिश शर्मा
तृतीय (पहली)

आकंक्षा
प्रथम (पहली लवोर)

ACTIVITIES & ACHIEVEMENTS

Academic : The school showed 100% result in board examinations of 8th and 10th classes. The result of all the other classes remain comperatively high than the previous years.

भा.वि.मं. हीरानगर की छात्राएं वार्षिक समारोह के अवसर पर कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई

Infrastructure : Three new classrooms cum examinations hall have been constructed, spending three lacs rupees and one room has been constructed as the office room. The old urinals have been renovated spending Rupees ten thousand. The school has achieved a link path of 13 feet wide, up to the link road Hiranagar.

Cocurricular Activities : The school has celebrated an annaul day function in the school, inviting the parents in order to achieve the communication among the teachers and parents.

The annual science exhibition was organised in the school by the Bhartiya Shiksha Samiti Jammu. The function remain for the session 2006-07 quite sucessful.

Principal
Bhartiya Vidya Mandir
High School Hiranagar

बात ऐसे बनें

जीवन भर लोगों से पहचान करते रहते हैं।
निज से हो जाय पहचान तो फिर बात बनें।।
धन–दौलत जोड़ने में बीत रहा है जीवन।
आत्म धन प्राप्त हो जाय तो फिर बात बनें।।
दर–दर से सजदा करने से कुछ नहीं मिलता।
हो जाय सद्‌गुरु की कृपा तो फिर बात बनें।

विकास, छठी
भारतीय विद्या मंदिर, हीरानगर

ऐसा क्यों होता है?

कई पढ़ना चाहते हैं,
उन्हें पढ़ाया नहीं जाता।
कई आगे बढ़ना चाहते हैं,
उन्हें बढ़ाया नहीं जाता।
कई मासूम यह जहाँ देखना चाहते हैं,
उन्हें दिखाया नहीं जाता।

कई सड़कों पर भीख मांग रहे हैं,
उन्हें भाई कह कर बुलाया नहीं जाता।
कई अनाथ घूम रहे हैं,
उनसे प्यार जताया नहीं जाता।
कई रोना नहीं चाहते,
उन्हें हंसाया नहीं जाता।
चले है विश्व का झगड़ा मिटाने,
अपने घर का झगड़ा मिटाया नहीं जाता।

— नीरू शर्मा, 10वीं
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

जब मिले चिड़िया को दस पैसे

चिड़िया जी को पड़े मिल गए दस पैसे,
लगी सोचने, इनको खर्च करूं कैसे।
क्या मैं अपना नया घोंसला बनवा लूँ ?
क्या पड़ोसियों को दावत पर बुलवा लूँ।
सबको खुश कर अपना मन बहला लूँ।
नए रूप से नीड़ सजा लू तो कैसे
मौज मनाऊं, लोग मनाते हैं जैसे।
तभी सड़क पर देखी दुखिया एक भिखारी,
पैसे उसको दिए दया उमड़ी भारी।

— नेहा रानी, सातवीं
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

आँसू

पानी के दो बूंद टपक पड़ते हैं ये आँसू
मनुष्य को आम से अलग बनाते हैं आँसू।
गम के पलों में दुःख का एहसास कराते हैं ये आँसू
खुशी के पल में भी छलक आते हैं ये आँसू।
अकेलेपन में किसी की याद दिलाते हैं ये आँसू
दिलों को दिलों से जोड़ने वाले भी हैं ये आँसू।
जीवन की परिभाषा हैं ये आँसू
जीने का दिलासा देते हैं ये आँसू।

— पूजा शर्मा, आठवीं
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

मोमबत्ती

जन्मदिन केक पर इन्हें सजाते,
दीवाली, क्रिसमस पर इन्हें जलाते।
बौद्धमंदिरों, गिरजाघरों में,
इन्हें जला आस्था दर्शाते।
अनेक रंगों में ये आती,
छोटी–बड़ी सभी मिल जाती।
बत्ती अचानक चली जाने पर,
तुरन्त यही काम में आती।
मोम से बनती मोमबत्ती कहलाती,
विभिन्न आकारों में हैं आती।
सुगंधित भी है बनाई जाती,
सजावट के काम भी लाई जाती।

— अतुल शर्मा, छठी
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

दोस्ती

दोस्ती में नहीं होता
क़ोई छोटा या बड़ा
दोस्ती में नहीं होता
जाति भाव का कोई झगड़ा
एक जैसी सोच बनती है
दोस्ती का मूल आधार
सगे भाई से बढ़कर होता है
एक दोस्त का प्यार।

— हेमा जसरोटिया, आठवीं
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

मौसम

बदल—बदल कर आता मौसम,
कई—कई रूप दिखाता मौसम।
कभी होता बहुत सुहाना मौसम,
कभी होता बेगाना मौसम।
सर्दी में ठिठुरता मौसम,
गर्मी में खूब तपाता मौसम।
बसंत में यह हरियाली लाता,
ढेरों फूल खिलाता मौसम।
हर मौसम की अपनी खूबी
यही हमें बतलाता मौसम।

— तानिया शर्मा, छठी
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

बिल्ली "मौसी"

दूध—दही की चाह इसे है।
चूहों की परवाह इसे है।
खतरनाक इसकी ...
बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी।

— साहिल सि...
भारतीय विद्या मंदिर हीरा...

... सालाना रिपोर्ट कार्ड
...रस पड़ा, "इतने
... हाल तब
तुम

फूल

जगत हंसाने आते फूल
जग जीवन सिखलाते फूल
कांटों में भी खिलते फूल
जग को हैं सिखलाते फूल
"दुख में सुख हैं," कहते फूल
मन ही मन खुश रहते फूल
खुद पा जाते जग की धूल,
जग को देते सौरभ फूल

— अभिषेक कुमार, छठी
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

हिन्दुस्तानी

धर्म कर्म का भेद नहीं है—मेरे हिन्दुस्तान में,
बुजदिल घुसपैठिए भरे पड़े हैं, कायर पाकिस्तान में,
खौफ नहीं हैं हमें मौत का, हंसते हैं बलिदानी,
मेरी जिंदगी मेरा वतन है, मै हूं हिन्दुस्तानी।।
कोई कहे दीवाना मुझको, कोई कहे मतवाला,
देश की खातिर जान लुटाऊँ मैं तो हूँ दिलवाला।
सवा लाख से एक लडूँ, इतना बल मैं रखता हूँ
मेरी जिंदगी मेरा वतन है, मैं हूँ हिन्दुस्तानी।।
जब भी जन्मों, यही पे जन्मों, मेरा तो यह सपना है,
बाकि सब है, मुझसे पराये, भारत मेरा अपना है।

एक जन्म क्या, सौ जन्मों की, दूँ इस पर कुर्बानी।
मेरी जिन्दगी, मेरा वतन है, मैं हूँ हिन्दुस्तानी।।

— इन्द्र सिंह जसरोटिया, 7वीं
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

मटका

ठंड़ा पानी पिलाता मटका
सबकी प्यास बुझाता मटका।
कुम्हार लोग बनाते मटके
सस्ते में मिल जाते मटके।
पानी का स्वाद निराला।
सोंधी–सोंधी खुशबू वाला।
मटके में तुम हाथ न डालो
पानी गड़वे से ही निकालो।
मटके की धुलाई भी करना।
ताज़े पानी से नित भरना।

— नेहा शर्मा, छठी
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

सलाह

सबसे मीठा सदा बोलना,
कड़वा कभी न उगलना
बिना पूछे किसी की वस्तु
न छूना न लेना।
अच्छे बच्चों से ही तुम,
मित्रता सदा बनाना
अपने से बड़ों को भैया,
सम्मान सदा तुम करना।
आदर से आदर मिलता है
बात यह मन में धरना।

— अनु शर्मा, छठी
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

यातायात संकेत

यातायात संकेतों को जानो,
इनके चिन्हों को पहचानो।
इनके नियमों का पालन करना,
इनकी अनदेखी कभी न करना।
अपने मित्रों को भी बतलाना,
इनका महत्व उन्हें समझाना।
सुचारू रूप से यातायात चलाते,
दुर्घटनाओं से ये हमें बचाते।
इन्हें जान कर ही वाहन चलाना,
ड्राइविंग लाईसैंस पहले बनवाना।
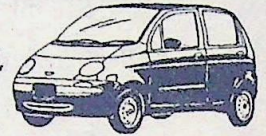
— कंचन जसरोटिया, छठी
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

किस से क्या सीखें

जल से	–	एकता
सागर से	–	गहराई
नदी से	–	मिलकर रहना
राम से	–	मर्यादा
भरत से	–	भ्रातृत्व
अभिमन्यु से	–	पराक्रम

विक्रम से — न्याय
अशोक से — दया
मनुष्य से — प्यार
चींटी से — श्रम
राजपूतों से — बहादुरी
भीष्म से — प्रतिज्ञा
वीरों से — कुर्बानी

— गौरव शर्मा, पाचवीं
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

हंसगुल्ले

1. **मालिक** (गुस्से में) : तुमने कभी उल्लू देखा है ?
नौकर (सिर झुकाते हुए) : नहीं साहब
मालिक : नीचे क्या देख रहे हो ? मेरी तरफ देखो।

2. **रमेश** (महेश से) : चाय लाभदायक है या नुक्सानदेह?
महेश : कोई पिला दे तो लाभदायक और पिलानी पड़े तो नुक्सानदेह!

3. **जनगणना एजेंसी** गाँव में पहुँची। उन्होंने गाँव के मुखिया से पूछा "आपके गांव में पुरुषों और स्त्रियों की मृत्यु–दर क्या है ?"
मुखिया बोले : जी शत–प्रतिशत।
अफसर ने हैरान होकर पूछा, "वह कैसे!"
मुखिया जी ने उत्तर दिया : "हजूर हमारे गांव में जो भी पैदा होता है एक न एक दिन मरता जरूर है।"

4. **सुरजीत** ने हनी का सालाना रिपोर्ट कार्ड देखा तो उस पर बुरी तरह बरस पड़ा, "इतने कम नम्बर ! शर्म नहीं आती ? यह हाल तब है जब मैंने तुम्हे कहा था कि अगर तुम अच्छे नम्बर लाओगे तो मैं तुम्हें साइकिल ला दूंगा। क्या करते रहे ?
"साइकिल चलाना सीखता रहा" **हनी** ने उत्तर दिया।

5. **कंजूस सेठ का बेटा** : "पिता जी रात को सपने में आपने मुझे पाँच रुपए का नोट दिया था।
सेठ : "चल, ऐसा कर अठन्नी तू खर्च करले और साढ़े चार रुपए मुझे वापिस कर दे।

6. **डाक्टर** : "ज्योतिषी जी, पहले के लोग सौ वर्ष तक कैसे जी लेते थे ?
ज्योतिषी : "क्योंकि पहले तुम जैसे डाक्टर नहीं होते थे।"

— अलका शर्मा, दसवीं
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

---

1. दो आदमी आपस में झगड़ रहे थे।
पहला बोला : "मैं एक हाथ मार दूंगा और तेरे बत्तीस दांत तोड दूंगा।"
दूसरा बोला : "मैं तेरे चौसठ दांत तोड़ दूंगा"
एक **तीसरा आदमी** जो पास खड़ा उनकी बाते सुन रहा था, हंसकर बोला : "इसे मालूम नहीं कि एक आदमी के बत्तीस से अधिक दांत होते हीं नहीं"
दूसरा आदमी : "मुझे मालूम था कि तुम बीच

में जरूर बोलोगे, इस लिए मैंने बत्तीस दांत तुम्हारे भी गिन लिए थे।"

— गौतम शर्मा, सातवीं
भारतीय विद्या मंदिर, हीरानगर

1. **एक महिला** ने फलों की दुकान पर फोन किया, "मैंने एक दर्जन सेब मंगाए थे। आपने ग्यारह क्यों भेजे हैं ?"

   दुकानदार : बहन जी! एक सड़ा हुआ था, हमने फेंक दिया आपने भी तो फेंकना ही था।

2. **एक बादशाह** का जनाज़ा बड़ी शान से उठा। हजारों लोगों की भीड़ थी। बादशाह का एक चमचा चिल्लाया, "हजूर आप जिंदा होते, तो अपने जनाज़े की शान देखकर कितना खुश होते।"

3. **यात्री** (टांगे वाले से) : स्टेशन तक का कितना लोगे ?

   टांगे वाला : पांच रुपए और सामान मुफ्त ले चलूंगा।

   यात्री : अच्छा तो सामान ही ले चलो, मैं पैदल आता हूँ।

4. **उम्मीदवार**, : आपने मुझे वादा करके भी वोट क्यों नहीं दिया?

   युवक : क्योंकि आपने भी वादा करके मेरा काम नहीं किया?

5 **सेठ जी** (नौकर से) : तुम किस काम में माहिर हो।

   नौकर : साहब। रसोई, ड्राइंगरूम और तिज़ोरी साफ करने में।

— सौरभ शर्मा, छठी
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

दोस्त

1. **लेखक** (अपने मित्र से) : दोस्त! पत्नी से झगड़ा करने का मुझे तो फायदा ही होता है।

   मित्र : वह कैसे ?

   लेखक : एक तो कहानी के लिए मैटर मिल जाता है और दूसरा बोलचाल बंद होने से लिखने का समय मिल जाता है।

2. एब बार एक मरीज़ डाक्टर के पास गया। **वह डाक्टर से बोला**, "डाक्टर साहब मैं जब भी नहाता हूँ तो मैं गीला हो जाता हूँ" **डाक्टर**, "तो तुम नल बदं करके नहाया करो।"

— रघु महाजन, छठी
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

THIS NATIVE LAND

She is a rich and rare land
O! She's a fresh and fair land ;
She is a dear and rare land ;
This native land of mine

- Himanshu Gupta, 5th
BVM High School, Hiranagar

SEA SONG

I found a shell, a curly one,
Lying on the sand,
I picked it up and took it home,
Cold inside my hand

Mummy looked at it and then
She held it to my ear,
And from the shell there came a song
Soft and sweet and clear.
I was surprised I listened hard,
But it was really true
I wish you'd find a nice big shell
And hear it singing too !

- **Nisha, 7th**
BVM High School, Hiranagar

The Place of My Dreams

Where the heart is without fear
Where only money is not dear
Where the reward of truth
is not silence forever
Where the innocents are
not duped by the clever
Where honesty does not go unrewarded
Where the lock ups are not crowded
Where bribes are not paid
for job appointment
But becuase of self-realiziation
Where everyone is calm and humble
Where there is nothing that
makes me happy.

Indu Jasrotia, 9th
BVM High School
Hiranagar

'Oh my dear Mr. Examiantion'

Oh! my dear Mr. Examination
I have made no preparation
You are early. I am late
I am daily learning till late
Go, go and go
Let me learn my lesson first
Days are remaining few
So I have adopted a method new
I want to learn fame
Coz Sunandan Khajuria is my name

- **Sunandan Khajuria, 6th**
BVM High School, Hiranagar

O, my Lovely Friend

Oh! my dear friend,
I miss you very much
Please come back to me
I love you very much
I cannot forget that day
When your voice
Softly touched my heart
I remember you all the time
Wishing to meet you every time
My love has no expression
In the form of words
But it is like something
Buried it the heap of sand
None but you can understand
your rememberance.
Let me under tremendous strain
and your memories.

Make me to remember you again and again

With a hope you will come back to me

- Rakesh Singh Jasrotia, 6th
BVM High School, Hiranagar

MONEY

i) When I had money, money, O !
I knew no joy till I went poor;
For many a false man as a friend
Came knocking all day at my door.

ii) Then felt I like a child that holds
A trumpet that he must not blow
Because a man is dead ; I deared
Not speak to let this false world know.

iii) Much have I thought of life, and seen
How poor men's hearts are ever light;
And how their wives do hum like bees
About their work from morn, till night

iv) So, when I hear these poor ones laugh,
And see the rich ones coldly frown —
poor men, think I, need not got up
So much as rich men should come down

-Shubam Manhas, 7th
BVM High School, Hiranagar

NATURE'S PROMISE

I will give trust to your eyes
Affirm your hands
Absure your steps
Will took you to
Valleys' desert plains
Will show you
Spring, Summer, Autumn
Rainbow, Snow, Rainfall
Will give you
Rose, Jasmine, Tulip
Trust me I am the nature
And I am the promise

- Geetika Jamwal, 8th
BVM High School, Hiranagar

REALIZIATION

- To realize the value of a **sister** :
  Ask someone who doesn't have one
- To realize the value of **one minute** ;
  Ask a person who has missed the trains, bus or plane.
  To realize the value of **one second** ;
  Ask a person who has survived an accident
- To realize the value of **one millisecond** ;
  Ask the person who has won a silver medal in the Olympics.
- To realize the value of a friend lose one ;
  Time waits for no one.
  Treasure every moment you have

- Swampy Verma 10th, Joyti Rajput, 8th
BVM High School, Hiranagar

आप का स्तम्भ

अठारह भुजा वाली माता

जम्मू – कश्मीर में डोडा जिले के तहसील किश्तवाड़ से कुछ दूर ही श्री सर्थल ग्राम में अठारह भुजाओं वाली माता का मन्दिर स्थित है। उनके बाएँ हाथ में दुमनलोचन नामक राक्षस है। इनके चरणों के नीचे महिषासुर जैसे राक्षस का वध हुआ है। इनमें हर देवी की शक्ति है, इनमें से एक शक्ति माँ कालिका रक्त पीती हैं।

यह एक बड़ा और सुंदर मन्दिर है। माता के गले में शेषनाग सेवक की तरह उनकी रक्षा करते हैं। यह मूर्ति शायद ही दुनिया में कहीं हो। यह मन्दिर पत्थरों से बना हुआ है। जिला डोडा में एक विशेष प्रथा के अनुसार लोग अनेकों यात्राएं आयोजित करते हैं और वहां विशेष प्रथा के अनुसार बच्चे का मुण्डन संस्कार करने के लिए सपरिवार, सबंधियों तथा मित्रों के साथ जाते हैं। श्री सर्थल में यात्रियों के विश्राम के लिए धर्मशालाएं बनी हुई हैं। कई यात्री माता के दर्शन करने जाते हैं और माता का आशीर्वाद पाते हैं।

- **शालनी भारती और सुमन** (नवमीं)
भा॰ वि॰ मा॰
उच्च विद्यालय किश्तवाड़

हमारा धर्म :

माता - पिता की सेवा

माता – पिता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग हैं क्योंकि इनके कारण ही हम इस दुनिया में आते हैं। माता – पिता भगवान का ही एक रूप होते हैं। बचपन से लेकर जवानी तक यह हमारा पालन – पोषण करते हैं। हमे अपने माता – पिता का आदर करना चाहिए क्योंकि इन्हीं की वजह से हम हर एक कार्य में सफल होते हैं। जो अपने माता – पिता को दुःख देते हैं वे कभी जीवन में सुखी नहीं रह पायेंगे।

रामायण तो आपने पढ़ी ही होगी। श्री रामजी ने अपने पिता का कहना माना था और १४ वर्ष के लिए वन चले गये थे, जहां उन्हें बहुत कष्ट झेलने पड़े थे। वे राम ही थे जो अपने पिता की आज्ञा को वरदान समझकर राज – पाठ छोड़ कर वन को चले गये।

मैं बस यही कहना चाहती हूँ कि हमें अपने माता – पिता की जितना हो सके, उतनी खुशियाँ देनी चाहिए।

- **निहारिका शर्मा** (आठवीं)
भा॰ वि॰ मा॰
उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

हमारा राष्ट्रीय चिन्ह

जिस तरह राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय गान इत्यादि होता है, उसी तरह राष्ट्रीय चिन्ह भी होता है। हमारे देश का राष्ट्रीय चिन्ह चार खडें सिंह हैं, जो किसी भी प्रकार देखे जाने पर तीन ही दिखाई देते हैं। इनके नीचे एक तरफ बैल और एक तरफ घोड़े की आकृति बनी हुई है। इनके बीच में एक चक्र होता है। इनके नीचे 'सत्यमेव जयते' लिखा है जिसका अर्थ है, "सत्य की हमेशा जीत होती है।" हमारे देश का राष्ट्रीय चिन्ह अशोका स्तम्भ से लिया गया है। राष्ट्रीय चिन्ह के बगैर कोई राष्ट्रीय कार्य पूर्ण नहीं होता। हमारे देश के नोटों पर भी राष्ट्रीय चिन्ह अंकित होता है। हर एक देश का अपना–अपना राष्ट्रीय चिन्ह होता है।

- **वीरता शर्मा** (नवमीं)
भा॰ वि॰ मा॰
उच्च विद्यालय किश्तवाड़

मेरा विद्यालय

मैंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा भारतीय विद्या मंदिर से ही ग्रहण की है। मुझे इस स्कूल में पढते ६ साल हो गए हैं। इस स्कूल से मेरा गहरा लगाव है, क्योंकि मैंने देखा है कि इस स्कूल में शिक्षा के अलावा, हमारी संस्कृति एवं संस्करों की शिक्षा भी दी जाती है। ऐसी शिक्षा शायद ही किसी और स्कूल में दी जाती हो। इस विद्यालय के अध्यापक बहुत अच्छे हैं और वे पूरी लगन से बच्चों को पढ़ाते हैं। हमारे विद्यालय का वातावरण बहुत ही अच्छा है। मैं ईश्वर से हमेशा प्रार्थना करती हूँ कि हमारे स्कूल का हर एक बच्चा कामयाबी की सीढ़ी को छुएँ।

- **महेश्वरी शर्मा** (नवमीं)
भा॰ वि॰ मा॰ उधमपुर

My Country

India is my country. She is my mother-land. She lies in the south of Asia. She is a very vast country. She is a land of nearly eighty-eight crore people.

India has the Himalays in her north. There are the highest mountains in the world. She has an ocean to the south. It is called the Indian Ocean.

India is a rich country. She has many forest and mines. Her soil is very fertile. Many crops grew here. She also has many industries. I am very proud of my country.

- Surbhi Jasrotia, 5th
BVM High School, Hiranagar

डोगरी रचना

'मेरे ओ' ....

आए! मेरे ओ आने आले ने। मिकी किनी फिक्र ऐ। उन्दे आने दी। आने कशा पैले ओ मिकी खत लिखगन। जेदे विच उन्दे आने दी स्वागता दी पूरी तैयारी करी ला। ओ अर साल आन्दे ने मेरे प्राण खुशक ओई जन्दे न सारा वेला उन्दे आने दी खातर विच कटदा ऐ।

मैं अपना तन मन और त्यान सारा उन्दे च लाई दिनी आ। ना खाने दी चिंता ना सोने दा त्यान। मैं उन्दी इन्नी सेवा इस लई करनी ओ जे ओ मिकी कोई नुक्सान न देन। उन ओ दवारा आने आले न। मेरी चिंता बददी ऐ। तुस सोच दे ओने ओ मेरे कौन न। ओ ने मेरे 'इमितआन'।

शिल्पा मनोत्रा (दसवीं)
भा॰ वि॰ मा॰
उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

गीताजी की शिक्षा

कुछ लोग 'गीताजी' को एक आध्यात्मिक ग्रन्थ मानकर ही संतोष कर लेते हैं। किन्तु, इसके साथ ही गीताजी एक 'नीतिशास्त्र' या 'कर्तव्यशस्त्र' भी है। गीताजी में भगवान श्रीकृष्ण ने संसार के सभी कर्तव्यों से विमुख होते हुए अर्जुन को इस संसार में रहते हुए अपने सभी कर्तव्यों को पूरा करने का उपदेश दिया है। संसार से भागकर, वनों में जाकर तपस्या आदि करना और फिर मोक्ष आदि की कामना करना 'गीताजी' नहीं सिखाती। अपितु, इस संसार में रहकर ही अपने उतरदायित्व का निर्वाह करना ही उस की शिक्षा है।

'गीताजी' की दूसरी महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि मनुष्य को अपने सभी कर्म, निष्काम भाव से करने चाहिए। तभी मनुष्य, जन्म और मृत्यु के बन्धन से छूट पाता है।

– शिवानी शर्मा (नवमीं)
भा॰ वि॰ मा॰
उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

हिन्दी प्यारी हिन्दी

Ladies and Gentelman, India हमारी Country है और हम सब India के Citizen हैं। इसलिए हिन्दी बोलना हमारी Duty है। लेकिन बेचारी हिन्दी की तो किस्मत ही फूटी है। क्योंकि आज की Modern Generation Whenever अपना मुंह खोलती है तो only and only English ही बोलती है। यह very - very wrong है। हमें अपनी Dialy Life में Hindi Language को लाना है, World wide फैलाना है, तभी मेरे और भारत माता के Dreams होंगे, सच! Thank You Very Much!

सोच हमारी आज यही है, अंग्रेजी से शान बढ़ेगी। हिन्दी को अगर न अपनाया, मां तो रूठी ही रहेगी।

हिन्दी भारत मां की बिंदी, नहीं तो

अपूर्ण रहे श्रृंगार।

इससे ही तो हमने पाया है, आजादी का उपहार।

- **शशि मनहास** (नवीं)
भा॰ वि॰ मा॰
उच्च विद्यालय किशतवाड़

FACES IN A CLASS ROOM

There are many faces in class room

ATTENT TIME FACES :- They hear, see and follow every thing which the teacher says and write on the blackboard. They can answer any question put to them concerning the lecture.

SENI - ATTENTIVE FACES :-They can see and hear every thing but they do not follow all, because there is lack of attention.

ANLI - ATTENTIVE FACES:- They are also called absent minded, They neither try to see and hear nor do they try to follow anything.

DULL FACES :- They think about "Nothing" can be said to be their motto.

PRETENDING FACES :- They are constantly smiling. They shake their beads when the teacher is explaining something as if they understand and follow everything 'BUT IN REALITY THEY UNDERSTAND NOTHING'

This is all about the faces in a class room. Now, you can easily classify and find out which group you belong to!

Apurvi Kotwal (V)
B.V.M. Ambphalla , Jammu

KNOWLEDGE IS POWER

It is aptly said that knowledge is Power. A Knowledge person stands better chances of name and fame of illiterates. He stands head & shoulders above the common man.

There is a famous sanskrit quotation which reads. An educated person is worshipped everywhere. Wherever he goes he is offered a place of honour. He is given a seat of authority, He is given a standing avaiation. It is all due to the power of knowledge. But is knowledge easily, available? It is very easy to acquire it? No, not at all. One has to burn mid-night oil, one has to put in hard Labour day and night & that too for many years. It is a whole - hearted devotion.

One is always a serious student learning right & left. He knows no rest. He forgets his food. He ignores his sleep. His role aim is to obtain max. Knowledge he wants to reach the climax. He is busy day & night with his books. He consult dictionaries & reference books. He is dissatisfied till he establishes his real power.

Neeti Sharma (10th)
B.V.M. Hira Nagar

FIFTY YEARS OF INDEPENDENT INDIA

India got freedom on 15th August 1947. Many unsung and unknown heroes risked their lives so that all of us may breathe in freedom. Achieving independence was a tremendous task. During last fifty India has seen many ups and downs. Despite the present day scams and scandals, a vast country like India is well on the road to progress our defence prepardness, self sufficiency in food - grains, technical know how, space - technology, distant education, cultural advancement, white revolution. Benking geared agriculture etc. are fully and developed. India can boast of good scientists, engineers, teachers and technocrats. We need a thorough over hauling of our national chracter only then the sacrifices made by our known and unknown freedom fighters will be worth while. Only then India will be happy and prosperous.

- *Shivani Devi* (7th)
B.V.M. High School
Hira Nagar

HEALTH IS WEALTH

Health is the greatest blessing in life. Health is not only wealth but everything. One can enjoy life only. If one is healthy. A sick person cannot taste dainty dishes. He can not move for recreation. He has to defend upon others. Dependence means loss of Independence. He may have choicest things and riches but can enjoy nothing. He becomes an object of Pity. He is a burden on others. He loses mental peace. A sound mind can live, only in a sound body. Body is the temple of God. A poor man with sound health is better than a rich person with ill - health. We should be careful to maintain good health.

- Shinav Sharma (5th)
B.V.M. High School
Hira Nagar

FRIEND

A friend is someone who clears the darkness of our heart and brightness our heart with feelings of love and friendship. A friend is someone who is sympathetic and effectionate to us. He is friendly to us in every sorrow and joy. He is someone who helps us in every bad situtation. A friend is someone who dosn't cares for money but likes our friendship. If any man has all the above qualities then he is a true friend of mine.

- Jatin Sharma (9th)
B.V.M. High School, Kishtwar

धन

धन से पुस्तक मिलती है किन्तु ज्ञान नहीं।
धन से आभूषण मिलता है किन्तु रूप नहीं।
धन से सुख मिलता है किन्तु आनन्द नहीं।
धन से साथी मिलते हैं किन्तु सच्चे मित्र नहीं।
धन से दवा मिलती है किन्तु स्वास्थ्य नहीं।
धन से एकान्त मिलता है किन्तु शान्ति नहीं।
सत्य से कमाया ''धन'' हर प्रकार से सुख देता है।
छल व कपट से कमाया ''धन'' दुःख देता है।

– शिवानी शर्मा, 7वीं
भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

आओ ज्ञान बढ़ाएं

Golden Words

The best day - Today
Hardest thing to do - To begin
The greatest handicap- Fear
Easiest thing to do - Finding faults
Most useless assest - Pride
Most useful assest - Humility
The greatest mistake - Giving up
The greatest comfort - Work well done
Greatest need - Common sense
Meanest feeling - Regret at another's success
Best gift - Forgiveness
The greatest knowledge - Experience
The greatest success in world - Peace of mind
The hardest thing and most painful to accept- Defeat

- Varun Kishore Sharma, 10th
BVM High School Kishtwar

To Remember

- ❖ Three things to love : God, religion and country,
- ❖ Three things to remeber God, parent and teacher
- ❖ Three things to think about : Life, death and future,
- ❖ Three things to take : Pity, courage and joke
- ❖ Three thinks to control ; Tongue, treasure and heart
- ❖ Three things to desire : Freedom, truth and healthy
- ❖ Three thing to hate : Sin, Faithlessness and Indiscipline

Harvinder Singh, 5th
BVM High Thathi

Can You Guess

1. Which is the oldest table in the world?
2. What is full of holes yet holds water ?
3. Which keys cannot open a door ?
4. Which kind of room is never a part of a house ?
5. Which letters are not in alphabet ?
6. Which man shaves more than six times a day ?

Answer :
1. Arithmetic table 2. Sponge, 3. Monkeys and Donkeys, 4. Mushroom, 5. Those in the letter box 6. Barber

Arjun Singh, 5th
BVM Talab Tillo, Jammu

DO YOU KNOW

Q. William shakespare was an English dramatist. He is the most influential writer to have lived. He wrote 36 plays, 154 sonnets and 2 narrative poems. His first folio was published in 1623.

- Gourav Sharma, 7th
BVM High School Hiranagar

1. The longest English word is "Poeumonooltramicrosc-opisilicovalcanoconiosis".
2. Shark fish does not sleep any time.
3. The blue whale fish can go upto 6 months without eating.
4. A cow has two stomaches.
5. Rain water contains Vitamin B_{12}
6. A mosquito have 47 teeths.
7. There are 52 Sundays in a year.

- Neetu Thakur, 9th
BVM High School Kishtwar

Q1. Which letter stands for a drink ?

Q2. Which letter stands for a vegetable ?

Q3. Which letter stands for an insect ?

Q4. In which city people cannot live ?

Q5. Which city is unmarried ?

Q6. What has an eye but cannot see ?

Q7. What has a mouth but cannot eat?

Q8. What is that dies when it drinks water ?

Q9. What is the thing that has a head and a tail but no body ?

- Dheeraj Kumar, 10th
BVM Udhampur

MIND LETTERs

* Religion is for man not man for religion.
* The quitter never wins and the winner never quits.
* Do not laugh at others but laugh with others.
* If you give your best, the best will come back to you.
* Forgiveness is the best form of revenge.

- Rimpi Kumari, 4th
BVM Talab Tillo

तीन चीजें सदा याद रखो

* तीन चीजों पर मत हँसो – आँसू, भिखारी, विधवा
* तीन चीजों को उठाने से पहले सोचो – कलम, कसम, कदम
* तीन चीजें परदे में रहती हैं – औरत, खाना, दौलत
* तीन चीजों से आदमी को डरना चाहिए – आग, पानी, बदनामी
* तीन चीजों को बढ़ाओ – अच्छी किताबें, अच्छे काम, अच्छे दोस्त
* तीन चीजों से दूर रहो – बुरी संगत, पराई स्त्री, निंदा
* तीन चीजों को कभी छोटा न समझो – फर्ज, कर्ज, मरज।

- **अपूर्वी कोतवाल** (पांचवी)
भा॰ वि॰ मा॰
अम्बफला, जम्मू

बूझो तो जानें

1. तीन अक्षर का मेरा नाम,
अंत काटो बन जाऊँ भार,
मध्य काटो बन जाऊँ भात
खा गए न तुम भी मात।

2. तीर रंग की लहर,
नील गगन में भरे उड़ान।
सब की आंखों का तारा,
हम सब करते इसका सम्मान।

3. कहलाती हूँ रात की रानी,
आँख से निकले हरदम पानी।

4. मेरे नाम से सब डरते हैं।
मेरे लिए परिश्रम करते हैं।

5. न देखे न बोले,
फिर भी भेद खोले।

6. एक मुर्गा आता है,
चलचलकर एक जाता है।
चाकू लाओं गर्दन काटें,
फिर चलने लग जाता है।

7. बरसात की याद दिलाये,
पानी धूप में काम आये।

8. छोटा सा धागा,
सारी बात ले भागा।

9. लिखता हूँ पर पैर नहीं,
चलता हूँ पर गाड़ी नहीं।
टिक–टिक करता हूँ पर घड़ी नहीं।

उत्तर :-
1, भारत 2, तिरंगा झंडा 3. मोमबत्ती
4. परीक्षा 5. पत्र 6. पैंसिल 7. छाता
8. टेलिफोन 9. टाइपराइटर

– विजय, 5वीं
भारतीय विद्या मंदिर तालाब तिल्लो, जम्मू

पहेलियां

1. उसके आते ही दिन होता, जाते होती रात
नाम बताओ उसका जल्दी, सुनकर मेरी बात।
2. काला–काला हूँ फिर भी, सबके हाथों में रहता हूँ
धूप और वर्षा को भी मैं, अपने तन में सहता हूँ।

उत्तर : सूरज, छाता

— शीतल शान, 8वीं
भारतीय विद्या मंदिर उच्च विद्यालय, किश्तवाड़

1. दोरंगी सेना लेकर रानी करे सैर।
चार गड्ढे खोद कर दुश्मन निकाले वैर।
2. एक मीनार में तेरह घर
चार मीनार से पूरा शहर।

उत्तर : कैरम, ताश

— सिम्मी उत्तम, 8वीं
भारतीय विद्या मंदिर उच्च
विद्यालय किश्तवाड
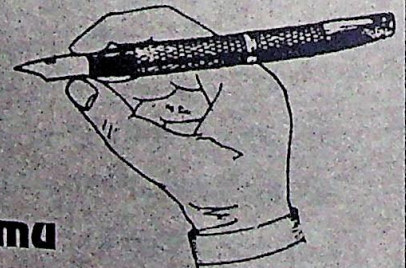
बाल कथाएं

बोल का मोल

एक आदमी बूढ़ा हो चला था। उसके चार बेटे थे। बेटे यूँ तो काम जानते थे, किन्तु बोलचाल और आचरण में वे एक जैसे न थे। पिता ने कई बार उनसे कहा, ''यदि तुम अपना बोलचाल और आचरण नहीं सुधारोगे तो जीवन में सफल नहीं हो सकते।'' किंतु पिता की बात पर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया। एक बार चारों बेटे और पिता लंबी यात्रा से लौट रहे थे। इस यात्रा के बीच उनके खाने–पीने को कुछ भी नहीं बचा था। जो धन था वह भी खत्म हो गया था। वे लोग कई दिन से भूखे थे। वे पाँचों एक जगह सड़क के किनारे विश्राम कर रहे थे। तभी एक व्यापारी ने अपनी बैलगाड़ी में तरह–तरह के पकवान और मिठाइयाँ रखी थीं। पकवानों और मिठाइयों की महक से पाँचों के मुँह में पानी आ गया।

बूढ़े व्यक्ति ने अपने लड़कों से कहा, ''जाओ। व्यापारी से कुछ खाने को माँगो, शायद कुछ दें दे।'' पिता की बात सुनकर पहला बेटा व्यापारी के पास गया। बोला, **''अरे, ओ व्यापारी इतना माल ले जा रहा है। थोड़ा मुझे दे। बहुत भूख लगी है।''** व्यापारी ने सोचा यह कितना मूर्ख है। इसे इतना भी पता नहीं कि दूसरों से माँगते समय मीठी वाणी बोलनी चाहिए। यह जितनी कठोर वाणी बोल रहा है, इसे उतना ही कठोर पकवान दूँगा। यह सोचकर उसने एक सूखा पकवान उसे दे दिया।

फिर दूसरा बेटा उसके पास पहुँचा और बोला, **''बड़े भाई प्रणाम। छोटे भाई को खाने के लिए कुछ भी न दोगे क्या ?''** व्यापारी ने सोचा इसने मुझे भाई कहा है। छोटे भाई को देना मेरा कर्तव्य है। यह सोचकर उसने एक दोना भर मिठाई उसे खाने को दे दी।

अब तीसरा बेटा व्यापारी के पास पहुँचा। वह बोला, **''आदरणीय। आप मेरे पिता समान हैं। मुझे कुछ खाने को दे दीजिए।''** व्यापारी ने सोचा मुझे पिता जैसे आदर दे रहा है। इसे तो भरपेट मिठाई देनी चाहिए। उसने उसे कई दोनों में पकवान और मिठाइयाँ भरकर दे दीं।

अंत में चौथा पुत्र गया। उसने व्यापारी से मुसकरा कर कहा, **''मित्र। इस मुसीबत की घड़ी में तुम हमारा सहारा बन सकते हो। क्या तुम मुझे भूखा ही रखोगे ?''** व्यापारी ने सोचा, ''मित्र पर लोग सब कुछ न्यौछावर कर देते हैं। मुझे इसकी मदद करनी चाहिए। उसने कहा, ''मित्र। इस गाड़ी में लदे सारे पकवान और मिठाइयाँ तुम्हारे लिए हैं। चलो, कहाँ ले चलूँ ?'' वे दोनों वहाँ आ गए जहाँ पिता के साथ बाकी तीनों बेटे बैठे थे। पिता ने उन सबको समझाया अब तुम सब अपनी–अपनी भोजन सामग्री की तुलना करो। जिसने जैसे बोला और आचरण किया, उसे वैसा ही मिला। क्या अब भी अपने बोल का मोल नहीं समझे ?

शिक्षा – इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि मीठी बोली बोलने से हमारे सभी काम आसानी से बन सकते हैं

– कनव सलगोत्रा, 7वीं

भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

सच्चा धन

छुट्टी की घंटी बजी, रामू और शामू अपना–अपना बस्ता उठा कर घर की ओर चल पड़े। रास्ते में रामू ने शामू से कहा – 'दोस्त ! पढ़ने से आखिर होता क्या है ?'

शामू बोला – 'पढ़ने से एक ऐसा धन मिलता है जिसका कभी नाश नहीं होता।''

रामू – 'अजीब बात है, हम लोग इतने दिनों से पढ़ रहे हैं, किन्तु हम लोगों को तो कभी भी कुछ नहीं मिला, उल्टे मुझे अपने घर से ही पैसे खर्च करने पड़ते हैं।'

शामू – 'अरे भाई ! क्या तुम रुपये पैसे को ही धन समझते हो ? किसी भी चीज को अच्छी तरह जानने के लिए उसका मतलब जानना जरूरी है। क्या, तुम धन का मतलब जानते हो ?'

'सुनो, सच्चा साथी वही है जो अपने गुण से अपने साथी को अपने जैसा गुणी बनाए।'

'धन' शब्द में दो अक्षर होते है – 'ध,' और 'न,'। 'ध' का अर्थ है – 'धरती', 'न' का अर्थ है 'नहीं'। अर्थात् धरती पर जिस के समान दूसरा कोई धन नहीं हो, यानी पढ़ाई, समझे ?

रामू – 'वाह! तो पढ़ने से कौन–सा ऐसा धन मिलता है, जो दुनिया में सब धनों से बड़ा है, क्या वह कोई हीरा है।'

शामू – 'तुम दुनिया में सबसे ज्यादा हीरा को ही समझते हो ? हीरा – जवाहरात, सोना चांदी, रुपया–पैसा, अन्ना, वस्त्र, ज़मीन, महल, घोड़ा आदि कोई भी धन क्यों न हो, सभी का नाश होता ही है, या तो उन्हें चोर चुरा कर ले जाता है, या वह आग में जल जाता है या भाई ही बांट लेता हैं, लेकिन तुमने कभी सोचा है कि किस चीज़ का कभी नाश नहीं होता, वह है विद्या (ज्ञान), इसका नाश कभी नहीं होता।'

रामू – 'हाँ भाई, और गुण तो अज़ीब ही हैं, दूसरा धन खर्च करने से घटता है, किंतु विद्या–रूपी धन तो खर्च करने से बढ़ता है। एक और अजीब बात सुन लो, विद्या गुरु का भी गुरु होती है। ऐसी अनमोल विद्या को भूल–भूलैया में नहीं खोना चाहिए।'

शिक्षा :– सच्चा धन विद्या (ज्ञान) है।

– शर्वानी शर्मा, 7वीं

भारतीय विद्या मंदिर, हीरानगर

प्रायश्चित

एक गांव में एक साहुकार था – कीमतीलाल। अनाज और खेत गिरवी रखना, सूद पर पैसे उधार देना, और गरीब अनपढ़ किसानों को लूटना, यही कीमतीलाल का पेशा था। इस तरह कीमतीलाल ने बहुत धन दौलत इकट्ठा कर ली थी। एक दिन कीमतीलाल की अंतर–आत्मा से आवाज़ उठी और कहने लगी कि 'सेठ कीमतीलाल गरीबों के खून पसीनें और आसूँ में भीगी दौलत तो तुमने बहुत कमा ली, यह सब तो यहाँ के सुख के लिए है, स्वर्ग में सुखी रहने के लिए क्या किया है? कुछ भी तो नहीं, अरे! पुण्य कमा, भगवान का विशाल मंदिर बना।'

अगले ही दिन सेठ ने भवन का काम प्रारम्भ कर दिया। एक दिन एक साधू फट्टे पुराने कपड़े

पहन कर सेठ के पास आया और कहने लगा कि मैंने सुना कि स्वर्ग में ठाठ से रहने का इंतज़ाम अभी से हो रहा है। सेठ बोला ''ठीक सुना तुमने।'' साधु बोला, ''मैं ठहरा गरीब, मेरे पास तो केवल एक सुई है। मेरे गुरु ने मुझसे कहा था, बेटा हर व्यक्ति को मरते समय अपना सब कुछ यहीं छोड़कर जाना पड़ता है। लेकिन आप को देखा तो पता चला कि आप स्वर्ग में भी इसी ठाठ से रहेंगे। अगर कष्ट न हो तो एक छोटा सा काम करोगे, ये सुई भी अपने साथ ले के जाना।

साधु की इतनी सी बात सुनते ही कीमतीलाल उसके चरणों में गिर पड़ा और बोला, ''आप ने मेरी आँखें खोल दीं। मरने पर अपना यह शरीर साथ नहीं जाता तो और क्या साथ जाएगा। मैंने बहुत पाप किये हैं। इनका प्रायश्चित यहीं देवी मां के चरणों में करना पड़ेगा। वरना मुझे नरक में भी जगह नहीं मिलेगी।''

शिक्षा – दिखावे सें नहीं सदकर्मों से ही मोक्ष मिलता है।

– सीमा शर्मा, 10वीं

भारतीय विद्या मंदिर, किश्तवाड़

वर्नाकूलर

अध्यापक अविनाश विज्ञान–कक्ष में छात्रों को प्रायोगिक कार्य करा रहे थे कि अचानक शोर मचा, ''सर देखिए, रोहित ने अपने बैग में वर्नाकूलर छिपा लिया है।''

''रोहित चोर है .... रोहित चोर है ....'' का शोर लगातार बढ़ता जा रहा था।

आगे बढ़ते हुए अविनाश सर ने देखा कि छात्रों के घेरे के बीचों–बीच रोहित डरा–सहमा सा खड़ा था। उसके बैग से बरामद विज्ञान–कक्ष का कीमती वर्नाकूल, सर को सौंप दिया गया। अविनाश जानते थे कि रोहित ऐसा लड़का नहीं था बल्कि उसके जैसा–धीर–गंभीर और पढ़ाई में पूरा ध्यान लगाने वाला छात्र कक्षा में कोई दूसरा नहीं था लेकिन रोहित ने ऐसी हरकत क्यों की? कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। रोहित ने कुछ कहना चाहा... मगर ? उसकी आँखों में भर आए आँसुओं को देखकर सर रुक गए।

कुछ समय बाद अध्यापक ने अलग से रोहित को बुलाया, ''रोहित तुम इतने समझार विद्यार्थी हो, अच्छी तरह से जानते हो कि चोरी करना बहुत बुरी बात है, फिर ....।''

''सर, मैंने अपने पास रखने के लिए वर्नाकूलर नहीं लिया था, मेरी माँ के निधन को आज चार बरस हो गए हैं .... नानी कहती है, माँ अब तारा बन गई है .... वर्नाकूलर से दूर की चीज़े पास दिखाई देती हैं। मैं अपनी माँ को पास देखना चाहता था ।''

अविनाश सर को कुछ न सूझा। उन्होंने बस रोहित को अपने नज़दीक खींच कर सीने से लगा लिया।

शिक्षा :– पहले तोलो, फिर बोलो

– रघु महाजन, 6वीं

भारतीय विद्या मंदिर, हीरानगर

तेनाली राम के किस्से

मैं तुम्हें एक लालची वैद्य की व तेनाली राम की सूझबूझ की कहानी सुनाता हूँ। तेनाली अपनी पत्नी के साथ खुशी–खुशी रहता था पर अचानक एक दिन तेनाली बीमार हो गया। पत्नी के लिए अपनी पति की जान से बढ़कर कुछ न था। तो वह नगर का सबसे अच्छा वैद्य ले आई। वैद्य ने तेनाली की पत्नी को बताया कि तेनाली को एक भयंकर बीमारी हो गई है तथा इलाज में खर्चा आएगा। पूछने पर वैद्य ने अपनी फीस 50 रुपये माँगी। वैद्य ने इलाज शुरू किया तथा पत्नी ने वैद्य से कहा कि वह अपना कीमती घोड़ा बेचकर उसमें से पैसे उन्हें देगी। वैद्य के मन में लालच पैदा हुआ। वैद्य ने कहा कि वह घोड़े की कीमत ही अपनी फीस लेगा। तेनाली ठीक हो गया। तेनाली के ठीक होती ही उसकी पत्नी ने उसे सब कुछ बता दिया। तेनाली से वैद्य ने अपनी फीस माँगी। लेकिन तेनाली पहले ही दो–तीन अन्य वैद्यों के पास जाकर अपनी बीमारी का खर्चा पूछ आया। उन्होंने उसकी बीमारी का खर्चा बहुत ही कम बताया। तेनाली ने मन ही मन लालची वैद्य को सीख देने की ठान ली। तेनाली घोड़े व बिल्ली को लेकर वैद्य के साथ बाजार चला गया। वह ऊँची–ऊँची आवाज़ लगाकर कहने लगा बिल्ली 100 रुपये में व घोड़ा 20 रुपये में। एक व्यापारी ने घोड़ा व बिल्ली खरीद ली। व्यापारी, तेनाली को 120 रुपये दे कर घोड़ा व बिल्ली को लेकर चला गया। तेनाली ने वैद्य को 20 रुपये दिये तो वैद्य चकित रह गया। तेनाली ने वैद्य को बताया कि आप ने घोड़े की कीमत माँगी थी तो घोड़ा 20 रुपये में बिका।

वैद्य को अपनी गलती का अहसास हुआ। वह शर्मिंदा होकर चला गया। तेनाली ने घर वापस आकर अपनी पत्नी को सब कुछ बताया तो उसकी पत्नी ने उसकी चतुराई की प्रशंसा की।

शिक्षा :– लालच का फल बुरा होता है।

– ललित कुमार, 7वीं
भारतीय विद्या मंदिर, हीरानगर

ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।

एक राजा का मन्त्री बहुत ही ईश्वर विश्वासी था। वह सदा कहा करता था कि ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है। एक बार उसका पुत्र मर गया। लोग उसके पास सहानुभूति प्रकट करने आये तो वह बोला – ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है। ''एब बार चाकू से राजा की अंगुली कट गई। तब भी मंत्री बोला, "ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।" राजा मंत्री से सष्ट हो गया और उसे निकाल दिया। कुछ दिनों बाद राजा ने मंत्री को फिर बुला लिया। एक बार वे शिकार खेलने जंगल में गये। वहाँ उन्हें अकेले पाकर डाकुओं ने घेर लिया और उन्हें देवी को बलि देने के लिए ले गए। बलि देने से पूर्व डाकुओं के सरदार ने यह जानकर

कि मन्त्री के पुत्र नहीं है राजा की अंगुली कटी है, दोनों को छोड़ दिया। कारण देवी पुत्रहीन और अंगहीन की बलि नहीं लेती थी। तब राजा ने मंत्री से कहा कि वास्तव में ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।

शिक्षा :– ईश्वर पर दृढ विश्वास रखकर व्यक्ति संकटों पर विजय पा लेता है।

– रवि कुमार मानयल, 7वीं

भारतीय विद्या मंदिर हीरानगर

अकिंचन की सहायता

एक बार की बात है किसी आश्रम में एक गुरु के पास दो प्रिय शिष्य रहते थे। दोनों ही शिष्य बड़े ईश्वर भक्त थे, वे रोज़ ईश्वर उपासना करते और बाद में आश्रम में रोगियों की चिकित्सा में अपने गुरुजी की सहायता किया करते थे। एक दिन की बात है कि उपासना के समय कोई एक कष्ट पीड़ित रोगी आ पहुंचा। गुरु ने उन शिष्यों को बुला भेजा जो पूजा कर रहे थे। तब शिष्यों ने यह संदेश भेजा कि अभी थोड़ी पूजा बाकी है, वे शीघ्र ही पूजा समाप्त होने पर आ जाएंगे।

गुरु जी ने दोबारा आदमी भेजा, इस बार शिष्य आ तो गए परन्तु उनको अकस्मात् बुलाए जाने पर उन्होंने क्षोभ व्यक्त किया। इस पर गुरु जी ने उन्हें जो बात कही, वह मानव जाति को सदैव निःस्वार्थ सेवा के लिए प्ररेणा देती रहेगी। गुरु ने कहा, "मैंने तुम्हें इस व्यक्ति की सेवा के लिए बुलाया था। तुमने यह उत्तर दिया कि पूजा समाप्त होने के बाद तुम आओगे। याद रखो पूजा प्रार्थना तो देवता भी कर सकते हैं परन्तु कष्ट पीडित रोगियों की, अंकिचनों की सहायता तो केवल मनुष्य ही कर सकते हैं, सेवा प्रार्थना से अधिक ऊँची है क्योंकि देवता सेवा नहीं कर सकते हैं।" इस बात को सुन कर शिष्यों को बड़ी लज्जा महसूस हुई और उस दिन से प्रार्थना की अपेक्षा सेवा को ही अधिक महत्व देने लगे।

शिक्षा :– मानव सेवा ही प्रार्थना है।

– शिल्पा परिहार, 6वीं

भारतीय विद्या मंदिर माध्यमिक स्कूल, सलाना

मित्र बन गए शत्रु

किसी गांव में करम सिंह और रामलाल नाम के दो आदमी रहते थे। दोनों में मित्रता थी। एक दिन वे दोनों किसी काम से किसी दूसरे गाँव को जा रहे थे, रास्ते में जगंल पड़ता था, भयानक जानवरों के भय से करम सिंह ने जेब में एक तीखा चाकू रख लिया था।

वे चलते रहे। रास्ते में उन्हें पड़ी एक थैली मिल गई। उसमें काफी रुपये थे। धन देखकर दोनों का मन लालच में आ गया। दोनों चाहने लगे – 'सारा धन मैं ही ले लूँ।' इस बात पर दोनों झगड़ने लगे। झगड़ा बढ़ गया, मित्रता का स्थान शत्रुता ने ले लिया। अपनी बात से पीछे हटने को कोई तैयार न हुआ इतने में दानों ने बीच का रास्ता निकाला। एक ने कहा, चलो छोड़ो यांर झगड़े को, धन बाँट लेंगे, पहले भूख मिटाने का प्रबन्ध करें।

रामलाल ने कहा, "मैं पास के गांव से खाना लाता हूँ। खा–पीकर आराम से धन बाँट लेंगे। करम सिंह मान गया। रामलाल गाँव गया, वहाँ किसी दुकान से खाना लेकर उसने खाने में जहर मिला दिया। उधर करम सिंह के मन में बुराई पहले से ही थी, उसने सोचा चाकू से रामलाल को मारकर सारा धन काबू कर लूँगा।

जैसे ही वह निकट आया करम सिंह ने उस पर चाकू का वार कर दिया। रामलाल वहीं ढेर हो गया। करम सिंह अब निश्चिन्त होकर बैठकर खाना खाने लगे। थोड़ी देर में जहर के प्रभाव से उस की भी मौत हो गई।

धन की थैली दोनों की लाशों के पास ही पड़ी थी, मानों कह रही हों 'देख लिया लालच का फल।'

शिक्षा :– लालच का फल बुरा ही होता है।

– रिंकू शर्मा, 7वीं

भारतीय विद्या मंदिर उच्च विद्यालय, हीरानगर